केवल मैडीकल व्यवसायियों के लिए

मैडीकल दर्पण

Editor- Brijesh Garg www.medicaldarpan.com Monthly News Paper
B.N. Medical Complex, Bulandshahr (U.P.) Postal Reg. No.- BSR 56/2020-2022 RNI UPBIL/2010/44113

Year 13 | Issue 12 | D.O.P. 01 September 2020 | Pages 16 | ₹ 10/- Per Copy | Ph.: 09410434811, medicaldapran.ctp@gmail.com

Professional People For Marketing And Franchisees May Contact For Profit Sharing Business
AYURVEDIC & NUTRACEUTICALS
Comprehensive Formulation Facility
• Third Party Manufacturing
• Export Inquiries for Regulated Markets
• PCD/Franchisee for unrepresented Area
• Monopoly Business Rights
Tablets, Capsules | Syrup & Sachet | Oil (Herbal & Cosmetic) | Powder Protein Powder Whey & Herbal Protein | External Preparation Cream, Lotion, Face Wash, Shampoo & Soap
BLUE STAR LABORATORIES | MAYLEBENS INDIA PVT. LTD. | BLUE STAR NUTROSANETA PVT. LTD.
Office: 206, Blue Star Plaza, Sarja Mkt, Opp. M2K, Sector 7, Rohini, Delhi-110085
Works: Plot No.-6, Sector-56, Phase-4, HSIIDC, Kundli-131028 (Haryana)
Ph.: 011 2704 0437, 9810165707
Email: bsnspl@gmail.com

अब देश के हर नागरिक को मिलेगा यूनिक हेल्थ कार्ड

नई दिल्ली: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से 74वें स्वतंत्रता दिवस (74th Independence Day) के मौके पर देशवासियों को नेशनल डिजिटल हेल्थ मिशन (National Digital Health Mission) की सौगात दी है. **-भारत के हेल्थ सेक्टर में नई क्रांति की शुरुआत** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी (Narendra Modi) ने लाल किले की प्राचीर से 74वें स्वतंत्रता दिवस (74th Independence Day) के मौके पर देशवासियों को नेशनल डिजिटल हेल्थ मिशन (National Digital Health Mission) की सौगात दी है. इस मिशन के तहत इलाज में आने वाली परेशानियों को कम किया जाएगा. योजना के तहत हर भारतीय को एक हेल्थ आईडी दी जाएगी. इस योजना में हर भारतीय के स्वास्थ्य की जानकारी डिजिटल तरीके से सेव रहेगी. **हर भारतीय की होगी यूनिक हेल्थ आईडी** पीएम मोदी ने बताया कि इस योजना के तहत हर भारतवासी का अपना एक यूनिक आइडेंटिटी नंबर (Unique Identity Number) होगा. इसमें उनके स्वास्थ्य से जुड़ी हर जानकारी होगी. इस योजना से हर देशवासी को एक तरह की सुरक्षा मुहैया कराई जाएगी. इस हेल्थ कार्ड में लोगों का पूरा मेडिकल रिकॉर्ड होगा, दवाओं से लेकर जांच रिपोर्ट तक सारी जानकारियां इस कार्ड में होंगी. इस मिशन में जांच सेंटर, क्लीनिक, अस्पताल और डॉक्टर सभी को एक प्लेटफॉर्म पर लाया जाएगा. इस योजना का लाभ उन लोगों को ज्यादा मिलेगा जो दूर दराज इलाकों में रहते हैं, जहां स्वास्थ्य सुविधाएं बेहद कम हैं. पीएम मोदी ने कहा कि नेशनल डिजिटल हेल्थ मिशन, भारत के हेल्थ सेक्टर में नई क्रांति लेकर आएगा. **हेल्थ आईडी कैसे है यूनिक?** इस हेल्थ आईडी में कई खूबियां होंगी. इस हेल्थ कार्ड में व्यक्ति के जीवनभर का पूरा हेल्थ रिकॉर्ड होगा. वो कब किस बीमारी से पीड़ित था, कब किस बीमारी का इलाज किया गया. डॉक्टर ने कौन सी दवा लिखी, कौन कौन से टेस्ट हुए और उनके नतीजे क्या रहे. जिससे अगली बार जब मरीज किसी डॉक्टर के पास या अस्पताल में जाएगा तो उसे अपने सारे रिपोर्ट, डॉक्टर की पर्चियां लेकर नहीं जाना होगा, सिर्फ ये हेल्थ कार्ड ही ले जाना काफी होगा. डॉक्टर हेल्थ कार्ड के यूनिक नंबर से ही मरीज की पूरी हेल्थ हिस्ट्री देख सकेगा. यानि जितनी बार भी व्यक्ति डॉक्टर के पास जाएगा, और जो भी दवाएं लेगा या इलाज कराएगा, उसकी जानकारी हेल्थ कार्ड में दर्ज होती चली जाएगी.

Are You looking for ASTHMA RANGE OF PRODUCTS?
Respules: Rediventi-Duo, Redivent, BudeBest, BudeBest-Duo, Forahale 0.5, BBVENT
Inha Caps (DPI Capsules): Forahale-400, Forahale-200, Redivent-Duo, TIOLABA, Inspihaler
Also Available: Metered Dose Nasal Spray, Inahalers
Best BIOTECH | Inspicare A Respiratory Division of Best Biotech
76-13-18B/6A, Beside Lane of Samskruti Function Hall, Urmila Nagar Road, Bhavanipuram-520012
A.O.: Santi Nagar Colony, Anna Nagar, Chennai-40
e-mail: bestbiotech4u@gmail.com Website: bestbiotechindia.com
CALL: +91 98669 08086

किसी भी तरह के इंफेक्शन से बचाने के लिए करें एक्सरसाइज

नई दिल्ली: फेफड़े यानी कि लंग्स (Lungs) जो कि शरीर का एक बहुत अहम हिस्सा है. के अस्वस्थ रहने पर कई बीमारियां हो सकती है, जैसे- अस्थमा, ब्रोंकाइटिस, निमोनिया, टीबी , का कैंसर आदि. इसलिए की सेहत का ध्यान रखना भी बहुत जरूरी है. आपके फेफड़े की कार्यक्षमता निर्धारित है कि आपके शरीर की श्वसन प्रणाली कैसी होगी. वहीं कोरोनावायरस जो कि पर सबसे पहले हमला करता है, इसके लिए सबसे जरूरी है कि आप अपने को मजबूत बनाएं. ताकि आप जल्दी से किसी संक्रमण का शिकार न हो जाएं. अपने की क्षमता बढ़ाने और इन्हें मजबूत बनाने के लिए आप ब्रीदिंग एक्सरसाइज की मदद ले सकते हैं. ये 3 ब्रीदिंग एक्सरसाइज आपके फेफड़े की क्षमता में सुधार कर सकते हैं. **1. रिब स्ट्रेचिंग (Rib Stretching)** -आप फिर धीरे-धीरे सांस लेंगे, जितना संभव हो सके अपने को भरें. 20 सेकंड के लिए, या जब तक आप सक्षम हैं, तब तक अपनी सांस रोककर रखें. -जब आप गिनती कर रहे हों, तो अपने हाथों को अपने कूल्हों पर रखें, आपके अंगूठे आगे की ओर आपकी पिंकी उंगलियां आपकी पीठ के छोटे हिस्से को छूती हुई सी रखें. -एक बार जब आप अपनी सांस को 20 सेकंड तक रोक कर रखें, तो धीरे-धीरे सांस छोड़ें और आराम की स्थिति में लौट आएं. **2. उदर श्वास (Abdominal Breathing)** -इस अभ्यास के लिए, आप अपनी पीठ पर एक आरामदायक स्थिति में लेट जाएंगे. पीठ को गद्दी देने के लिए आप एक योगा मैट या सॉफ्ट पैड का उपयोग कर सकते हैं. -शुरू करने के लिए, अपने पेट पर एक हाथ और अपनी छाती पर एक हाथ आराम करें. धीरे-धीरे सांस लें जब तक कि आप महसूस न करें कि आपका पेट आपकी छाती से अधिक ऊंचा न हो जाए. -अपने मुंह से सांस छोड़ें, और फिर अपनी नाक के माध्यम से फिर से सांस लें, अपने पेट को हर बार उठाने की कोशिश करते रहें. -यदि संभव हो, तो अपनी सांस 7 सेकंड के लिए रोकें, और 8 सेकंड के लिए सांस छोड़ें. अब अपने पेट की मांसपेशियों को अपने से हवा को बाहर निकालने के लिए छोडे दें. **3. पुशिंग ऑउट (Pushing Out)** -इस अभ्यास के लिए, आप अपने घुटनों के बल आराम से खड़े होंगे. धीरे-धीरे कमर पर झुकें, अपने से हवा को बाहर धकेलें. फिर, धीरे-धीरे सीधे सीधे खड़े रहें और तब तक श्वास लें जब तक कि आपके फेफड़े अधिकतम क्षमता से न भर जाएं. -20 सेकंड के लिए या जितनी देर तक आप कर सकते हैं, अपनी सांस रोककर रखें. अपनी सांस को रोकते हुए, धीरे से अपनी बाहों को अपने सिर के ऊपर उठाएं. - एक बार जब आप गिनती पूरी कर लेते हैं, तो धीरे-धीरे अपनी बाहों को नीचे लाएं और पूरे मुंह में सांस छोड़ें, आराम की स्थिति में वापस आ जाएं.

Contact for
PCD Franchise/Pharma Franchise/ Pharma Distributionship/Monopoly rights for Pharmaceutical/Nutritional/Derma/ Cosmetology Products
E-mail : bluewater.chd@gmail.com
Call & Whatsapp : 98 72 444 554

शिक्षा मंत्री बोले- अभी स्कूल बंद रहेंगे

नई दिल्ली: अभिभावक अभी स्कूल खोले जाने को लेकर आशंकित हैं. अभिभावकों ने अपनी इस आशंका से विभिन्न राज्य सरकारों और सरकार को अवगत कराया है. अधिकांश अभिभावक नहीं चाहते कि फिलहाल स्कूल खोले जाएं. वहीं सरकार ने भी अभिभावकों को छात्रों की सुरक्षा का भरोसा दिलाया है. कोरोना संकट के बीच स्कूलों के विषय पर केंद्रीय शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक (Ramesh Pokhriyal Nishank) ने कहा, अनलॉक-3 की गाइडलाइंस के तहत गृह मंत्रालय ने स्कूल, कॉलेज और सभी कोचिंग संस्थान 31 अगस्त तक बंद रखने का निर्देश दिया है. आगे गृह मंत्रालय की जो भी गाइडलाइंस आएगी उसके अनुसार हम निर्णय लेंगे. वरिष्ठ अधिकारियों का मानना है कि तेजी से फैल रहे कोरोना वायरस के कारण अब स्कूलों को खोलने में और अधिक विलंब हो सकता है. केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय पहले ही फिलहाल स्कूल न खोलने का निर्णय ले चुका है. स्कूल खोलने की प्रक्रिया पर विभिन्न केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा अभिभावकों की राय भी ली जा रही है. अभिभावक चाहते हैं कि इस वर्ष स्कूलों में पूरे शैक्षणिक सत्र को ही जीरो सत्र माना जाए. इस मांग को लेकर कई अभिभावकों ने सहमति जताई है. ऑल इंडिया पेरेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अशोक अग्रवाल ने कहा, हमने शिक्षा मंत्रालय एवं प्रधानमंत्री के समक्ष मुख्य रूप से तीन विषय रखे हैं. इनमें सबसे महत्वपूर्ण विषय यह है कि जब तक कोरोना पर पूरी तरह से काबू नहीं पा लिया जाता तब तक स्कूल नहीं खुलने चाहिए. अशोक अग्रवाल ने कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक के अलावा देशभर के सभी मुख्यमंत्रियों को हमने ऐसे ही पत्र लिखे हैं. अभिभावकों के इस संघ ने सरकारों से मांग की है कि इस शैक्षणिक सत्र को जीरो एकेडमिक ईयर घोषित घोषित किया जाए. सभी छात्रों को अगली कक्षा में प्रमोट किया जाए. अगले वर्ष का पाठ्यक्रम इस तरह से मॉडिफाई किया जाए कि छात्र उसे समझ सके और अपनी पढ़ाई कर सके. इस पूरी स्थिति पर शिक्षा मंत्रालय का कहना है कि पहले छात्रों की सुरक्षा है फिर शिक्षा. यानी छात्रों की सुरक्षा से कोई समझौता नहीं होगा. कोई भी कदम उठाने से पहले पहले छात्रों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाएगी. सुरक्षित माहौल में ही छात्र कक्षा या फिर परीक्षा में शामिल हो सकते हैं.

फार्मा किंग ने मात्र 10 हजार रुपए से शुरू की कम्पनी

नई दिल्ली: सन फार्मा कंपनी के चेयरमैन दिलीप संघवी ने कम्पनी को बहुत ऊचांई पर पहुंचाया है. भारत में फॉर्मा सेक्टर में कई कंपनियां हैं लेकिन सतत वृद्धि के मामले में सभी कंपनियां सन फार्मा से पीछे हैं. सन फार्मा भारत की सबसे बड़ी दवा निर्माता कंपनी है. निश्चित रूप से इस सफलता के पीछे सबसे बड़ा हाथ कंपनी के चेयरमैन दिलीप संघवी का है. सन फार्मा ग्रुप की तीन कंपनियों सन फार्मा, सन फार्मा एडवांस्ड रिसर्च और रैनबैक्सी लैब्स के मालिक हिस्सेदारी संघवी का यह सफर आसान नहीं था. **5 लोगों के साथ मिलकर खोला था दवा प्लांट-** कोलकाता में फार्मा होलसेलर के तौर पर कामकाज शुरू करने वाले दिलीप संघवी ने सन फार्मा का गठन 1983 में किया. सिर्फ 5 लोगों और 5 दवाओं के साथ पहला प्लांट लगाने वाली सन फार्मा का मार्केट कैप 2.10 लाख करोड़ रुपए के पार निकल गया है. कंपनी की सालाना बिक्री 4.2 अरब डॉलर है. पिछले दो सालों में सन फार्मा ने प्रतिस्पर्धी फार्मा कंपनी रैनबैक्सी समेत करीब 13 कंपनियों का अधिग्रहण किया है. अपने समकालीनों के उलट सांघवी हमेशा अपने लक्ष्य पर केंद्रित रहे हैं. जब विदेश में उपक्रम लगाने की बारी आई तो उन्होंने केवल अमेरिकी बाजार पर ध्यान दिया, जो दुनिया का बड़ा दवा बाजार है. **घाटे में चल रही कंपनियों को मुनाफे में बदलने में माहिर-** 1955 में मुंबई में जन्मे दिलीप संघवी को घाटे में चल रही कंपनियों को खरीदकर उनकी काया पलटने के लिए जाना जाता है. दिलीप संघवी हमेशा कंपनी को सस्ते में खरीदने में विश्वास रखते हैं. कंपनी ने पहला सौदा 1987 में किया. लंबी सौदेबाजी के बाद अमेरिका की कैरको फार्मा दिलीप संघवी की पहली बड़ी खरीद थी. ये सौदा 5 करोड़ डॉलर में हुआ. इसके बाद दिलीप संघवी ने अमेरिका में ही दो और कंपनियों वैलिएंट और एबल फार्मा को खरीदा. घाटे में चल रही इन फार्मा कंपनियों की आज सन फार्मा की आमदनी में बड़ी हिस्सेदारी है. सन फार्मा बनी देश की सबसे फार्मा कंपनी पछले चार साल में दो बड़ी कंपनियों के अधिग्रहण ने दिलीप संघवी को फार्मा सेक्टर का किंग बना दिया है. ये दिलीप संघवी की लीडरशिप का ही कमाल है कि 30 साल पहले शुरू हुई सन फार्मा आज देश की सबसे बड़ी फार्मा कंपनी बन गई है. ये दिलीप संघवी की दूरदृष्टि का ही नतीजा है कि उनकी हर खरीद स्ट्रैटेजिक तौर पर सही साबित हुई. हर खरीद के साथ कंपनी के लिए नए बाजार खुलते चले गए. इनमें भी इजरायल की टैरो फार्मा का अधिग्रहण कंपनी के लिए गेम चेंजर साबित हुआ. 45 करोड़ डॉलर में हुए सौदे के बाद आज टैरो की सन फार्मा की आमदनी में 50 फीसदी की हिस्सेदारी है. हीं टूटने दिया निवेशकों का भरोसा दिलीप संघवी की लीडरशिप पर बाजार को भी पूरा भरोसा है. 1994 में जब सन फार्मा का आईपीओ आया तो इसमें 55 गुना बोली लगी थी. दिलीप संघवी ने कभी निवेशकों के भरोसे को तोड़ा भी नहीं. पिछले 5 साल में बाजार ने निवेशकों को जहां मामूली मुनाफा कमाकर दिया है वहीं सन फार्मा का मार्केट कैप बढ़कर 5 गुना हो गया है. दिलीप संघवी की इसी काबिलियत का कमाल है कि भारत में फोर्ब्स की अमीरों की लिस्ट में दिलीप तीसरे नंबर पर आ गए हैं.

कोविड-19 की वैक्सीन 1 जनवरी, 2021 से सिविलियन सकुर्लेशन में आएगी

रूस में बनकर तैयार हुई कोविड-19 की वैक्सीन का सिविलियन सकुर्लेशन में जाने की तारिक तय हो गयी है. सिविलियन सकुर्लेशन का मतलब होता है आम लोगों के लिए उपलब्ध होना. रूस द्वारा पंजीकृत इस वैक्सीन के प्रमाण पत्र के हवाले से मीडिया ने इस बात की सूचना दी. रूस में बनकर तैयार हुई कोविड-19 की वैक्सीन 1 जनवरी, 2021 से सिविलियन सकुर्लेशन में जाएगी यानि कि इसी दिन से इस वैक्सीन की पंहुच आम लोगों तक कराई जाएगी. समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के मुताबिक, रूसी स्वास्थ्य मंत्री मिखाइल मुराशको ने कहा कि यहां के माइक्रोबायोलॉजी रिसर्च सेंटर गेमालेया और रूसी रक्षा मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से विकसित कोविड-19 की वैक्सीन सबसे पहले चिकित्साकर्मियों और शिक्षकों को दी जाएगी. उन्होंने कहा, हम आम लोगों में चरणबद्ध तरीके से इसका उपयोग करना शुरू करेंगे. इसमें सबसे पहले उन्हें प्राथमिकता दी जाएगी जो काम के सिलसिले में संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आते हैं और ये चिकित्सा कर्मी हैं और यह उन्हें भी पहले मुहैया कराई जाएगी जो बच्चों की सेहत के लिए जिम्मेदार हैं यानि कि शिक्षक. रूसी स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि वैक्सीन के उत्पादन के लिए गेमालेया रिसर्च सेंटर इंस्टीट्यूट और फार्मास्युटिकल कंपनी बिन्नोफार्म जेएससी इन्हीं दो जगहों का उपयोग किया जाएगा. रूसी प्रत्यक्ष निवेश कोष के प्रमुख किरिल दिमित्रीग ने कहा कि देश को वैक्सीन की खुराक के लिए सौ करोड़ अनुरोध मिले हैं. उन्होंने कहा, हमने गेमालेया रिसर्च इंस्टीट्यूट द्वारा बनाए गए रूसी वैक्सीन के प्रति दुनिया की गहरी रूचि देखी है. हमें बीस राज्यों से वैक्सीन की सौ करोड़ से अधिक खुराक की खरीद के लिए प्रारंभिक अनुरोध प्राप्त हुए हैं. उन्होंने कहा कि रूस पांच देशों में अपने विदेशी भागीदारों के साथ मिलकर वैक्सीन की 50 करोड़ से अधिक खुराक के उत्पादन को सुनिश्चित करने के लिए तैयार है. अविनाश प्रभाकर.

20 YEARS 1998-2018
Quest PHARMACEUTICALS The Pharma People...
Comprehensive product range with latest Molecules attractive packings and competitiveprices
Quest for Standard ... Quest for Quality ... Quest for growth ... Quest to excel ...
Tablets | Capsules | Softgels | Liquid Orals | Injections | Ointments | Dry Syrups | Drops | Protein Powder
Where Maintaining Transparency, Trust & Ensuring Customer Satisfaction is a Norm
DOT-250 DT / Cap. | DOT-500 | CHECKSPAS | CORTIPRIV-6
FEBUQUEST-40 | DOTCLAV | DIVINASE FORTE | FALQUEST
HICLOX-LB | DIVINASE-RB | QUPRAZ | MOFLO-OZ
ZOLSTAR-DSR / LSR | QUPOD-CV | SPOROCEF-CV | SPOROCEF-O
SPOROCEF-100 / 200 DT | MEROCRAFT-1g | LYCOSHINE | QUPOD-100 / 200 DT
SPEEDON-SP | SPEEDON - TH4 | QUPRAZ-DSR / LSR | SPEEDON-P
Parties with sound financial background and established network are welcome to contact for Monopoly Rights at:
SCF-15, A-Block Market, Ranjit Avenue, Amritsar (Pb.)
INDIA (M) :98885-25668, 98146-45668 (Mr. Ranjit)
Email: quest_pharma@yahoo.co.in, visit at : www.questpharma.co.in

लालच ही इंसान को नरक तक ले जाता है – सर्वेश गुप्ता दवा विक्रेता

गाजियाबाद: सर्वेश गुप्ता का उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद नामक शहर में एक मेडिकल स्टोर था जो कि अपने स्थान के कारण काफी पुराना और अच्छी स्थिति में था। लेकिन जैसे कि कहा जाता है कि धन एक व्यक्ति के दिमाग को भ्रष्ट कर देता है और यही बात सर्वेश गुप्ता जी के साथ भी घटित हुई. सर्वेश गुप्ता जी बताते हैं कि मेरा मेडिकल स्टोर बहुत अच्छी तरह से चलता था और मेरी आर्थिक स्थिति भी बहुत अच्छी थी. अपनी कमाई से मैंने जमीन और कुछ प्लॉट खरीदे और अपने मेडिकल स्टोर के साथ एक क्लीनिकल लेबोरेटरी भी खोल ली. लेकिन मैं यहां झूठ नहीं बोलूंगा. मैं एक बहुत ही लालची किस्म का आदमी था क्योंकि मेडिकल;फील्ड में दोगुनी नहीं बल्कि कई गुना कमाई होती है. शायद ज्यादातर लोग इस बारे में नहीं जानते होंगे कि मेडिकल प्रोफेशन में 10 रुपये में आने वाली दवा आराम से 70–80 रुपये में बिक जाती है. लेकिन अगर कोई मुझसे कभी दो रुपये भी कम करने को कहता तो मैं ग्राहक को मना कर देता. खैर, मैं हर किसी के बारे में बात नहीं कर रहा हूं, सिर्फ अपनी बात कर रहा हूं. वर्ष 2008 में, गर्मी के दिनों में एक रुबूढ़ा;व्यक्ति मेरे स्टोर में आया. उसने मुझे डॉक्टर की पर्ची दी. मैंने दवा पढ़ी और उसे निकाल लिया. उस दवा का बिल 560 रुपये बन गया. लेकिन बूढ़ा सोच रहा था. उसने अपनी सारी जेब खाली कर दी लेकिन उसके पास कुल 180 रुपये थे. मैं उस समय बहुत गुस्से में था क्योंकि मुझे काफी समय लगा कर उस बूढ़े व्यक्ति की दवा निकालनी पड़ी थी और ऊपर से उसके पास पर्याप्त पैसे भी नहीं थे. बूढ़ा दवा लेने से मना भी नहीं कर पा रहा था. शायद उसे दवा की सख्त जरूरत थी। फिर उस बूढ़े व्यक्ति ने कहा, मेरी मदद करो. मेरे पास कम पैसे हैं और मेरी पत्नी बीमार है. हमारे बच्चे भी हमें पूछते नहीं हैं. मैं अपनी पत्नी को इस तरह वृद्धावस्था में मरते हुए नहीं देख सकता. लेकिन मैंने उस समय उस बूढ़े; व्यक्ति की बात नहीं सुनी और उसे दवा वापस छोड़ने के लिए कहा. यहां पर मैं एक बात कहना चाहूंगा कि वास्तव में उस बूढ़े व्यक्ति की दवा की कुल राशि 120 रुपये ही बनती थी. अगर मैंने उससे 150 रुपये भी ले लिए होते तो भी मुझे 30 रुपये का मुनाफा ही होता. लेकिन मेरे लालच ने उस बूढ़े लाचार व्यक्ति को भी नहीं छोड़ा. फिर मेरी दुकान पर खड़े एक दूसरे ग्राहक ने अपनी जेब से पैसे निकाले और उस बूढ़े आदमी के लिए दवा खरीदी. लेकिन इसका भी मुझ पर कोई असर नहीं हुआ. मैंने पैसे लिए और बूढ़े को दवाई दे दी. समय बीतता गया और वर्ष 2009 आ गया. मेरे इकलौते बेटे को ब्रेन ट्यूमर हो गया. पहले तो हमें पता ही नहीं चला. लेकिन जब पता चला तो बेटा मृत्यु के कगार पर था. पैसा बहता रहा और लड़के की बीमारी खराब होती गई. प्लॉट बिक गए, जमीन बिक गई और आखिरकार मेडिकल स्टोर भी बिक गया लेकिन मेरे बेटे की तबीयत बिल्कुल नहीं सुधरी. उसका ऑपरेशन भी हुआ और जब सब पैसा खत्म हो गया तो आखिरकार डॉक्टरों ने मुझे अपने बेटे को घर ले जाने और उसकी सेवा करने के लिए कहा. उसके पश्चात 2012 में मेरे बेटे का निधन हो गया. मैं जीवन भर कमाने के बाद भी उसे बचा नहीं सका. 2015 में मुझे भी लकवा मार गया और मुझे चोट भी लग गई. आज जब मेरी दवा आती है तो उन दवाओं पर खर्च किया गया पैसा मुझे काटता है क्योंकि मैं उन दवाओं की वास्तविक कीमत को जानता हूं. एक दिन मैं कुछ दवाई लेने के लिए मेडिकल स्टोर पर गया और 100 रु का इंजेक्शन मुझे 700 रु में दिया गया. लेकिन उस समय मेरी जेब में 500 रुपये ही थे और इंजेक्शन के बिना ही मुझे मेडिकल स्टोर से वापस आना पड़ा. उस समय मुझे उस बूढ़े व्यक्ति की बहुत याद आई और मैं घर चला गया. मैं लोगों से कहना चाहता हूं कि ठीक है कि हम सभी कमाने के लिए बैठे हैं क्योंकि हर किसी के पास एक पेट है. लेकिन वैध तरीके से कमाएं ईमानदारी से कमाएं. गरीब लाचारों को लूट कर कमाई करना अच्छी बात नहीं है, क्योंकि नरक और स्वर्ग केवल इस धरती पर ही हैं, कहीं और नहीं. और आज मैं नरक भुगत रहा हूं. पैसा हमेशा मदद नहीं करता. हमेशा ईश्वर के भय से चलो. उसका नियम अटल है क्योंकि कई बार एक छोटा सा लालच भी हमें बहुत बड़े दुख में धकेल सकता है. बेईमानी का पैसा पेट की एक–एक आंत फाड़कर निकलता है. **Praveen Bajpai, Mob.: 9453035555.**

फुटकर दवा व्यापारी कि समस्या का निदान

सभी फुटकर दवा व्यापारियों को ज्ञात है की लॉकडाउन से पूर्व आदरणीय श्री संजय मेहरोत्रा (चेयरमैन, FDVM) ने दवा व्यापारियों के लिये फूड लाइसेंस बनवाने का अभियान शुरू किया था. मुझे ये बताते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि इस कोरा. नाकाल कि विपरीत परिस्थितियों के पश्चात् भी श्री संजय मेहरोत्रा ना सिर्फ मानव सेवा ही कर रहे है बल्कि उनको अपने दवा व्यापारियों के व्यवसाय कि भी चिंता है. जिस कारण फूड लाइसेंस बनवाने जैसा महत्वपूर्ण कार्य भी संस्था द्वारा किये गये वादे के अनुसार बनवाना शुरू कर दिया है. इसके प्रथम चरण में लालबंगला क्षेत्र के 41दवा व्यापारियों का फूड लाइसेंस, श्री संजय मेहरोत्रा के अथक प्रयासों से बन कर आ गया है तथा उनके बीच वितरित किया जा रहा है. फुटकर दवा व्यापार मण्डल (पूर्वी क्षेत्र) के समस्त दवा व्यापारी एवं पदाधिकारी अपनी संस्था एवं उसके चेयरमैन का सहृदय आभार व्यक्त करते है जिनके कारण आज ये सम्भव हो सका. **उमेश श्रीवास्तव (उज्जैन) – 9058129523.**

ऑनलाईन फार्मेसी और दवा व्यापारी

अमेजन और रिलायंस के ऑनलाइन ट्रैड में आने के साथ ही चर्चाए बाजार में आम है. लोकडाउन के दौरान ऑनलाइन के व्यापार में वृद्धि और शेयर में उछाल से स्पस्ट है कि भविष्य किस ओर इशारा कर रहा है. क्या हम रिटेल सेक्टर को बचा पाएंगे? देखा जाय तो हमारे देश का बहुत कम प्रतिशत ही अभी मोबाइल एप्लीकेशन का अभ्यस्त है ऐसी दशा में आम रिटेलर और व्यापारी चिंतित नही है. फिर क्या कारण है कि ऑनलाइन का व्यापार बहुत तेजी से बढ़ रहा है. हमारे देश मे मात्र 5 प्रतिशत लोगो के पास देश की लगभग 80 से 90 प्रतिशत सम्पति और व्यवस्था पर पूरा कब्जा है. इन 5 प्रतिशत की यह 90 प्रतिशत अथाह दौलत सब पर भारी है. अभी बाजार में आम व्यक्ति तो नजर आता है किंतु वह 5 प्रतिशत विशिस्ट वर्ग धीरे धीरे घरेलू बाजार से दूर होकर ऑनलाइन पर जा रहा है. **अशोक खंडेलवाल – 9425092492**

Aurobindo Pharma receives USFDA Approval for Guaifenesin Extended-Release Tablets (OTC)

Aurobindo Pharma Limited is pleased to announce that the company has received final approval from the US Food & Drug Administration (USFDA) to manufacture Guaifenesin extended-release tablets, 600 mg and 1200 mg (OTC). Aurobindo's Guaifenesin extended-release tablets are the AB rated generic equivalent of RB Health (US) LLC's Mucinex® tablets. The product is expected to launch in Q4FY20. Guaifenesin extended-release tablets helps to loosen phlegm (mucus), and thin bronchial secretions to rid the bronchial passageways of bothersome mucus and make coughs more productive. The approved product has an estimated market size of US$ 301 million for the , according to IRI database. This is the 10 th ANDA (including 1 tentative approval) approved out of Unit X formulation facility in Naidupet, Andhra Pradesh, India used for manufacturing oral products. Aurobindo now has a total of 419 ANDA approvals (392 Final approvals including 21 from Aurolife Pharma LLC and 27 tentative approvals) from USFDA. **Phone: +91 (40) 6672 1200**

स्वस्थ होने के लिए जरूरी है एक्सरसाइज और डाइटिंग

स्वस्थ रहने के लिए आमतौर पर लोग एक्सरसाइज और डाइटिंग का सहारा लेते हैं. इसमें कोई शक नहीं है कि बॉडी फैट को कम करने के लिए हेल्दी और सीमित मात्रा में आहार लेना जरूरी है. लेकिन इसके साथ ही आपके भोजन करने के समय का भी वजन घटाने में अहम हिस्सा होता है. न्यूट्रिशनिस्ट का मानना है कि मोटापा कम करने के लिए आप कितना और कब खाते हैं, इसके साथ ही आपके खाने के समय का भी उतना ही मायने है. दरअसल, ज्यादातर लोग खाना खाने के सही समय का ध्यान नहीं रखते हैं. इसके कारण उन्हें वजन घटाने में काफी लंबा समय लगता है. **ब्रेकफास्ट–** नाश्ता हमारे भोजन का सबसे जरूरी हिस्सा है. वजन घटाने के लिए सुबह 6 से 10 बजे के बीच नाश्ता करना चाहिए. इसमें अधिक प्रोटीन से भरपूर आहार लेना चाहिए. यह बॉडी फैट और पूरे दिन लगने वाली भूख को कम करता है. पोषण विशेषज्ञों का मानना है कि तड़के सुबह नाश्ता करने वाले लोग दूसरों की तुलना में 15 किलो अधिक वजन कम कर सकते हैं. **लंच–** दोपहर 3 बजे से पहले लंच करने की कोशिश करनी चाहिए. अमेरिकन जर्नल ऑफ क्लिनिकल न्यूट्रिशन में छपी एक स्टडी के अनुसार, हर दिन समय पर दोपहर का भोजन करने वाले लोगों में मोटापे की समस्या कम होती है. साथ ही वजन भी तेजी से घटता है. **डिनर–** वजन कम करने के लिए शाम 7 बजे से पहले डिनर कर लेना चाहिए. रात का खाना बेहद हल्का होना चाहिए. रिसर्च में पाया गया है कि शाम 7 बजे तक डिनर करने वाले लोग 244 कैलोरी कम लेते हैं. जिससे उन्हें वजन घटाने में काफी मदद मिलती है. इसके अलावा डिनर करने के 1 से 2 घंटे बाद सोना चाहिए.

3 वर्ष तक घर बैठे यह समाचार पत्र पढ़ने के लिये हमारे पंजाब नैशनल बैंक के खाता संख्या 1824002100120081, IFSC Code - PUNB0182400 जो कि मैडीकल दर्पण के नाम से है, में रू० 250/- जमा कर अपना पूरा पता हमारे फोन नं०- 09410434811 पर SMS कर दें।

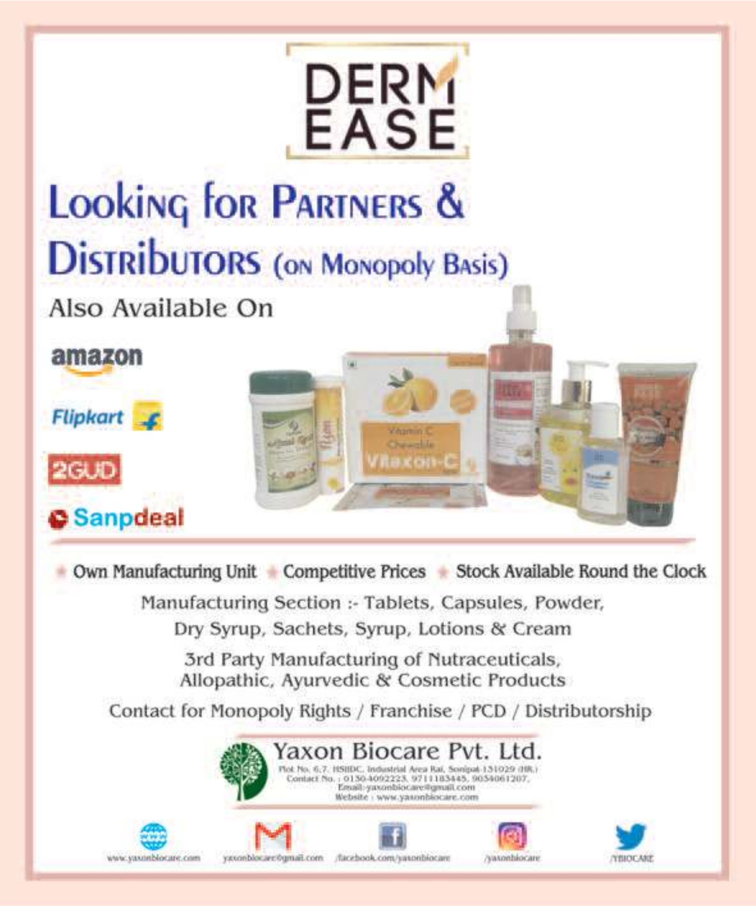

रूस ने कर दिखाया चमत्कार

आखिर रूस के पास ऐसा क्या है कि उसने दुनिया को पीछे छोड़ते हुए कम समय में कोरोना संक्रमण की वैक्सीन विकसित कर ली है? आखिर रूसी राष्ट्रपति पुतिन को इस पर इतना भरोसा क्यों है कि उन्होंने खुद अपनी बेटी पर इसका ट्रायल करा दिया? यहां जानें सेहत और तकनीक की बात...मंगलवार (11 अगस्त) को रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने इस बात की घोषणा कर दी कि उनके देश ने कोरोना वायरस के संक्रमण से बचने के लिए दुनिया की पहली वैक्सीन बना ली है. साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि इस वैक्सीन को रूस के स्वास्थ्य मंत्रालय ने भी अप्रूव्ड कर दिया है और खुद पुतिन ने अपनी बेटी को इस कोरोना वैक्सीन का टीका लगवाया है. लेकिन बिना डेटा सार्वजनिक किए तैयार की गई इस वैक्सीन के प्रति इतने भर से विश्वास नहीं जीता जा सकता. यही वजह है कि यूके खुलकर कह रहा है कि वह अपने देश के लोगों को इस वैक्सीन का टीका नहीं लगाएगा तो विश्व स्वास्थ्य संगठन ने पहले इस वैक्सीन पर चिंता जताई और बाद में इस वैक्सीन के प्रभावशाली होने के सबूत मांगे... यह कह रहा है WHO. भारत सरकार और भारतीय नागरिकों को पूरा भरोसा है कि रूसी कोरोना वेक्सीन, कोरोना वायरस का खात्मा करने मे अपना सबसे बड़ा रोल करेगी. -विश्व स्वास्थ्य संगठन ने रूस ने इस वैक्सीन से जुड़ी सभी रिसर्च और स्टडीज को सार्वजनिक करने के लिए कहा है. इसके साथ ही विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस वैक्सीन को रजिस्टर करने से पहले इसका क्लिनिकल ट्रायल पूरा करने के लिए भी कहा है. विश्व स्वास्थ्य संगठन ने रूस द्वारा तैयार की गई स्पुतनिक वैक्सीन के प्रभाव को लेकर चिंता जाहिर की थी. कोरोना वैक्सीन से जुड़ी रूस की तकनीक क्या है? यूके ने साफ कर दी है यह बात स्पुतनिक वैक्सीन के स्वास्थ्य पर असर और इसकी रिसर्च संबंधी जांच पर संशय के चलते यूनाइटेड स्टेट इस बात को साफ कर चुका है कि वह अपने देशवासियों को यह वैक्सीन नहीं लगाएगा. दुनियाभर और खासतौर पर अमेरिका द्वारा उठाए जा रहे सवालों पर ब्रा. जील के राजनीतिक एनालिस्ट्स गिल्वर्ट डॉक्टर्स का कहना है कि रूसी वैक्सीन पर पश्चिमी देश इसलिए अधिक सवाल उठा रहे हैं क्योंकि उनके लिए रूस का पहले वैक्सीन बना लेना अंगूर खट्टे हैं जैसा अनुभव है. कैसे रूस ने छोड़ दिया सबको पीछे? -रूस द्वारा इतनी जल्दी वैक्सीन बना लेने पर भले ही दुनिया के कई देश खासतौर पर वेस्टर्न कंपनियां सवाल उठा रही हैं. लेकिन यह बात जाननी चाहिए कि आखिर रूस ने कैसे इतनी जल्दी कोरोना वैक्सीन को विकसित कर लिया और किस तरह खुद रूस के राष्ट्रपति को इस वैक्सीन पर इतना भरोसा है कि उन्होंने खुद अपनी बेटी पर इसका ट्रायल होने दिया... कोरोना वैक्सीन पर रूस को सफलता -दरअसल, स्पूतनिक वैक्सीन बनाने के लिए रूस ने जिस तकनीक का उपयोग किया है, उस पर रूस को जीरो से काम नहीं करना पड़ा. क्योंकि इबोला वायरस के संक्रमण को खत्म करने के लिए उसकी वैक्सीन बनाने की प्रक्रिया रूस में कई साल पहले से चल रही थी. इसी तकनीक का उपयोग करते हुए रूसी वैज्ञानिकों ने कोरा. ेना वायरस के खिलाफ वैक्सीन विकसित करने का काम किया और दुनिया में सबसे पहले यह चमत्कार कर दिखाया.

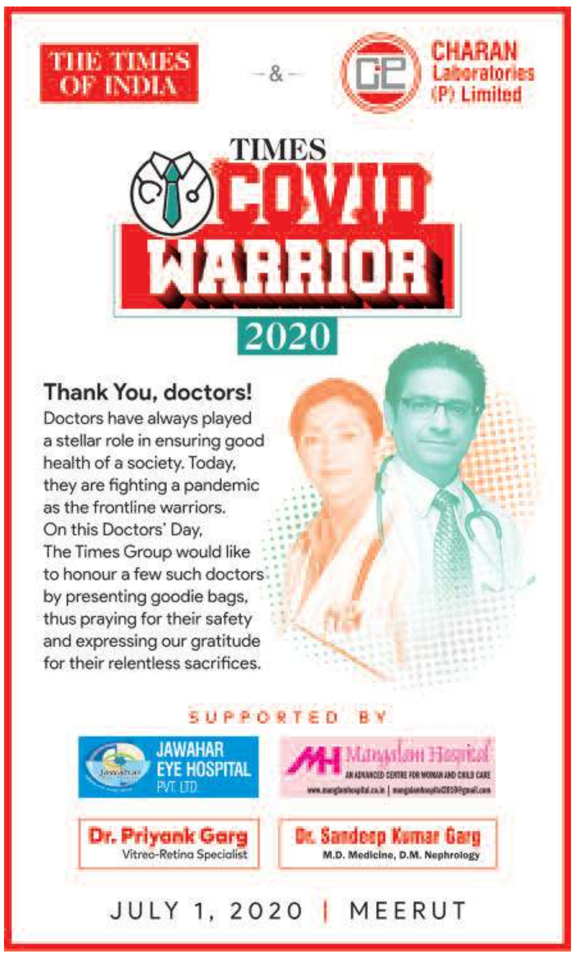

Coronavirus & Kidney Patients: क्या करें और क्या न करें?

नई दिल्ली: जो लोग पहले से किडनी से जुड़ी किसी बीमारी, जैसे COPD, टाइप-2 डायबिटीज या कैंसर से जूझ रहे हैं, उनके लिए कोरोना वायरस से संक्रमित होने का खतरा और भी बढ़ जाता है. हाल ही का डाटा देखा जाए, तो ये साफ है कि जिनहें किडनी से जुड़ी बीमारी है, खासकर वे लोग जो डायलिसिस पर हैं या ट्रांसप्लांट का इंतजार कर रहे हैं, उनमें कोरोना वायरस के गंभीर संक्रमण का जोखिम कहीं ज्यादा है, यहां तक कि मौत भी हो सकती है. कोरोना वायरस महामारी के दुनियाभर में फैले कहर को 8 महीने से ज्यादा का समय हो चुका है. इतना साफ है कि इसका अंत करीब नहीं है, ऐसे में सभी डॉक्टर और स्वास्थ्य से जुड़ी एजेंसियां लोगों को जागरुक कर रहे हैं कि वे कैसे कोरोना वायरस के जोखिम को कम कर सकते हैं, खासकर तब जब वे किडनी या फिर पहले से किसी गंभीर बीमारी से ग्रस्त हैं. **कोविड-19 महामारी: मरीज डायलिसिस पर हैं, तो क्या करें और क्या न करें-** इस वक्त हम सभी महामारी के एक कठिन समय से गुजर रहे हैं. हम में से कई लोग आंतरायिक लॉकडाउन प्रतिबंधों के कारण अलग-थलग पड़ गए हैं. खासकर, जो लोग डायलिसिस पर हैं उनके लिए डाइट, दवाइयां और अपने दिमागी स्वास्थ्य का ध्यान रखना एक चुनौती बन गई है. ऐसे में किडनी के मरीजों के लिए कुछ टिप्स हैं: Hypoglycemia Symptoms And Treatment: कहीं आपकी बॉडी में शुगर का स्तर कम तो नहीं? जानिए इस बीमारी के लक्षण और उपचार डाइट एक महत्वपूर्ण किरदार निभाती है इसलिए डायलिसिस के मरीजों को: खाने में नमक का सेवन कम करना चाहिए. सोडियम की मात्रा बढ़ने से प्यास ज्यादा लगती है और आप तरल पदार्थ का सेवन अधिक करने लगते हैं. ताजा सब्जियों का सेवन करें और खाने का स्वाद बढ़ाने के लिए उसमें नींबू का रस मिला सकते हैं. पोटैशियम की मात्रा का ख्याल रखें. इसका स्तर ऊपर या नीचे होने से कार्डीयेक अरेस्ट हो सकता है. डेयरी उत्पादन, प्रोसेस्ड फूड, हड्डियों का सूप, बीन्स और कोको युक्त खाने से दूर रहें. ऐसा खाना खाएं जिसमें प्रोटीन की मात्रा उच्च हो, जैसे अंडे, सोया, चिकन, दालें और मच्छली. चाय, कॉफी या पानी को लेकर अपने नेफरेलॉडिस्ट से जरूर सलाह लें. अपनी दवाइयों का स्टॉक घर पर रखें, कम से कम 2-3 हफ्तों का. ताकि आपको बार-बार बाजार न जाना पड़े. अपनी दवाइयों के बारे में जानें कि डॉक्टर ने इन्हें खाने की सलाह क्यों दी है. दवाइयों को लेकर चेकलिस्ट बना सकते हैं या अलार्म भी लगा सकते हैं. अपने नेफ्रोलॉजिस्ट से रोजाना संपर्क में रहें. आपका दिमागी स्वास्थ्य आपके शरीर पर भी असर डालता है. किडने के पुराने मरीज और उनकी देखभाल करने वाले लोग कभी न कभी अवसाद से गुजरते हैं. ऐसा इसलिए क्योंकि ये एक बीमारी उनकी लाइफस्टाइल में कई तरह के बदलाव लाती है, खासकर आइसोलेशन के दौरान. ध्यान या योग भी अत्यन्त लाभकारी सिद्व होंगे.

New drug RLF-100 shows dramatic recovery in Covid-19 patients suffering respiratory failure

Sumit Pawa

Aviptadil is a formulation of Vasoactive Intestinal Polypeptide (VIP), which is present in high concentrations in the lungs and known to block various inflammatory cytokines. NeuroRx and Relief Therapeutics have partnered to develop the drug. PTI August 06, 2020, 15:30 IST HOUSTON: Doctors at a hospital here have used a new drug called RLF-100, also known as aviptadil, that has led to rapid recovery from respiratory failure in critically ill Covid-19 patients. The drug has been approved by the FDA for emergency use at multiple clinical sites in patients who are too ill to enter the FDA's Phase 2/3 trials. Houston Methodist Hospital was the first to report the rapid recovery of patients on ventilators and those with severe medical conditions after three days of treatment. Aviptadil is a formulation of Vasoactive Intestinal Polypeptide (VIP), which is present in high concentrations in the lungs and known to block various inflammatory cytokines. NeuroRx and Relief Therapeutics have partnered to develop the drug. According to a statement from the drug maker NeuroRX, independent researchers have reported that aviptadil blocked replication of the SARS coronavirus in human lung cells and monocytes. According to the report, a 54-year-old man who contracted Covid-19 while being treated for rejection of a double lung transplant came off a ventilator within four days. And, similar results were seen in more than 15 patients. The drug appeared to have rapidly cleared pneumonitis findings on an X-ray, improved blood oxygen and a 50 per cent or greater average decrease in laboratory markers associated with Covid-19 inflammation, the statement said. "No other antiviral agent has demonstrated rapid recovery from viral infection and demonstrated laboratory inhibition of viral replication," said Prof. Jonathan Javitt, CEO and Chairman of NeuroRx. "We are conducting placebo-controlled trials to see whether the observations made in the case-control and open-label studies will be confirmed for less ill patients with Covid-19-related respiratory failure. Our independent Data Monitoring Committee will be conducting an interim analysis of these data later this month," Javitt said. - Sumit Pawa (Kanpur) 7084000070.

याददाश्त को दुरुस्त रखने के लिए अपनी डाइट में करें इन चीजों को शामिल

नई दिल्ली: जिंदगी में मसरूफियत इतनी ज्यादा बढ़ गई है कि हमारा दिमाग कई कामों में एक साथ बट गया है. वर्क लोड ने हमारी याददाश्त को कमजोर बना दिया है जिसका नतीजा है कि हम कई जरूरी काम करना भूल जाते है. आपको पता है कि आपके खान-पान का असर ना सिर्फ आपकी सेहत पर पड़ता है बल्कि आपकी याददाश्त पर भी पड़ता है. आप भी अगर चीजों को रख कर भूल जाते हैं, जरूरी काम करना भूल जाते हैं तो समझ जाइए कि आपकी याददाश्त प्रभावित हो रही है. अपनी याददाश्त को मजबूत बनाने के लिए आप अपनी डाइट पर ध्यान दें। हमारे दिमाग को कुछ जरूरी पोषक तत्व नहीं मिल पाते जिसकी वजह से हमारी याददाश्त कमजोर होने लती है. हमारी डाइट इतनी खराब हो गई कि हमें जरूरी फाइबर और खनिज तत्व नहीं मिल पाते. आप अपनी याददाश्त दुरुस्त करना चाहते हैं तो अपनी डाइट में इन चीजों को शामिल करें. **बादाम का करें इस्तेमाल:** याददाश्त को दुरुस्त करने के लिए रात को रोज 9 बादाम भिगो दें और सुबह उन्हें छील कर उनका पेस्ट बना लें. इस पेस्ट को गर्म दूध में मिलाएं साथ में एक चमचा शहद भी मिलाएं. बादाम और शहद के दूध को पीने से आपकी याददाश्त तेज रहेगी. **कॉफी पीएं:** कॉफी में मौजूद कैफीन दिमाग के उस हिस्से को क्रियशील बनाता है जहां से इंसान की सक्रिया, मूड और ध्यान नियंत्रित होता है. आप सुबह नाश्ते में कॉफी पिएंगे तो आप फुर्तीला महसूस करेंगे.

Unichem Laboratories Limited is pleased to announce Tablets USP 1 mg and 2 mg from (USFDA)

Unichem Laboratories Limited is pleased to announce that it has received ANDA approval for its Tolterodine Tartrate Tablets, USP 1 mg and 2 mg from the United States Food and Drug Administration (USFDA) to market a generic version of DETROL® (tolterodine tartrate) tablets of Pfizer Inc. Tolterodine tartrate tablets are indicated for the treatment of overactive bladder with symptoms of urge urinary incontinence, urgency, and frequency. The product will be commercialized from Unichem's Goa Plant. About Unichem Laboratories Limited Unichem Laboratories Limited is an international, integrated, specialty pharmaceutical company. It manufactures and markets a large basket of pharmaceutical formulations as branded generics as well as generics in several markets across the world. In India, The Company has strong skills in product development, process chemistry and manufacturing complex API as well as dosage forms. More information about the Company can be found at www.unichemlabs.com For more information please contact: Mr. Pradeep Bhandari Ph: +91-22-66888 404 E-mail: pradeep.bhandari@unichemlabs.com

रूस ने तैयार की कोरोना वैक्सीन

रूस को मिली कामयाबी, ऐसा क्या है कि उसने दुनिया को पीछे छोड़ते हुए कम समय में कोरोना संक्रमण की वैक्सीन विकसित कर ली है? आखिर रूसी राष्ट्रपति पुतिन को इस पर इतना भरोसा क्यों है कि उन्होंने खुद अपनी बेटी पर इसका ट्रायल करा दिया? यहां जानें सेहत और तकनीक की बात. मंगलवार (11 अगस्त) को रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने इस बात की घोषणा कर दी कि उनके देश ने कोरोना वायरस के संक्रमण से बचने के लिए दुनिया की पहली वैक्सीन बना ली है. साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि इस वैक्सीन को रूस के स्वास्थ्य मंत्रालय ने भी अप्रूव्ड कर दिया है और खुद पुतिन ने अपनी बेटी को इस कोरोना वैक्सीन का टीका लगवाया है. लेकिन बिना डेटा सार्वजनिक किए तैयार की गई इस वैक्सीन के प्रति इतनेभर से विश्वास नहीं जीता जा सकता. यही वजह है कि यूके खुलकर कह रहा है कि वह अपने देश के लोगों को इस वैक्सीन का टीका नहीं लगाएगा तो विश्व स्वास्थ्य संगठन ने पहले इस वैक्सीन पर चिंता जताई और बाद में इस वैक्सीन के प्रभावशाली होने के सबूत मांगे. WHO के अनुसार- भारत सरकार ओर भारतीय नागरिको को पूरा भरोषा है की रूसी कोरोना वेक्सीन कोरोना वाइरस का खात्मा करने मे अपना सबसे बड़ा रोल करेगी. विश्व स्वास्थ्य संगठन ने रूस ने इस वैक्सीन से जुड़ी सभी रिसर्च और स्टडीज को सार्वजनिक करने के लिए कहा है. इसके साथ ही विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस वैक्सीन को रजिस्टर करने से पहले इसका क्लिनिकल ट्रायल पूरा करने के लिए भी कहा है. विश्व स्वास्थ्य संगठन ने रूस द्वारा तैयार की गई स्पुतनिक-V वैक्सीन के प्रभाव को लेकर चिंता जाहिर की थी. **रूस की कोरोना वैक्सीन-** दरअसल, स्पूतनिक-V वैक्सीन बनाने के लिए रूस ने जिस तकनीक का उपयोग किया है, उस पर रूस को जीरो से काम नहीं करना पड़ा. क्योंकि इबोला वायरस के संक्रमण को खत्म करने के लिए उसकी वैक्सीन बनाने की प्रक्रिया रूस में कई साल पहले से चल रही थी. इसी तकनीक का उपयोग करते हुए रूसी वैज्ञानिकों ने कोरोना वायरस के खिलाफ वैक्सीन विकसित करने का काम किया और दुनिया में सबसे पहले यह चमत्कार कर दिखाया.

ट्रक से प्रतिबंधित दवा की तस्करी

त्रिपुरा- अगरतला के चंद्रपुर में एक ट्रक में तस्करी कर ले जाई जा रही प्रतिबंधित कफ सिरप की बड़ी खेप पकड़ी गई है. पुलिस ने 1000 से अधिक प्रतिबंधित कफ सिरप की बोतलें जब्त कर ड्राइवर समेत तीन लोगों को गिरफ्तार किया है. पुलिस ने नार्कोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रॉपिक सबस्टांसेज एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया है. गौरतलब है कि इससे पहले शांतिपारा एरिया में एक ड्रग तस्कर के घर से 13 लाख कैश समेत 52,000 याबा टैबलेट और ब्राउन शुगर जब्त किया गया. वहीं, छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में 4 लाख से अधिक रकम वाले प्रतिबंधित कफ सिरप को जब्त किया गया था. साथ ही तीन आरोपियों की गिरफ्तारी भी हुई थी. तब 47 सौ कफ सिरप की बोतलें जब्त की गई थी. इस माह की शुरुआत में सीमा सुरक्षा बल के दक्षिण बंगाल फ्रंटियर के जवानों ने बंगाल के उत्तर 24 परगना जिले में भारत-बांग्लादेश सीमा के पास तस्करी को नाकाम करते हुए फेंसिडिल कफ सिरप की बोतलें, पतंग और धागा की बड़ी खेप जब्त किया है. इसकी कीमत लगभग 3,04,308 रुपये है. इन सामानों को बनगांव इलाके के गुनारमठ सीमा चौकी क्षेत्र से होकर इच्छामती नदी के रास्ते बांग्लादेश ले जाया जा रहा था.

नया उत्पाद

Sun Pharma का नया धमाका, कम्पनी ने एक Amorolofine Nail Lacquer (Fungicros Nail Lacquer) के नाम से नया उत्पाद लांच किया है. यह उत्पाद नाखून से सम्बन्धित सभी रोग के लिए सक्षम है. इस उत्पाद को पूरे भारत मे अपने नजदीकी Retailers से लिया जा सकता है.

पतंजलि की दवा के नाम पर मेडिकल स्टोर संचालक से लाखों ठगे

रुद्रपुर- रुद्रपुर में गुप्ता मेडिकल स्टोर संचालक से पंतजलि योगपीठ की दवा के नाम पर 2.44 लाख रुपये की धोखाधड़ी का मामला सामने आया है. पीडित की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी सेल्स मैनेजर के खिलाफ धोखाधड़ी का केस दर्ज कर लिया है. पुलिस के अनुसार गोल मार्केट निवासी सुनील कुमार गुप्ता की घर के पास ही गुप्ता आयुर्वेदिक नाम से दुकान है. उसका संपर्क सुनील नाम के व्यक्ति से हुआ. सुनील ने बताया कि वह पंतजलि योगपीठ हरिद्वार का सेल्स मैनेजर है. पंतजलि योगपीठ की दवा बेचता है. उसने अपना कर्मचारी कोड 1034 भी बताया. साथ ही उनसे सेल्समैन ने पंतजलि माल उत्पादक खरीदने के लिए आग्रह किया. उसकी बातों में आकर मेडिकल स्टोर संचालक सुनील कुमार गुप्ता ने 2.44 लाख रुपये उसके खाते में डालकर दवा का आर्डर दे दिया. काफी समय बीतने के बाद भी दवा नहीं आई. जब उन्होंने सेल्स मैनेजर के नंबर पर कॉल किया तो वह बंद था. ठगी का अहसास होने पर सुनील कुमार गुप्ता ने पुलिस को शिकायत देकर कार्रवाई की मांग की. पुलिस ने आरोपी सेल्स मैनेजर के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है.

सैनिटाइजर बना रही अवैध फैक्ट्री पर रेड

कौशांबी: कोरोना संकट काल में लोग महामारी के डर का भी फायदा उठा रहे हैं. औषधि निरीक्षक और पुलिस टीम ने मादपुर गांव में दबिश देकर पखवारा भर से चोरी-छिपे संचालित सैनिटाइजर फैक्ट्री का भंडाफोड़ किया. मौके से सैनिटाइजर बनाने में इस्तेमाल होने वाले केमिकल व उपकरण बरामद हुए. पुलिस ने दो लोगों को गिरफ्तार कर आरोपियों को कोर्ट में पेश किया, जहां से जेल भेज दिया गया है. जानकारी अनुसार मादपुर निवासी संजीव कुमार पुत्र रामशंकर का मकान सड़क किनारे है. लगभग 15 दिन से इस मकान को दो लोगों ने किराए पर ले रखा था. दोनों युवक कमरे में चोरी-छिपे केमिकल के जरिए सैनिटाइजर बनाते थे. सल्लाहपुर चौकी प्रभारी संजय सिंह परिहार को मुखबिर से इसकी जानकारी मिली तो उन्होंने औषधि निरीक्षक गो. विंद लाल गुप्ता और राहुल कुमार की मदद ली और पुलिस फोर्स के साथ मादपुर गांव पहुंच गए. चौकी प्रभारी के मुताबिक मकान से दो युवक. ों को पकड़ा गया. साथ ही मौके से करीब 12 लाख रुपये कीमत का 11 सौ लीटर आइसो प्रोफाइट अल्कोहल समेत अन्य केमिकल बरामद किया गया. आरोपितों ने अपना नाम मोहम्मद अफजाल पुत्र अफसार अहमद निवासी नीम सराय मुंडेरा धूमनगंज प्रयागराज व अमित सिंह पुत्र गुलाब सिंह निवासी पहाड़पुर मऊ चित्रकूट के रूप में बताया. दोनों आरोपितों ने पुलिस को बताया कि वह केमिकल के प्रयोग से सैनिटाइजर बनाते हैं और शीशी में हाइजिन नाम का रैपर लगाकर बेचते थे. पूरामुफ्ती के मादपुर में पकड़े गए नकली सैनिटाइजर कारखाना में सौ और दो सौ ग्राम की बोतलों की पैकिंग की जाती थी. पकड़े गए आरोपियों ने बताया कि वह मूरतगंज, मनौरी, चरवा समेत प्रयागराज के मुंडेरा, धूमनग. ंज और नैनी में सप्लाई करते थे. आरोपित अमित ने बताया कि वह पहले अकेले ही नकली पाउडर बनाता था. चार माह पहले सैनिटाइजर बनाने वाले अफजाल से मिलने के बाद दोनों अवैध कारोबार को एक जगह कर एक दूसरे के ग्राहकों को आपूर्ति करने लगे. इससे लेबर के साथ- साथ मकान का किराया भी बचने लगा था. ड्रग इंस्पेक्टर राहुल कुमार का कहना है कि बगैर लाइसेंस के सैनिटाइजर बनना अवैध है. पूरे प्रकरण की जांच हो रही है.

करोड़ों का दवा खरीद घोटाला

श्रीनगर: राजनीति और आतंकवाद को लेकर केंद्र में रहने वाला जम्मू-कश्मीर इस बार दवा खरीद में करोड़ों के घोटाले को लेकर चर्चा में है. स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग में करोड़ों रुपए के घोटाले का खुलासा होने से घाटी में हलचल मच गई है. वित्तमंत्री डॉ. अहमद द्राबू द्वारा विधानसभा में पेश की गई नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) की रिपोर्ट में सामने आया कि राज्य के मरीजों को 50.95 लाख दवाइयां घटिया स्तर की दे दी गई. विभाग ने 89.08 करोड़ के उपकरण और दवाइयां एक्सपायर्ड रेट कांट्रेक्ट्स, स्वास्थ्य संस्थान से बाहर अथवा स्थानीय बाजार से खरीदे गए हैं. इनमें 44.28 करोड़ रुपए की दवाइयां और 34.80 करोड़ रुपए के उपकरण शामिल हैं. इसी प्रकार 1.17 करोड़ रुपए के चिकित्सा उपकरण फर्जी सप्लाई ऑर्डर के आधार पर खरीद लिए, जबकि अस्पतालों को मिलने के बावजूद 1.21 करोड़ रुपए के चिकित्सा उपकरण ढांचागत सुविधाओं एवं प्रशिक्षित स्टाफ के अभाव में दे दी गयी. नियमों के अनुसार स्वास्थ्य संस्थानों को कोई दवाई अथवा डिस्पोजेबल का प्रयोग करने से पहले इसे ड्रग कंट्रोलर या किसी मान्यताप्राप्त लैबोरेट्री को सैंपल भेजना होता है, ताकि इन सैंपलों की टैस्टिंग के बाद सुनिश्चित किया जा सके कि संबंधित दवाई अथवा डिस्पोजल उच्च गुणवत्ता का है, लेकिन कैग की जांच के दौरान पाया गया कि राज्य के अनेक स्वास्थ्य संस्थानों में ऐसी टेस्टिंग नहीं करवाई गई थी. स्टेट ड्रग एंड फूड कंट्रोलर ऑर्गेनाइजेशन, श्रीनगर के आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2010 से 2015 तक विभिन्न स्वास्थ्य संस्थानों से केवल 1733 सैंपल लिए गए, जिनमें से 43 निम्न गुणवत्ता के पाए गए. राज्य के स्वास्थ्य संस्थानों में 50.95 लाख गोलियां, कैप्सूल व इंजेक्शन भी गुणवत्ताविहीन मिले. कैग की रिपोर्ट में यह भी खुलासा हुआ कि स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग द्वारा एक ही दवाइयां अलग-अलग रेट पर खरीदी गई. खरीद प्रक्रिया में बड़े स्तर पर नियमों का उल्लंघन हुआ है.

ई-फार्मेसी का विरोध

उत्तरप्रदेश केमिस्ट एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स एसो०(रजि०) के आह्वान पर बरेली मंडल के समस्त दवा व्यापारियों से आग्रह है कि अपने मोबाइल फोन से 1800 11 7800 पर आज ही फोन करके माननीय प्रधानमंत्री जी से ई-फार्मेसी पर रोक लगाने का आग्रह करे. आज नही तो कभी नहीं. जितने अधिक फोन किये जायेंगे उतनी जल्द उनके पास देश भर के दवा व्यापारियों की बात पहुंचेगी और हमारे प्रधानमंत्री जी इसका निवाकरण करेंगे. बरेली मंडल कैमिस्ट वेलफेयर संस्था बरेली. **- आशीष शर्मा, मो. 9837279162.**

COVID-19 औषधि नियामक ने अमेरिकी कंपनी को दवा के विपणन की मंजूरी दी

नई दिल्ली: कोरोना वायरस महामारी से उत्पन्न संकट को देखते हुये भारत के औषधि नियामक ने अस्पताल में भर्ती COVID-19 रोगियों पर अमेरिका की फार्मा कंपनी गिलेड साइंसेज को उसकी विषाणु निरोधक दवा रेमेडीसिविर के प्रतिबंधित आपातकालीन इस्तेमाल को लेकर मार्केटिंग की अनुमति दे दी है. इससे संबंधित एक सूत्र ने प्रेट्र को बताया कि कोरोना वायरस महामारी के आलोक में आपात स्थिति एवं दवा की जरूरतों को देखते हुए रेमेडीसिविर की मंजूरी की प्रक्रिया तेज कर दी गई है. सूत्रों ने बताया कि इस दवा के इस्तेमाल की मंजूरी प्रतिबंधित आपातकालीन इस्तेमाल के लिए दी गई है. यह अधिकतम पांच दिन की अवधि के लिए है. उन्होंने बताया कि इसका इस्तेमाल ऐसे वयस्कों एवं बच्चों के इलाज पर किया जाएगा जो संदिग्ध रूप में अथवा संक्रमण की पुष्टि के बाद अस्पताल में भर्ती हैं और जिनमें संक्रमण के गंभीर लक्षण हैं. उन्होंने बताया, इंजेक्शन के सहारे दी जाने वाली इस दवा को अस्पताल एवं संस्थाओं के इस्तेमाल के लिए मंजूरी दी गई है जिसे विशेषज्ञों के पर्चे पर खुदरा लिया जा सकेगा. सूत्रों ने बताया, इसे दस दिन की बजाए अधिकतम पांच दिन की अवधि के लिए मंजूर किया गया है क्योंकि अनुमोदन के समय प्रस्तुत साक्ष्यों के आधार पर इसके विस्तारित इस्तेमाल का कोई लाभकारी प्रभाव नहीं देखा गया है. उन्होंने बताया, नई औषधि एवं क्लिनिकल ट्रायल नियम 2019 के तहत विशेष प्रावधान ला कर दवा को मंजूरी देने की प्रक्रिया में तेजी लाई गई है, जिसके तहत विशेष परिस्थितियों में क्लिनिकल ट्रायल से छूट का प्रावधान है. गिलेड साइंसेज ने 29 मई को भारत में दवा के विपणन अधिकार के लिए आवेदन दिया था. इस दवा को COVID-19 के संभावित उपचार के तौर पर देखा जा रहा है. केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन की विशेषज्ञों की समिति से सलाह मशविरे के बाद इस दवा को मंजूरी दी गई है.

सरकार की नियमित ड्रग टेस्टिंग और मॉडर्न लैब योजना

नई दिल्ली- देश के 2 लाख करोड़ की फार्मा इंडस्ट्री को रेगुलेट करने के लिए सरकार ने नियमित तौर पर ड्रग टेस्टिंग की योजना बनाई है. इसके लिए सभी राज्यों में मॉडर्न लैब बनाई जाएंगी. जांच के लिए स्पेशल टीम बनायी जाएगी. दवा बनाने वाली कंपनियां अब क्वालिटी के मामले में किसी तरह की लापरवाही नहीं बरत पाएंगी. दवाइयों में अगर किसी तरह की कमी पाई गई तो कंपनियों को भारी जुर्माना देना पड़ सकता है. यहां तक कि लाइसेंस रद्द भी किया जा सकता है. स्वास्थ्य विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि इसके लिए हर स्टेट में दवाइयों की जांच के लिए आधुनिक तकनीक वाले लैबोरेटरी बनाई जाएंगी. पहले से मौजूद टेस्टिंग लैब में सुविधाएं बढ़ाई जाएंगी. लैब के लिए ट्रेंड मैनपावर का इंतजाम किया जाएगा. सेंट्रल ड्रग स्टैंडर्ड कंट्रोल ऑर्गनाइजेशन कभी भी राज्यों में ड्रग मैन्यूफैक्वचरिंग साइट से सैंपल उठाकर उनकी जांच इन लैब में करवा सकती है. अगर जांच में कुछ भी गलत पाया गया तो इसकी जिम्मेदारी ड्रग कंपनी की होगी. पिछले दिनों एफ.डी.सी. ड्रग या कुछ अन्य दवाइयों की क्वालिटी खराब पाए जाने के बाद इस ओर खास तौर से ध्यान दिया जा रहा है. फंडिंग के लिए 75 रू, 25 और 90 रू 10 का फॉर्मूला राज्यों में लैबोरेटरी बनाने और उनमें मैनपावर के लिए केंद्र सरकार की ओर से 75 फीसदी फंडिंग की जाएगी और 25 फीसदी हिस्सा राज्यों का होगा. हालांकि नॉर्थ ईस्टर जम्मू एंड कश्मीर उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश के लिए यह अनुपात 90 रू 10 का होगा. इसके लिए राज्य सरकारों से बात चल रही है. दवा की गुणवत्ता के लिए स्टेट ड्रग रेगुलेटरी सिस्टम में होने वाले हर सुधार पर भी नजर रखी जाएगी. पूरी योजना की ऑडिट ड्रग कंट्रोलर जनरल आफ इंडिया द्वारा किया जाएगा. ओवरआल मॉनिटरिंग हेल्थ मिनिस्ट्री द्वारा होगी. अधिकारी ने बताया कि देश में मिलने वाली दवा की क्वालिटी में कमी हो तो इससे पब्लिक हेल्थ प्रभावित होती है साथ ही देश की छवि भी खराब होती है. इसका सीधा असर ड्रग इंडस्ट्री पर पड़ता है. इसलिए ऐसा नेटवर्क तैयार किया जा रहा है जिससे यहां केवल सेफ ड्रग की उपलब्धता ही हो.

अब फार्मासिस्टों के बनेंगे पहचान पत्र

जयपुर- राजस्थान फार्मेसी काउंसिल में 55 हजार पंजीकृत फार्मासिस्टों के पहचान पत्र बनाने का निर्णय लिया है, ताकि उन्हें पहचान मिल सके. आईडेंटिटी कार्ड में रजिस्ट्रेशन नंबर, नाम, पता, मोबाइल नंबर अंकित होगा. इससे ड्रग विभाग की ओर से निरीक्षण के दौरान किसी भी ड्रग स्टोर पर पंजीकृत फार्मासिस्ट के बारें में इधर-उधर भटकने की जरुरत नहीं पड़ेगी और वे किसी तरह की आपात स्थिति में सेवा दे सकेंगे. इसके अलावा फार्मेसी का अध्ययन करने वाले, बेरोजगार को रोजगार दिलाने और हरेक तरह से अपडेट के हिसाब से हर माह न्यूज 'एटूजेड बुलेटिन' निकालेगा. इसमें नई दवा, नई रिसर्च, रोजगार, मान्यता प्राप्त संस्थान, पीसीआई के दिशा-निर्देश, काउंसिल की प्रगति रिपोर्ट और नई-नई योजनाओं की जानकारी प्रकाशित की जाएगी. साथ ही एक्सीडेंटल पॉलिसी बनाने पर भी विचार कर रहा है. बीमा कंपनी से वार्ता जारी है. यह निर्णय हाल ही में आयोजित काउंसिल के सदस्यों की मीटिंग में लिया गया. बैठक में पंजीकृत फार्मासिस्टों का सामूहिक दुर्घटना बीमा करवाना, ड्रग इंफोर्मेशन सेन्टर खोलना और पंजीकरण की प्रक्रिया सरलीकरण करवाने की योजना प्रस्तावित है. राजस्थान फार्मेसी काउंसिल के अध्यक्ष डॉ. ईश मुंजाल का कहना है कि फार्मासिस्टों के शैक्षणिक स्तर में सुधार, हरेक तरह से अपडेट रहने तथा समाज में रहकर क्वालिटी से युक्त सेवा देने के लिए काउंसिल की अनेक योजना प्रस्तावित है. जल्द ही लागू की जाएगी. जिससे आमजन को भी फायदा मिलेगा.

AYURVEDIC PRODUCTS WITH YOUR BRAND NAMES
We are GMP & ISO certified Ayurvedic Manufacturing unit situated at Haryna state. We are manufacturing high class Ayurvedic Liquids, Capsules, Tablets, Oils, Powders etc. in very attractive packagings.
interested persons wants to manufacture products with own brand names may contact:-
98120-79520,36928 E-mail:ayujyoti@gmail.com

निस्वार्थ त्याग और भक्ति की आज तक की सबसे बड़ी मिसाल

गुरु गोबिंद सिंह जी के छोटे-छोटे साहिबजादों बाबा फतह सिंह और बाबा जोरावर सिंह की शहादत की दास्तान शायद आप सबने कभी ना कभी कहीं ना कहीं से सुनी होगी......यहीं सिरहिन्द के फतहगढ़ साहिब में मुगलों के तत्कालीन फौजदार वजीर खान ने दोनो साहिबजादों को जीवित ही दीवार में चिनवा दिया था. दीवान टोडर मल जो कि इस क्षेत्र के एक धनी व्यक्ति थे और गुरु गोविंद सिंह जी एवं उनके परिवार के लिए अपना सब कुछ कुर्बान करने को तैयार थे. उन्होंने वजीर खान से साहिबजादों के पार्थिव शरीर की माँग की और वह भूमि जहाँ वह शहीद हुए थे. वहीं पर उनकी अंत्येष्टि करने की इच्छा प्रकट की .... वजीर खान ने धृष्टता दिखाते हुए भूमि देने के लिए एक अटपटी और अनुचित माँग रखी.... वजीर खान ने माँग रखी कि इस भूमि पर सोने की मोहरें बिछाने पर जितनी मोहरें आएँगी. वही इस भूमि का दाम होगा.......दीवान टोडर मल के अपने सब भंडार खाली करके जब मोहरें भूमि पर बिछानी शुरू कीं तो वजीर खान ने धृष्टता की पराकाष्ठा पार करते हुए कहा कि मोहरें बिछा कर नहीं बल्कि खड़ी करके रखी जाएँगी ताकि अधिक से अधिक मोहरें वसूली जा सकें..........खैर.....दीवान टोडर मल ने अपना सब कुछ बेच-बाच कर और मोहरें इकट्ठी कीं और रु78000 सोने की मोहरें देकर चार गज भूमि को खरीदा ताकि गुरु जी के साहिबजादों का अंतिम संस्कार वहाँ किया जा सके......विश्व के इतिहास में ना तो ऐसे त्याग की कहीं कोई और मिसाल मिलती है ना ही कहीं पर किसी भूमि के टुकड़े का इतना भारी मूल्य कहीं और आज तक चुकाया गया. जब बाद में गुरु गोविन्द सिंह जी को इस बारे में पता चला तो उन्होंने दीवान टोडर मल से कृतज्ञता प्रकट की और उनसे कहा की वे उनके त्याग से बहुत प्रभावित हैं और उनसे इस त्याग के बदले में कुछ माँगने को कहा. जरा सोचिए दीवान टोडर मल ने क्या माँगा होगा गुरु जी से ? दीवान जी ने गुरु जी से जो माँगा उसकी कल्पना करना भी असम्भव है! दीवान टोडर मल जी ने गुरु जी से कहा की यदि कुछ देना ही चाहते हैं तो कुछ ऐसा वर दीजिए की मेरे घर पर कोई पुत्र ना जन्म ले और मेरी वंशावली यहीं मेरे साथ ही समाप्त हो जाए. इस अप्रत्याशित माँग पर गुरु जी सहित सब लोग हक्के-बक्के रह गए.....गुरु जी ने दीवान जी से इस अद्भुत माँग का कारण पूछा तो दीवान जी का उत्तर ऐसा था जो रोंगटे खड़े कर दे. दीवान टोडर मल ने उत्तर दिया कि गुरु जी, यह जो भूमि इतना महंगा दाम देकर खरीदी गयी और आपके चरणों में न्योछावर की गयी मैं नहीं चाहता की कल को मेरे वंश आने वाली नस्लों में से कोई कहे की यह भूमि मेरे पुरखों ने खरीदी थी. यह थी निस्वार्थ त्याग और भक्ति की आज तक की सबसे बड़ी मिसाल.......आज किसी धार्मिक स्थल पर चार ईंटे लगवाने पर भी लोग अपने नाम की पट्टी पहले लगवाते हैं. एकपंखा तक लगवाने पर उसके परों पर अपने नाम छपवाते हैं. आज देश में एक फर्जी बलिदानी परिवार अपने आप को सबसे बड़ा बलिदान का प्रतीक बताते हुए पिछले सत्तर वर्षों से देशवासियों को मूर्ख बना रहा है. हमारे पुरखे जो बलिदान देकर गए हैं वह अभूतपूर्व है और इन्ही बलिदानों के कारण ही हम लोगों का अस्तित्व अभी तक है. हमारी इतनी औकात नहीं कि हम इस बलिदान के हजारवें भाग का भी ऋण उतार सकें. यह सब जिन दिनों में हुआ यह वही दिन थे जिन दिनों में आज कल हम मूर्ख भारतीय जोकर जैसे कपड़े पहन कर क्रिसमस जैसे विदेशी त्योहार मनाते हुए बेगानी शादी में दीवाने हुए जाते हैं. त्याग और बलिदान की इस गाथा को अधिक से अधिक लोगों के साथ शेयर कीजिए और अपने पुरखों का मान-सम्मान बढ़ाइए. Ashok kumar, Mob.: 9760104768

बेंगलुरु की फार्मा कंपनी का दावा, कोरोना में कारगर है उसकी दवा

बेंगलुरुः बेंगलुरु की प्रतिष्ठित दवा कंपनी बायोकोन (Biocon) का दावा है कि कोरोनावायरस के इलाज में उसकी दवा कारगर है. डीजीसीआई (Drug Controller General of India) ने इसकी इजाजत दे दी है. इस दवा में एक मरीज के इलाज पर 32 हजार से 48 हजार रुपये प्रति इंजेक्शन का खर्च आएगा. बायोकोन प्रमुख किरण मजूमदार शाह ने इटो-लिजू-मेब (Itolizumab) इंजेक्शन को कोरोना के इलाज में सुरक्षित और भरोसेमंद बताया है. इस दवा का इस्तेमाल सोराईसीस नाम की बीमारी में काफी समय से हो रहा है. बायोकोन प्रमुख किरण मजूमदार शाह ने कहा, हमारी दवा का इस्तमाल कोरोना के माइल्ड और सीवियर दोनों तरह के मरीजों पर असरदार है. ये दवा इम्युन सिस्टम को डी रेग्युलेट कर साइटोकाइन को कंट्रोल करता है. दरअसल इम्युनिटी को बढ़ाने के लिए जब दवा का डोज ज्यादा दिया जाता है तो इम्यून सिस्टम हाइपर एक्टिव हो जाता है ऐसे में मरीज के जिस्म में साइटोकाइन रसायन काफी बनता है जो कि कई बार मौत की वजह बनता है. बायोकोन के मुता. बिक इटो-लिजू-मेब (Itolizumab) के 25 एमजी के 5 एमएल इंजेक्शन की चार डोज एक मरीज के लिए काफी है. लेकिन कुछ मरीजों को 6 डोज भी देनी पड़ सकती है. 4 डोज की कीमत 32 हजार रुपये और 6 कि 48 हजार रुपए है. किरण मजूमदार शाह का कहना है, हमारी दावा से 150 लोग ट्रायल के दौरान ठीक हुए. 20 मरीज कंट्रोल्ड ट्रायल में ठीक हुए. जबकि देश के अलग-अलग हिस्सों में भी इसका ट्रायल हुआ 150 मरीजों पर हुआ और सभो को फायदा हुआ. इटो-लिजू-मेब (Itolizumab) को भले ही सरकार ने इजाजत तो दे दी हो लेकिन इस दवा का असल इम्तेहान तो अब शुरू होगा जब देश भर में इस को मरीजों पर इस्तेमाल किया जायेगा.

सफलता मिले तो घमंड मत करना

एक बार की बात है कि महाभारत के युद्ध में अर्जुन और कर्ण के बीच घमासान चल रहा था. अर्जुन का तीर लगने पे कर्ण का रथ 25-30 हाथ पीछे खिसक जाता , और कर्ण के तीर से अर्जुन का रथ सिर्फ 2-3 हाथ. लेकिन श्री कृष्ण थे की कर्ण के वार की तारीफ किये जाते, अर्जुन की तारीफ में कुछ ना कहते. अर्जुन बड़ा व्यथित हुआ, पूछा , हे पार्थ आप मेरी शक्तिशाली प्रहारों की बजाय उसके कमजोर प्रहारों की तारीफ कर रहे हैं, ऐसा क्या कौशल है उसमे. श्री कृष्ण मुस्कुराये और बोले, तुम्हारे रथ की रक्षा के लिए ध्वज पे हनुमान जी, पहियों पे शेषनाग और सारथि रूप में खुद नारायण हैं. उसके बावजूद उसके प्रहार से अगर ये रथ एक हाथ भी खिसकता है तो उसके पराक्रम की तारीफ तो बनती है. कहते हैं युद्ध समाप्त होने के बाद श्री कृष्ण ने अर्जुन को पहले उतरने को कहा और बाद में स्वयं उतरे. जैसे ही श्री कृष्ण रथ से उतरे , रथ स्वतः ही भस्म हो गया. वो तो कर्ण के प्रहार से कबका भस्म हो चूका था, पर नारायण बिराजे थे इसलिए चलता रहा. ये देख अर्जुन का सारा घमंड चूर चूर हो गया. कभी जीवन में सफलता मिले तो घमंड मत करना, कर्म तुम्हारे हैं पर आशीष ऊपर वाले का है और किसी को परिस्थिति वश कमजोर मत आंकना, हो सकता है उसके बुरे समय में भी वो जो कर रहा हो वो आपकी क्षमता के भी बाहर हो. देवेश निगम (जौनपुर) 8187961053.

www.medicaldarpan.com

AIOCD seeks PM's intervention to streamline Telemedicine Guidelines as per D&C Act & Pharmacy Act to curtail abuse of prescription drugs

The All India Organisation of Chemists & Druggists (AIOCD), a representative body of around 8.5 lakh chemists across the country, has sought intervention of Prime Minister Narendra Modi to streamline the Telemedicine Guidelines in accordance with provisions of Drugs and Cosmetics Act, 1940 and Rules thereunder and Pharmacy Act, 1948 to prevent misuse of prescription drugs posing a risk to public health. On March 25, 2020 Telemedicine Guidelines were notified by the Board of Governors in supersession of Medical Council of India by amending the Indian Medical Council (Professional Conduct, Etiquette and Ethics) Regulation, 2002. Welcoming the guidelines, AIOCD in a letter to the Prime Minister recently stated that telemedicine consultation has the apparent objective to ease access to healthcare for patients. However, in order to make telemedicine consultation effective and protect public health, it should be done in accordance with the provisions of Drugs and Cosmetics Act and Pharmacy Act and Rules made thereunder, said AIOCD president JS Shinde. Shinde said as per the Telemedicine Guidelines, doctors can in professional discretion prescribe medicines via teleconsultation by sending photo, scan and digital copy of a signed prescription or e-prescription to the patient via email or any messaging platform or by transmitting the prescription directly to a pharmacy. Prescribing drugs digitally is contradictory to D&C Act and Pharmacy Act. There are ill consequences of prescription drugs if consumed without medical advice and a significant rise in antibiotic resistance is reported due to drug abuse and self-medication. Rule 65 (11)(c) of the Drugs and Cosmetics Rules, 1945 provides that at the time of dispensing prescription medicines, the pharmacist should stamp the medicines as dispensed on prescription to stop people from getting the same prescription drugs from multiple pharmacies, he pointed out. The Telemedicine Guidelines allow doctors to issue prescription by sending photograph of scanned copy of the prescription to patients. The scanned copy of prescription or photograph of prescriptions is not valid under applicable laws since it cannot be stamped to prevent multiple dispensations. In absence of stamping on prescription, there will be multiple dispensing of prescription which can lead to increase in self-medication. This could subsequently result in antibiotic resistance, said AIOCD president. Outbreaks of a new antimicrobial resistance (AMR) bacteria/superbug will not only cause grave health loss and economic loss to the country but it can also bring disrepute to the country for not taking timely and remedial steps, he cautioned. Antidepressant drug addiction, dependence on sleeping pills, habit forming prescription medicines are well known phenomena in India. Multiple dispensing and over dosages of such medicines can cause impairment of mental faculties and can be fatal. To obviate this risk, Shinde appealed to the central government to establish a national portal on which the doctors can email prescription and the patients or the pharmacist can access the prescription by using a unique OTP. The pharmacist can, after dispensing the prescription, either deface it or specify the quantity of medicine dispensed on the national portal itself so that once the medicines are dispensed the prescription cannot be reused. Until this portal is set up, the doctors should not be allowed to issue scanned prescriptions in telemedicine consultation, he stated. Taking exception to classification of medicines in List O, List A and List B by Telemedicine Guidelines, Rajiv Singhal, general secretary, AIOCD said "D&C Act which medical practitioners and chemists are accustomed with has a different list namely Schedule H, Schedule H1 and Schedule X. The new classification is likely to cause confusion that can lead to wrongful prescribing or wrongful dispensation." Singhal suggested that the List O, List A and List B in the Telemedicine Guidelines should be done away with. AIOCD expressed concern over the location of doctors offering tele-consultation, saying that doctors should be allowed to do tele-consultation only in the same city or town where they are practicing as they have better understanding of recent outbreaks or common symptoms in the local population. The trade body further stated that in case a patient wants to consult a specialist doctor in another city or town, the same should be permitted through a three way consultation between patient, local medical practitioner and the specialist. AIOCD has taken exception to tele-medicine consultation offered by e-pharmacies directly or indirectly, saying that the teleconsultation provided by them amounts to solicitation of patients by doctors as internet pharmacies dole out incentives to the physicians to prescribe medicines. **- Dinesh Gupta 9839056164**

Lupin and Mylan Launch Nepexto, Biosimilar Etanercept in Germany

Mumbai, India- BAD HOMBURG, Germany, August 26, 2020: Lupin Limited (Lupin) and Mylan N.V. (NASDAQ: MYL) announced today the launch of Nepexto, biosimilar etanercept, in the German market. Nepexto is indicated for the treatment of moderate to severe active rheumatoid arthritis, juvenile idiopathic arthritis from the age of 2 years, active and progressive psoriatic arthritis, severe axial spondyloarthritis, moderate to severe plaque psoriasis and chronic severe plaque psoriasis in children and adolescents from the age of 6 years. Nepexto is approved for all therapeutic indications of the reference product Enbrel. Etanercept as an established therapy option The Tumor Necrosis Factor (TNF) inhibitor etanercept was first approved for the treatment of rheumatoid arthritis in Germany in 2000 and since then has offered an effective treatment option for several chronic inflammatory diseases. "TNF inhibitors such as etanercept make it possible to intervene precisely in the inflammatory process," commented Prof. Dr. med. Rieke Alten, chief physician in the Department of Internal Medicine (Rheumatology, Clinical Immunology, Osteology) at the Schlosspark-Klinik Charlottenburg, Berlin. "In patients with moderately severe to severe rheumatoid arthritis who do not respond adequately to basic therapeutics, remission of the disease through therapy with etanercept in combination with methotrexate is a quite realistic therapeutic goal. Rheumatologists have many years of clinical experience with this substance in terms of its efficacy and safety profile. Rheumatologists particularly like to opt for etanercept when 'safety first' is the top priority. Besides rheumatoid arthritis, this TNF inhibitor is also firmly established in other rheumatological indications." Simple application by means of pre-filled pen Nepexto is available as a solution for injection in a pre-filled pen and pre-filled syringe. Data show a high patient acceptance of the easy-to-handle pre-filled pen. Patients favored this latex-free device for self-injection, which can lead to improvement in compliance. Cost-effective treatment with Nepexto, with an equivalent efficacy and safety to reference product Enbrel, is an attractive cost-effective treatment alternative that can contribute to sustainable healthcare and treatment options. The European Commission approved the marketing authorization of Nepexto. The biosimilar received a favorable opinion from the Committee for Medicinal Products for Human Use (CHMP). The CHMP concluded that the development program including analytical, functional, clinical and immunogenicity data, demonstrated biosimilarity with its reference product, Enbrel. Thierry Volle, President, EMEA, Lupin said, "We are excited to bring Nepexto in Germany. Nepexto is our first biosimilar to receive regulatory approval in Europe. This launch is a remarkable milestone for our biosimilar group and we are glad that we are able to bring an affordable biosimilar to the European market through our partner Mylan. Biosimilars like Nepexto will play a vital role in expanding access to effective treatment for multiple therapies including rheumatoid arthritis." Dr. Maximilian von Wülfing, Managing Director of Mylan Germany said, "Germany is the first country in Europe to introduce Nepexto, the etanercept from Mylan. The approval of Nepexto (etanercept) by the European Medicines Agency (EMA) once again underlines the scientific success of Mylan's biologics program. To date Mylan has launched and commercialized four biosimilar products in Germany, two in immunology and two in oncology. Mylan offers a comprehensive and diverse biologics pipeline, and we want to make as many of these complex drugs as possible available to patients in Germany." Nepexto is the second immunology product to be introduced into the German market. In addition to Hulio, an adalimumab biosimilar, Nepexto expands Mylan's therapeutic portfolio for the effective treatment of various immune-mediated diseases including rheumatoid arthritis. **About Etanercept-** Etanercept is an injectable biologic medicine that inhibits the biological activity of Tumor Necrosis Factor (TNF). TNF is a key cytokine involved in the pro-inflammatory cascade in many chronic, immune-mediated inflammatory diseases such as rheumatoid arthritis, psoriatic arthritis, axial spondyloarthritis and plaque psoriasis. Etanercept as a soluble TNF receptor fusion protein specifically binds to TNF and blocks its activity, thereby reducing inflammation and disease symptoms. **About Lupin-** Lupin is an innovation-led transnational pharmaceutical company headquartered in Mumbai, India. The Company develops and commercializes a wide range of branded and generic formulations, biotechnology products and APIs in over 100 markets in the U.S., India, South Africa and across Asia Pacific (APAC), Latin America (LATAM), Europe and Middle-East regions. The Company enjoys leadership position in the cardiovascular, anti-diabetic, and respiratory segments and has significant presence in the anti-infective, gastro-intestinal (GI), central nervous system (CNS) and women's health areas. Lupin is the third largest pharmaceutical company in the U.S. by prescriptions and in India by global revenues. The Company invests 9.6 % of its revenues on research and development. Lupin has fifteen manufacturing sites, seven research centres, more than 20,000 professionals working globally, and has been consistently recognized as a 'Great Place to Work' in the Biotechnology & Pharmaceuticals sector.

Glenmark appoints Dipankar Bhattacharjee to its Board of Directors

Mr. Bhattacharjee was previously President & CEO – Global Generic Medicines of Teva Pharmaceutical Industries Ltd and has over thirty years of global pharmaceutical experience Mumbai, India: Glenmark Pharmaceuticals, a research-led, integrated global pharmaceutical company, announced the appointment of Mr. Dipankar Bhattacharjee as Independent Non-Executive Director on the Board of the organization for a period of five years with effect from 14th August, 2020. Mr. Bhattacharjee comes with over 30 years of global experience in leading Generics, Specialty and OTC Pharma, Medical Devices, and FMCG businesses. He has led high performing teams to develop and execute business strategies across all stages of business cycles, driving growth and value through commercial innovation and focused R&D investments. In his previous role, Mr. Bhattacharjee held various senior leadership positions at Teva Pharmaceutical Industries, including President & CEO - Global Generics Medicines, Officer and Member Teva Executive Committee (TEC), and Co-chair in JVs with P&G and Takeda Pharmaceuticals. With strong orientation towards stakeholders including investors, customers and consumers, and deep understanding of payers and regulators, he has consistently delivered short term and long term results across multiple geographies and business environments. Before Teva, Mr. Bhattacharjee worked with leading global organizations such as Bausch & Lomb, Bank of America and Nestle. He holds a Master's degree in Management Studies from Jamnalal Bajaj Institute of Management Studies, University of Mumbai, and a Bachelor's degree in Economics from St. Stephen's College, University of Delhi.

Unichem Laboratories Limited is pleased to announce that it has received ANDA approval for its Amiodarone Tablets, USP, 200 mg

Unichem Laboratories Limited is pleased to announce that it has received ANDA approval for its Amiodarone Tablets, USP, 200 mg from the United States Food and Drug Administration (USFDA) to market a generic version of CORDARONE® (amiodarone) tablets of Wyeth Pharmaceuticals Inc. Amiodarone tablets are indicated for the treatment of documented, life-threatening recurrent ventricular fibrillation and life-threatening recurrent hemodynamically unstable tachycardia in adults who have not responded to adequate doses of other available antiarrhythmics or when alternative agents cannot be tolerated. The product will be commercialized from Unichem's Ghaziabad Plant. About Unichem Laboratories Limited Unichem Laboratories Limited is an international, integrated, specialty pharmaceutical company. It manufactures and markets a large basket of pharmaceutical formulations as branded generics as well as generics in several markets across the world. In India, The Company has strong skills in product development, process chemistry and manufacturing complex API as well as dosage forms. More information about the Company can be found at www.unichemlabs.com For more information please contact: Mr. Pradeep Bhandari Ph: +91-22-66888 404 E-mail: pradeep.bhandari@ unichemlabs.com.

Abbott wins U.S. approval for rapid Covid-19 test

Abbott Laboratories said won U.S. marketing approval for a Covid-19 portable test that can deliver results within 15 minutes. The U.S. Food and Drug Administration granted the approval under its emergency use authorization program.The portable test, BinaxNOW Covid-19 Ag Card, is for use by healthcare professionals at hospitals and labs, and Abbott plans to sell the tests for $5 each. The United States now has more cases of the coronavirus than any other country, and hospitals and labs have struggled to meet the demand to test thousands of people. Abbott expects to ship tens of millions of tests in September, ramping to 50 million tests a month from the beginning of October. Since March, the company has got U.S. authorizations for five coronavirus tests, including one that can deliver results within minutes and is used at the White House.

Lupin Launches Zileuton Extended-Release Tablets

Mumbai: Pharma major Lupin Limited (Lupin) announced the launch of Zileuton Extended-Release Tablets, 600 mg, having received approval from the United States Food and Drug Administration (U.S. FDA) earlier. The product would be manufactured at Lupin's Nagpur facility, India. Zileuton Extended-Release Tablets, 600 mg, is the generic equivalent of Zyflo CR® Extended-Release Tablets, 600 mg, of Chiesi USA, Inc. and is indicated for the prophylaxis and chronic treatment of asthma in adults and children 12 years of age and older. Zileuton Extended-Release Tablets (RLD: Zyflo CR®) had annual sales of approximately USD 40 million in the U.S. (IQVIA MAT June 2020). Lupin is an innovation-led transnational pharmaceutical company headquartered in Mumbai, India. The Company develops and commercializes a wide range of branded and generic formulations, biotechnology products and APIs in over 100 markets in the U.S., India, South Africa and across Asia Pacific (APAC), Latin America (LATAM), Europe and Middle-East regions.The Company enjoys a leadership position in the cardiovascular, anti-diabetic, and respiratory segments and has a significant presence in the anti-infective, gastro-intestinal (GI), central nervous system (CNS), and women's health areas. Lupin is the third largest pharmaceutical company in the U.S. by prescriptions and in India by global revenues. The Company invests 9.6 % of its revenues on research and development. Lupin has fifteen manufacturing sites, seven research centers, more than 20,000 professionals working globally, and has been consistently recognized as a 'Great Place to Work' in the Biotechnology & Pharmaceuticals sector.

www.medicaldarpan.com
www.medicaldarpan.in

AUTHORIZED DISTRIBUTORS OF ADR BOOK

Location	Party Name	Contact No.
Agra	Satish Book Enterprises	9997877123
Ahmedabad	Bharat Medical Book House	9824013920
Akola	Book Emporium	9422861751
Aligarh	Rama Book Store	9319275252
Allahabad	Chetana Medical Books	9307978423
Amritsar	City Book Shop	0183-2571591
Amritsar	Medical Books & Surgicals Centre	0183-2422729
Aurangabad	Arihant Excel Medical Book House	9822259681
Aurangabad	Shri Samarth Book Depot	9822034577
Belgaun	Shri Ganesh Book Stall	8312461258
Berhampur	Book World	9861015189
Bhagalpur	Kora Kagaz	9771511779
Bhopal	Lyall Book Depot	0755-2543624
Bhubaneswar	Annapurna Medical Book Shop	9861243882
Bikaner	Academy Book Centre	9414138998
Burla	Bharat Book Emporium	9337335744
Calicut	Ramdas Sotes & Books	0495-2358398
Chennai	Chennai Medical Book Centre	044-66246369
Chennai	Shah Medical Books	9444829937
Coimbatore	Arasu Medical Book House	9444308567
Coimbatore	Balaji Medical Books	0422-6725292
Coimbatore	Dass Medical Book Shop	9443958620
Cuttack	Scientific Book Depot	9437020414
Delhi	Mirza Book Depot	9958723206
Delhi	Pawan Book Service	9810202316
Delhi	R.S.Book Store	9810546759
Delhi	Sagar Book Depot	9811680722
Delhi	University Book Store	9818357577
Dhulea	Koshal Book Shop	9423916592
Gorakhpur	Medical Book Centre	9450884543
Gwalior	Anand Pustak Sadan	9425114555
Indore	New Jain Book Stall	9926636333
Indore	Scientific Literature Company	9826299744
Jabalpur	Lords Book Sellers	9425155125
Jabalpur	Akash Pustak Sadan	9826563047
Jaipur	Kumar Medical Book Store	9829610430
Jammu	Bhartiya Pustakalaya	9796636000
Jammu	Narend Book Depot	9419114398
Jamnagar	Jay Medical Book Centre	9925236982
Jodhpur	Book World	9829088088
Jorhat	Naveen Pustakalaya	9435514204
Kolhapur	Ajab Pustakalaya	9881424434
Kolkata	Raj Book House	9432550891
Kota	R.K.Stationers	9829087574
Koti Hyderabad	Osmani Medical Book House	040-64644253
Koti Hyderabad	Paras Medical Books Pvt Ltd.	040-24600869
Koti Hyderabad	Sharp Medical Book Centre	040-65544303
Lucknow	Aditya Medical Books Pvt Ltd.	0522-2611724
Lucknow	Arora Book Agencies	0522-4046778
Ludhiana	Verma Book Depot	9872202530
Madurai	Medical Books & International	9344101063
Meerut	City Book Centre	0121-4056292
Meerut	Menakshi Prakashan	0121-2645498
Meerut	R LAL Book Depot	0121-2666235
Mumbai	The National Book Depot	022-24131362
Mumbai	Vikas Medical Book House Pvt Ltd.	022-23010441
Mumbai	Bhalani Medical Book House	022-24171660
Nagpur	New Medical Book Shop	9822225591
Nagpur	Book Source	9850943011
Patna	Current Book Service	9431077745
Pune	J D Granth Bhandar	020-24492832
Raipur	S.K.Medical Book House	9329637397
Raipur	Sristhi Book Stationery Mart	9300855027
Rajkot	Jay Books Medical Book	9925236984
Ranchi	Student Book Depot	0651-2221907
Saharanpur	Hans Pustak Bhandar	9457449388
Sangli	Tanavade & Sons	9823049499
Sri Nagar	Doctors Dotkom	9086454647
Tirupati	Shri Venketswar Book Depot	9885479105
Trivandram	Professional Book House	9495951506
Varanasi	Atithi Medical Books	9307978423
Varanasi	Current Book Agency	9335015235
Visakhapatnam	Andhra Medical Book Centre	9985716032
Visakhapatnam	World Medical Book Centre	9849022192

Wockhardt announces COVID-19 vaccine partnership with UK Government

Wockhardt, the global pharmaceutical and biotechnology major today announced that it has entered into an agreement with the UK Government to fill finish COVID-19 vaccines. The manufacturing will be undertaken at CP Pharmaceuticals, a subsidiary of Wockhardt based in Wrexham, North Wales. As per the terms of the agreement the company has reserved manufacturing capacity to allow for the supply of multiple vaccines to the UK Government in its fight against COVID19, including AZD1222, the vaccine co-invented by the University of Oxford and its spinout company, Vaccitech and licensed by AstraZeneca. Dr Habil Khorakiwala, Founder Chairman of Wockhardt emphasised, "The pandemic of COVID-19 is a challenge for all and needs a concerted effort to overcome. We are proud to be collaborating with the UK Government to make vaccines available and the arrangement brings in a huge sense of purpose and pride, it upholds our ongoing commitment to fight against such a pandemic of global human importance. As a global organisation, we are focussed and committed to assist in mitigating the worldwide impact of COVID-19." Alok Sharma, Secretary of State for Business, Energy and Industrial Strategy, Government of U.K said, "Ensuring the UK has the capability to research, develop and manufacture a safe and effective vaccine is critical in our fight against coronavirus. www.wockhardt.com "Today we have secured additional capacity to manufacture millions of doses of multiple Covid-19 candidates, guaranteeing the supply of vaccines we need to protect people across the UK rapidly and in large numbers." Speaking about the contract Ravi Limaye, Managing Director Wockhardt UK said, "We are immensely proud to have been selected to partner with the UK Government on this project. In doing so we are taking a lead role in the nation's fight against pandemic of COVID-19". "We have a sophisticated sterile manufacturing facility and a highly skilled workforce. We expect to start delivering the first doses of the vaccine later this year." He added. The government has reserved one fill and finish production line for its exclusive use for the next 18 months in order to guarantee the supply of vaccines required to fight COVID-19 in the UK. Dr Murtaza Khorakiwala, Managing Director and Global CEO of Wockhardt adds, "The arrangement with the UK Government for manufacturing vaccines for COVID-19 showcases our global strength in world class sterile injectable facilities and capacity. With four decades of expertise and experience behind us we are able to quickly scale to manufacture and assist in mitigating the worldwide impact of COVID-19." Kate Bingham, Chair of U.K. Vaccines Task Force said, "Never before have we needed to find and manufacture a vaccine at this speed and scale in order to protect the UK population. We have made significant progress in securing a diverse portfolio of potential vaccines and treatments for Covid-19, adding a fourth vaccine candidate from GSK and Sanofi last week. However, discovering a successful vaccine is only part of the solution, we also need to be able to manufacture it. Fill Finish is a critical step in the process to get the vaccine in a form to be given to patients. The agreement with Wockhardt will boost our capability to ensure that from the moment a successful vaccine is identified we will be Wockhardt Limited | D-4, MIDC,Chikalthana | | Aurangabad| |Maharashtra|| 431 006 | |India | | Tel.: +91-22-2653 4444 | | www.wockhardt.com able to produce the quantities of vaccine required, as quickly as possible, for the people who need it." Wockhardt is a global pharmaceutical and biotech organisation that brings affordable, high quality medicines to market. In the UK, Wockhardt is one of the largest suppliers into the NHS for over 20 years, has had a presence in Wrexham for over two decades and employs over 400 people at its 612,000 square feet high-tech manufacturing facility.

GMP CERTIFIED PRODUCTS
MS
We Believe in QUALITY ASSURANCE
Medisun Square Pharmaceuticals
GMP
Committed to excellence in Healthcare Service
Third Party Manufacturing
We have facility for 3rd Party Manufacturing Small Batch in Beta Lactum & Non Beta Lactum Tablets, Capsules, Liquid Orals Injectables,Medicated Soaps, Ointments, Cream,Herbal & Nutraceuticals etc..
FRANCHISEE/PCD
For Marketing & Distribution with Monopoly Rights
A Wide Range of
Tablets, Capsules, Syrups, Dry Syrup, Dry Injections, Liquid Injections, Nutraceuticals & Dietary Supplement, Protein Powder, Herbal Products etc.
We Provide You
Monopoly Rights, Visual Aids, Samples Catch Cover, Gift Articles Promotional Materials etc.
For Business Enquiry : +91 7060232501, 7060038501
For Business Enquiry Just SMS (Your Name & Address) to 07060038501
Medisun Square Pharmaceuticals
Registered Office & Work:
Plot No. 46,47, I.P.-II, Sidcul Bypass Road, Bhadrabad,Haridwar-249402 (U.K.)
E-Mail: medisunsquare1@gmail.com

New drug RLF100 shows dramatic recovery in Covid-19 patients suffering respiratory failure

Aviptadil is a formulation of Vasoactive Intestinal Polypeptide (VIP), which is present in high concentrations in the lungs and known to block various inflammatory cytokines. NeuroRx and Relief Therapeutics have partnered to develop the drug. HOUSTON: Doctors at a hospital here have used a new drug called RLF-100, also known as aviptadil, that has led to rapid recovery from respiratory failure in critically ill Covid-19 patients. The drug has been approved by the FDA for emergency use at multiple clinical sites in patients who are too ill to enter the FDA's Phase 2/3 trials. Houston Methodist Hospital was the first to report the rapid recovery of patients on ventilators and those with severe medical conditions after three days of treatment. Aviptadil is a formulation of Vasoactive Intestinal Polypeptide (VIP), which is present in high concentrations in the lungs and known to block various inflammatory cytokines. NeuroRx and Relief Therapeutics have partnered to develop the drug. According to a statement from the drug maker NeuroRX, independent researchers have reported that aviptadil blocked replication of the SARS coronavirus in human lung cells and monocytes. According to the report, a 54-year-old man who contracted Covid-19 while being treated for rejection of a double lung transplant came off a ventilator within four days. And, similar results were seen in more than 15 patients. The drug appeared to have rapidly cleared pneumonitis findings on an X-ray, improved blood oxygen and a 50 per cent or greater average decrease in laboratory markers associated with Covid-19 inflammation, the statement said. "No other antiviral agent has demonstrated rapid recovery from viral infection and demonstrated laboratory inhibition of viral replication," said Prof. Jonathan Javitt, CEO and Chairman of NeuroRx. "We are conducting placebo-controlled trials to see whether the observations made in the case-control and open-label studies will be confirmed for less ill patients with Covid-19-related respiratory failure. Our independent Data Monitoring Committee will be conducting an interim analysis of these data later this month," Javitt said. - **Sumit Pawa Kanpur, Mob.: 70840 00070.**

Lupin Receives Approval for Generic Albuterol Sulphate MDI

Mumbai: Pharma major Lupin Limited (Lupin) announced today that it has received approval from the United States Food and Drug Administration (U.S. FDA) for its Albuterol Sulfate Inhalation Aerosol, 90 mcg (base)/actuation, a generic version of ProAir HFA. Lupin's generic Albuterol Sulphate MDI will be manufactured at its Indore (Unit III) facility in India. ProAir HFA (Albuterol Sulfate Inhalation Aerosol) is the registered trademark of Teva Branded Pharmaceutical Products R&D, Inc. (Teva) and is indicated for the treatment of acute episodes of bronchospasm or prevention of asthmatic symptoms. Commenting on the development, Vinita Gupta, CEO, Lupin said, "Approval of our generic Albuterol MDI is a significant milestone in our complex generics evolution and a validation of our Inhalation team's development capabilities, backed by our global manufacturing strength in handling multiple dosage forms. The approval is timely as Albuterol MDI is a key rescue inhalation product for asthma patients who are at an increased risk of COVID-related complications. We look forward to launching the product this quarter and expect a steady ramp-up through the fiscal year." The total Albuterol Sulfate Inhalation Aerosol market had U.S. sales of approximately US$2.9 billion, of which the ProAir® HFA market accounted for US$1.3 billion (IQVIA MAT June 2020). **About Lupin-** Lupin is an innovation-led transnational pharmaceutical company headquartered in Mumbai, India. The Company develops and commercializes a wide range of branded and generic formulations, biotechnology products and APIs in over 100 markets in the U.S., India, South Africa and across Asia Pacific (APAC), Latin America (LATAM), Europe and Middle-East regions. The Company enjoys leadership position in the cardiovascular, anti-diabetic, and respiratory segments and has significant presence in the anti-infective, gastro-intestinal (GI), central nervous system (CNS) and women's health areas. Lupin is the third largest pharmaceutical company in the U.S. by prescriptions and in India by global revenues. The Company invests 9.6 % of its revenues on research and development. Lupin has fifteen manufacturing sites, seven research centers, more than 20,000 professionals working globally, and has been consistently recognized as a 'Great Place to Work' in the Biotechnology & Pharmaceuticals sector.

Biocon Biologics and Voluntis Join Hands for Global Collaboration on Digital Therapeutics for Insulins

Biocon Biologics India Limited, a fully integrated 'pure play' biosimilars company, a subsidiary of Biocon Ltd. (BSE code: 532523, NSE: BIOCON), and Voluntis (Euronext Paris, Ticker: VTX - ISIN: FR0004183960), a leader in digital therapeutics, today announced a global collaboration agreement between Biocon Biologics' subsidiary Biocon Sdn. Bhd., Malaysia and Voluntis to develop and distribute innovative digital therapeutics supporting people with diabetes on biologics therapy. The licensing agreement will make Biocon Biologics one of the first insulins companies to offer a U.S. Food and Drug Administration-cleared and CE-marked, highly validated digital therapeutic product, Insulia®, to Type 2 diabetes patients, across several markets in the world. Insulia® provides automated insulin dose recommendations enabling people with diabetes to self-manage their condition and healthcare teams to remotely monitor progress. Insulia® is the first digital therapeutic with regulatory clearance to provide automated titration recommendations for all types of basal insulins. The demand for at-home treatment and telemedicine solutions is dramatically increasing around the world, with select healthcare systems offering reimbursement for patients eligible for digital therapeutic solutions. Biocon Biologics aspires to reimagine the patient ecosystem by developing a technology dependent operating model that enables personalization of care, thus going beyond the product to reduce both the cost of the drug as well as the cost of administering the drug. This is aligned with the organization's philosophy of keeping patients at the core of the business. It seeks to gather insights from patients through digitally enabled platforms and then leverage data science to integrate these insights into its development programs enabling it to design a service or solution around the patient. By leveraging best-in-class digital therapeutic solutions, Biocon Biologics wants to focus on enhancing the patient experience. Christiane Hamacher, CEO and Managing Director, Biocon Biologics, said: "We are delighted to collaborate with Voluntis for this unique digital therapeutic solution that has U.S. FDA clearance and a CE mark to help manage the treatment of Type 2 diabetes. Biocon Biologics will be one of the first insulin companies globally to offer this innovation for the benefit of people with diabetes. We believe pairing our products with a digital therapeutic solution will help improve patient outcomes and reduce costs to healthcare systems in the long term. We remain committed to impact patients' lives through innovative solutions." Pierre Leurent, CEO of Voluntis: "We are excited to partner with Biocon Biologics, a leading global player committed to expanding patients' access to premier biologics while caring about treatment affordability. By combining best-in-class digital and therapeutic solutions, we aim to transform treatment experiences and advance new business models. This collaboration will help patients around the globe achieve optimal outcomes on their insulin journey, and illustrates digital therapeutics' growing importance as part of the new standards of care." Once developed, the Insulia® digital companion will be offered to people with Type 2 diabetes using Biocon Biologics' insulins, in key global markets. Going forward, by extending the Insulia® platform to its complete range of insulin products, including Recombinant Human Insulin, Insulin Glargine and Insulin Aspart, Biocon Biologics will create a comprehensive digital therapeutics portfolio for patients. Notes: CE Mark: The Conformité Européenne (CE) Mark is defined as the European Union's (EU) mandatory conformity marking for regulating the goods sold within the European Economic Area (EEA) since 1985. The CE marking represents a manufacturer's declaration that products comply with the EU's New Approach Directives. **About Insulia®** Insulia® provides automated insulin dose recommendations and coaching messages for people with diabetes while enabling the healthcare team to remotely monitor progress. A healthcare practitioner prescribes Insulia® using their dedicated web portal and sets up the treatment plan rules that will adjust basal insulin dosing based on the person's specific needs. The user then receives an activation code to get started with their personalized app. Once downloaded, the app uses blood glucose readings and any hypo symptoms to recommend doses in real-time. These are constantly updated using clinical algorithms built into the application. Data is automatically shared with the healthcare team, who can remotely monitor the patient's progress towards their goal thanks to tailored notifications. This enables providers to deliver tailored telemedicine services, a practice increasingly supported by payers worldwide. **About Biocon Biologics India Ltd.** Biocon Limited's subsidiary Biocon Biologics India Limited is uniquely positioned as a fully integrated 'pure play' biosimilars organization in the world. Building on the four pillars of Patients, People, Partners and Business, Biocon Biologics is committed to transforming healthcare and transforming lives. Biocon Biologics is leveraging cutting-edge science, innovative tech platforms and advanced research & development capabilities to lower treatment costs while improving healthcare outcomes. It has a platform of 28 biosimilar molecules across diabetes, oncology, immunology, dermatology, ophthalmology, neurology, rheumatology and inflammatory diseases. Five molecules from Biocon Biologics' portfolio have been taken from lab to market, of which three have been commercialized in developed markets like EU, Australia, United States, Canada and Japan. It aspires to benefit 5 million patient lives with its biosimilars and attain a revenue milestone of USD 1 billion in FY22.

Lupin Launches Favipiravir Drug Covihalt for Treatment of Mild to Moderate COVID-19

Mumbai, India- Lupin Limited announced the launch of its Favipiravir in India under the brand name Covihalt® for the treatment of mild to moderate COVID-19. Favipiravir has received authorization from the Drug Controller General of India (DCGI) for emergency use. Lupin's Covihalt® dosage strength has been developed keeping in mind the convenience of administration. It is available as 200 mg tablets in the form of a strip of 10 tablets and priced at Rs. 49 per tablet. Commenting on the development, Rajeev Sibal, President – India Region Formulations (IRF) said, "Lupin has always been committed to the fight against life-threatening diseases. COVID-19 is a global pandemic and in India, we are seeing a surge in the number of cases on a daily basis. In these tough times, it is our duty to support the nation in fighting this pandemic and ensuring affordable drugs are made available for impacted patients. Covihalt®, Lupin's Favipiravir drug, is a vital step in this direction. We believe that we can leverage our expertise in managing widespread community diseases like TB to proactively reach patients across India and ensure access to Covihalt® through our strong distribution network and field force." According to Dr. Rajesh Swarnakar, National Secretary Indian Chest Society, "In any pandemic, it is imperative to enforce rapid health management efforts which include disease control through effective and safe medication. Favipiravir has shown excellent results in the treatment of mild to moderate COVID-19. We remain optimistic about its indispensable role in combating the disease." Dr. Agam Vora, Ex-President of Geriatric Society Of India, added, "More than ever before, it is at this time that we need pharma companies to come together and direct their resources at fulfilling the need for affordable, effective and safe drugs for the treatment of COVID-19. Favipiravir is one such option that has demonstrated highly effective results in clinical studies with an efficacy of over 80%, without any significant safety concern."

Alembic Pharmaceuticals receives USFDA Final Approval for Vardenafil . Hydrochloride Tablets, 2.5 mg (base). 5 mg (base), 10 mg (base), and 20 mg (base).

Alembic Pharmaceuticals Limited announced that the Company has received final approval from the US Food & Drug Administration (USFDA) for its Abbreviated New Drug Application (ANDA) Vardenafil Hydrochloride Tablets, 2.5 mg (base), 5 mg (base), 10 mg (base), and 20 mg (base). The approved ANDA is therapeutically equivalent to the reference listed drug product (RLD), Levitra Tablets, 2.5 mg, 5 mg, 10 mg, and 20 mg, of Bayer Healthcare Pharmaceuticals Inc. (Bayer). Vardenafil Hydrochloride Tablets are indicated for the treatment of erectile dysfunction. Vardenafil Hydrochloride Tablets have an estimated market size of US$ 35 million for twelve months ending June 2020 according to IQVIA. Alembic now has a total of 127 ANDA approvals (112 final approvals and 15 tentative approvals) from USFDA. About Alembic Pharmaceuticals Limited Alembic Pharmaceuticals Limited, a vertically integrated research and development pharmaceutical company, has been at the forefront of healthcare since 1907. Headquartered in India, Alembic is a publicly listed company that manufactures and markets generic pharmaceutical products all over the world. Alembic's state of the art research and manufacturing facilities are approved by regulatory authorities of many developed countries including the USFDA. Alembic is one of the leaders in branded generics in India. Alembic's brands, marketed through a marketing team of over 5000 are well recognized by doctors and patients.

Piramal Pharma Announces Integrated Development Program with Bolt Biotherapeutics

Piramal Pharma Announces Integrated Development Program with Bolt Biotherapeutics for Immune-Stimulating Antibody Conjugates and Sterile Fill-Finish Piramal Pharma Solutions (PPS) provides integrated services including formulation¦ development, antibody drug conjugates and lyophilized drug product in vials PPS is handling production of Bolt's Boltbody™ Immune Stimulating Antibody Conjugate (ISAC), BDC-1001, currently in a first-in-human Phase 1/2 clinical study for treatment of cancer patients Mumbai, India, July 29, 2020: Piramal Pharma Solutions, a leading contract development and manufacturing organization (CDMO), today announced that it is providing Bolt Biotherapeutics (Bolt) with the supply of both the BDC-1001 ISAC drug substance and the drug product for Bolt's ongoing Phase 1/2 clinical study in cancer patients. The Piramal Pharma Solutions (PPS) team is applying its integrated drug development model to Bolt's BDC-1001 for the treatment of patients with HER2-expressed solid tumors. The program encompasses formulation development and ISAC development and manufacture at PPS' Grangemouth, UK site. The drug substance is then processed into lyophilized, sterile fill-finish vials at PPS's Lexington, KY, U.S. site. This seamless integration across two PPS sites, which shortens delivery timelines and expedites distribution to clinic, is an example of PPS' patient-centric philosophy. According to Peter DeYoung, Chief Executive Officer, Piramal Pharma Solutions, "Bolt's technology platform has demonstrated significant, positive data in preclinical models, including the development of immunological memory against tumors, and is now in a human clinical trial. The manufacturing of ISACs utilizes essentially the same process as antibody drug conjugate (ADC) manufacturing, enabling us to capitalize on our deep expertise in this space. Our ability to produce these novel ISACs and package them for clinical trials in one efficient, integrated process compresses the timeline of the development of Bolt's drug. We remain committed to our patient-centric approach and are proud to partner with an industryleader like Bolt to help reduce the burden of disease on patients." Nathan Ihle, VP CMC & Quality for Bolt Biotherapeutics, added, "Bolt is a leader in ISAC technology, and our partnership with Piramal Pharma Solutions is important to bring our technology to the clinic. Piramal's experience in the manufacture of commercial ADCs provides Bolt with a reliable partner for the development of BDC-1001." The first cycle of drug substance to drug product manufacturing has been successfully completed through PPS' integrated program. Additional cycles are in progress, as are further developmentsthat will benefit future indications and new clinical programs. About Piramal Pharma Solutions: Piramal Pharma Solutions is a contract development and manufacturing organization (CDMO), offering end-toend development and manufacturing solutions across the drug life cycle. We serve our clients through a globally integrated network of facilities in North America, Europe and Asia. This enables us to offer a comprehensive range of services including Drug Discovery Solutions, Process & Pharmaceutical Development services, Clinical Trial Supplies, Commercial supply of APIs and Finished dosage forms. We also offer specialized services like development and manufacture of Highly Potent APIs and Antibody Drug Conjugation. Our capability as an integrated service provider & experience with various technologies enables us to serve Innovator and Generic companies worldwide.

सर्वोच्च न्यायालय के अनुसार पुलिस अधिकारी ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स की जांच नही करेंगे

सर्वोच्च न्यायालय ने शुक्रवार को दिए गए एक फैसले में कहा है कि, पुलिस अधिकारी ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स अधिनियम, 1940 के अध्याय IV के तहत संज्ञेय अपराध के संबंध में एफआईआर, गिरफ्तारी, मुकदमा या जांच दर्ज नहीं कर सकते हैं. जस्टिस संजय किशन कौल और केएम जोसेफ की पीठ ने कहा कि ड्रग्स इंस्पेक्टर द्वारा बिना किसी वारंट के अधिनियम के अध्याय IV के तहत आने वाले संज्ञेय अपराधों के संबंध में गिरफ्तारी की जा सकती है और अन्यथा इसे संज्ञेय अपराध माना जा सकता है. इस प्रकार इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले को बरक. रार रखते हुए अदालत ने ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स एक्ट के तहत दर्ज अपराध के संबंध में पुलिस द्वारा दर्ज एक प्राथमिकी को रद्द कर दिया. केंद्र ने उच्च न्यायालय के फैसले का समर्थन करते हुए शीर्ष अदालत से संपर्क किया था, जिसमें कहा गया था कि सीआरपीसी के तहत एफआईआर अधिनियम के संबंध में दर्ज नहीं की जा सकती. अपील खारिज करते हुए, पीठ ने निम्नलिखित निष्कर्ष दिए: अधिनियम की धारा 32 और सीआरपीसी की योजना के मद्देनजर अधिनियम के अध्याय IV के तहत संज्ञेय अपराधों के संबंध में, पुलिस अधिकारी ऐसे अपराधों के संबंध में अपराधियों पर मुकदमा नहीं चला सकता है. केवल धारा 32 में उल्लिखित व्यक्ति ही ऐसा करने के हकदार हैं. हालांकि, पुलिस अधिकारी के लिए कोई रोक नहीं है, हालांकि, उस व्यक्ति की जांच करने और उस पर मुकदमा चलाने के लिए जहां उसने अपराध किया है, जैसा कि अधिनियम की धारा 32 (3) के तहत कहा गया है, अर्थात, यदि उसने किसी अन्य कानून के तहत कोई संज्ञेय अपराध किया है. सीआरपीसी की योजना के बारे में और अधिनियम की धारा 32 के शासनादेश के संबंध में और अधिनियम के तहत ड्रग्स इंस्पेक्टर के पास उपलब्ध शक्तियों और पुलिस कर्तव्यों पर भी, एक पुलिस अधिकारी धारा 154 के तहत प्राथमिकी दर्ज नहीं कर सकता है. सीआरपीसी, अधिनियम के अध्याय IV के तहत संज्ञेय अपराधों के संबंध में और वह सीआरपीसी के प्रावधानों के तहत ऐसे अपराधों की जांच नहीं कर सकता है. अधिनियम की धारा 22 (1) (डी) के प्रावधानों के संबंध में, हम मानते हैं कि ड्रग्स इंस्पेक्टर द्वारा बिना किसी वारंट के अधिनियम के अध्याय IV के तहत आने वाले संज्ञेय अपराधों के संबंध में एक गिरफ्तारी की जा सकती है और अन्यथा इसका इलाज किया जा सकता है. एक संज्ञेय अपराध. हालाँकि, वह कानून द्वारा बाध्य है जैसा कि डी.के. बसु (सुप्रा) और सीआरपीसी के प्रावधानों का पालन करना. ऐसा प्रतीत होता है कि इस समझ पर कि पुलिस अधिकारी एफआईआर दर्ज कर सकता है, ऐसे कई मामले हैं जहां अधिनियम के अध्याय IV के तहत संज्ञेय अपराधों के संबंध में एफआईआर दर्ज की गई हैं. हम सीखे गए एमिकस क्यूरीए द्वारा उठाए गए स्टैंड में पदार्थ ढूंढते हैं और निर्देश देते हैं कि वे ड्रग्स इंस्पेक्टरों को बनाए जाएं, अगर पहले से ही नहीं बनाए गए हैं, और ड्रग्स इंस्पेक्टर के लिए कानून के अनुसार उसी पर कार्रवाई करना है. हमें इस संबंध में भारत के संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत अपनी शक्ति का सहारा लेना चाहिए. इसके अलावा, हम यह मानते हैं कि गिरफ्तारी की शक्ति से संबंधित कानून की समझ पर कई मामलों में, वास्तव में, वर्तमान मामले के तथ्यों से बेदखल होकर, पुलिस अधिकारियों ने अपराधों के संबंध में गिरफ्तारी की होगी अधिनियम के अध्याय IV के तहत. इसलिए, गिरफ्तारी की शक्ति के संबंध में, हम यह स्पष्ट करते हैं कि हमारा निर्णय कि पुलिस अधिकारियों को अधिनियम के अध्याय प्ट के तहत संज्ञेय अपराधों के संबंध में गिरफ्तारी की शक्ति नहीं है, इस निर्णय की तारीख से प्रभावी रूप से काम करेंगे. हम आगे निर्देश देते हैं कि गिरफ्तारी को अंजाम देने वाले ड्रग्स इंस्पेक्टरों को न केवल गिरफ्तारी की सूचना देनी चाहिए, जैसा कि सीआरपीसी की धारा 58 में दिया गया है, लेकिन तुरंत गिरफ्तारी की रिपोर्ट उनके बेहतर अधिकारियों को भी देनी चाहिए. **Sunil Gupta, Mob.: 7752809563.**

अमेरिका फार्मा कंपनी ने FDA के काउंटर ऑइंटमेंट पर की खुलकर बात!

वाशिंगटन: एक तरफ जहां कोरोना महामारी की वजह से अब तक वैश्विक स्तर पर आठ लाख से अधिक लोगों की जान जा चुकी है. वहीं, इससे निपटने के लिए सभी फार्मा कंपनियां अथक प्रयास कर रही है. इसी दौरान अमेरिका की एक फार्मा कंपनी ने काउंटर ऑइंटमेंट पर फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन से अप्रूव्ड परीक्षण को लेकर सफलतापूर्वक परीक्षण किया है. दरअसल, इस संदर्भ में इन परियोजनाओं से जुड़े वैज्ञानिकों ने कहा, "काउंटर (OTC) ऑइंटमेंट पर FDA रजिस्टर्ड नॉन-प्रेस्क्रिप्शन को कोरोना वायरस सहित वायरल संक्रमण को रोकने के लिए सिद्ध किया गया है. वहीं, फार्मा कंपनी ने भी एक बयान में कहा, "लैब की रिपोर्ट के अनुसार, T3X उपचार के 30 सेकंड के बाद किसी भी संक्रामक वायरस का पता नहीं चला." एडवांस्ड पेनिट्रेशन टेक्नोलॉजी के संस्थापक और सीईओ के डॉ. ब्रायन ह्यूबर ने कहा, "हम मानते हैं कि यह एक सफलता होगी, जो कोरोना वायरस से संक्रमित होने की संभावना को कम कर देगी. मैं कहूं तो यह बहुत बड़ा सौदा है, क्योंकि यह उस प्रकार का संरक्षण है जिसकी बहुत लोग उम्मीद कर रहे हैं. वहीं, यह COVID-19 वायरस के खिलाफ सफलता का पहला चरण हो सकता है." मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) के एक हालिया अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला है कि लोग COVID-19 और अन्य वायरस को मुख्य रूप से नाक के माध्यम से अनुबंधित करते हैं. हालांकि, वायरस अभी भी मुंह और आंखों के माध्यम से शरीर में प्रवेश कर सकता है. कंपनी ने कहा, T3X एक FDA पंजीकृत और ओवर-द-काउंटर फॉर्मुलेशन है, जिसका अर्थ है कि किसी भी नुस्खे की आवश्यकता नहीं है. वहीं, इसका उपयोग करना आसान भी है, और चिकित्सा कर्मियों की सहायता के बिना स्व-प्रशासित किया जा सकता है." एक लंदन स्थित अनुसंधान प्रयोगशाला, वायरोलॉजी रिसर्च सर्विसेज लिमिटेड ने उत्पाद के एंटी-वायरल प्रभाव का मूल्यांकन किया, जिसका नाम APT ™ T3X है. साथ ही अनुसंधान प्रयोगशाला निष्कर्ष निकाला है कि APT ™ T3X प्रभावी रूप से सेकंड के भीतर वायरल संक्रामकता को बेअसर करता है. वहीं, एंटी-वायरल प्रभावकारिता एक्सपोज के वायरल लोड को कम करने के लिए APT ™ T3X के सामयिक इंट्रानैसल उपयोग का समर्थन करता है. कंपनी ने आगे कहा, "शर्तों के तहत परीक्षण किया गया है, APT T3X कंपनी ने मानव कोरोना वायरस NL63 के खिलाफ 99.9% विरूपी गतिविधि प्रदर्शित करता है. प्रतिरोधी बैक्टीरिया संक्रमणों के लिए उत्पाद को शुरू में आठ साल पहले विकसित किया गया था, लेकिन इसके निर्माण के अतिरिक्त शक्तिशाली एंटी-फंगल और एंटी-वायरल थेरेपी प्रदान करता है. इसका कोई प्रलेखित दुष्प्रभाव नहीं है. हालांकि, लाइम रोग के निदान वाले रोगियों को उपयोग के तुरंत बाद संभावित "हर्क्स" प्रतिक्रिया के बारे में पता होना चाहिए."

Alembic Pharmaceuticals receives USFDA Tentative Approval for Empagliflozin and Linagliptin Tablets, 10 mg/5 mg and 25 mg/5 mg.

Alembic Pharmaceuticals Limited (Alembic) today announced that it has received tentative approval from the US Food & Drug Administration (USFDA) for its Abbreviated New Drug Application (ANDA) Empagliflozin and Linagliptin Tablets, 10 mg/5 mg and 25 mg/5 mg. The tentatively approved ANDA is therapeutically equivalent to the reference listed drug product (RLD), Glyxambi Tablets, 10 mg/5 mg and 25 mg/5 mg, of Boehringer Ingelheim Pharmaceuticals, Inc. (Boehringer). Empagliflozin and Linagliptin Tablet is indicated as an adjunct to diet and exercise to improve glycemic control in adults with type 2 diabetes mellitus when treatment with both Empagliflozin and Linagliptin is appropriate. Empagliflozin is indicated to reduce the risk of cardiovascular death in adults with type 2 diabetes mellitus and established cardiovascular disease. However, the effectiveness of Empagliflozin and Linagliptin Tablets on reducing the risk of cardiovascular death in adults with type 2 diabetes mellitus and cardiovascular disease has not been established. Empagliflozin and Linagliptin Tablets, 10 mg/5 mg and 25 mg/5 mg have an estimated market size of US$ 244 million for twelve months ending June 2020 according to IQVIA. Alembic is currently in litigation with Boehringer in District Court of Delaware and launch of the product will depend on litigation outcome. Alembic now has a total of 130 ANDA approvals (113 final approvals and 17 tentative approvals) from USFDA. About Alembic Pharmaceuticals Limited Alembic Pharmaceuticals Limited, a vertically integrated research and development pharmaceutical company, has been at the forefront of healthcare since 1907. Headquartered in India, Alembic is a publicly listed company that manufactures and markets generic pharmaceutical products all over the world. Alembic's state of the art research and manufacturing facilities are approved by regulatory authorities of many developed countries including the USFDA. Alembic is one of the leaders in branded generics in India. Alembic's brands, marketed through a marketing team of over 5000 are well recognized by doctors and patients.

ई-फार्मेसी पर लगाई जाए रोक

आगरा: आगरा महानगर केमिस्ट एसोसिएशन के प्रेसिडेंट आशीष शर्मा का कहना है कि अगर इन फार्मेसी को सरकार ने बंद नहीं किया तो लाखों लोगों के परिवार सड़क पर आ जाएंगे. इन सब आशंकाओं को देखते हुए प्रदेशीय संस्था उत्तर प्रदेश केमिस्ट एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स एसोसिएशन की आह्वान पर आगरा महानगर केमिस्ट एसोसिएशन प्रेसिडेंट आशीष शर्मा, महामंत्री अश्वनी श्रीवास्तव ने व्यापारियों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए एक मुहिम की शुरुआत की है. इसके अंदर आगरा के समस्त व्यापारी व उनके कर्मचारी और मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव से आग्रह किया है कि अपने मोबाइल फोन से 1800 117 800 पर फोन करके प्रधानमंत्री जी से इस पर रोक लगाने का आग्रह करें. **आशीष शर्मा (आगरा) 9837279162.**

Lupin लिमिटेड US में डायबिटीज के ट्रीटमेंट की दवा को फिर देगी बढ़ावा!

ड्रग प्रमुख ल्यूपिन लिमिटेड ने बुधवार को कहा कि वह अमेरिकी बाजार में अपनी डायबिटीज ट्रीटमेंट ड्रग मेटफोर्मिन हाइड्रोक्लोराइड क्सटेंडेड-रिलीज टैबलेट (drug Metformin Hydrochloride eñtended&release tablets) को स्वेच्छा से वापस लेकर आ रही है. एक नियामक फाइलिंग में, कंपनी ने कहा कि वह स्वेच्छा से अपने मेटफॉर्मिन हाइड्रोक्लोराइड एक्सटेंडेड-रिलीज टैबलेट USP, 500 मिलीग्राम और अमेरिका में 1000 मिलीग्राम उत्पादों को लाएगी. फाइलिंग ने आगे कहा, "यह सब कुछ NDMA अशुद्धता स्तरों पर अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन (US Food and Drug Administration) के साथ चल रही बातचीत के अनुरूप सावधानी बरतने से बाहर हो रहा है. बता दें कि, ल्यूपिन की यूएस सहायक, ल्यूपिन फार्मास्यूटिकल्स इंक, यूएस में 500 मिल. ीग्राम और 1000 मिलीग्राम की ताकत मं0 मेटफॉर्मिन हाइड्रोक्लोराइड एक्सटेंडेड-रिलीज टैबलेट यूएसपी वितरित करती है. वहीं, कंपनी ने कहा, "हम मानते हैं कि संबंधित उत्पादों में पहचाने जाने वाले मुद्दे पता करने योग्य हैं, और हम मौजूदा तिमाही के दौरान अमेरिका में अपने अपडेटेड मेटफॉर्मिन हाइड्रोक्लोराइड एक्सटेंडेड-रिलीज टैबलेट उत्पाद (एस) को फिर से पेश करने की उम्मीद करते हैं. इसके अलावा, हम अलग से स्पष्ट करना चाहते हैं कि भारत में निर्मित और विपणन किए गए कंपनी के सभी मेटफॉर्मिन उत्पादों को एनडीएमए स्तरों के लिए परीक्षण किया गया है, और रोगियों के लिए सुरक्षित होने और सभी प्रासंगिक नियामक मानदंडों का अनुपालन करने के लिए मूल्यांकन किया गया है. कंपनी ने आगे कहा कि "उपरोक्त उत्पाद अपने सक्रिय दवा घटक (Active pharmaceutical ingredient (API)) स्रोत, निर्माण प्रक्रिया और निर्माण स्थलों के संबंध में एक पूरी तरह से अलग आपूर्ति श्रृंखला का हिस्सा हैं. बता दें कि, N&Nitrosodimethylamine (NDMA) की अशुद्धता, प्रयोगशाला परीक्षणों के परिणामों के आधार पर एक संभावित मानव कार्सिनोजेन के रूप में वर्गीकृत किया गया है. यह एक ज्ञात पर्यावरणीय संदूषक है और मीट, डेयरी उत्पादों और सब्जियों सहित पानी और खाद्य पदार्थों में पाया जाता है. मेटफोर्मिन हाइड्रोक्लोराइड एक्सटेंडेड-रिलीज टैबलेट, एक प्रिस्क्रिप्शन ओरल दवा है, जो टाइप -2 डायबिटीज मेलिटस वाले वयस्कों में रक्त शर्करा नियंत्रण में सुधार करने के लिए आहार और व्यायाम के सहायक के रूप में इंगित की जाती है. बीएसई पर ल्यूपिन के शेयर 0.76 प्रतिशत बढ़कर 876.35 रुपये पर कारोबार कर रहे थे.

फार्मा उद्योग अनुसंधान और विकास के व्यावसायीकरण के लिए शिक्षाविदों के साथ काम करेगा

ग्लोबल गवर्नमेंट अफेयर्स (दक्षिण एशिया) में एबॉट हेल्थकेयर के वरिष्ठ निदेशक राकेश के चितकारा का कहना है कि उद्योग और अकादमिक साझेदारी न केवल तालमेल बनाती है, बल्कि कोविड-19 महामारी के वर्तमान परिदृश्य में आवश्यक गति से समाधान विकसित करने और बढ़ाने के लिए एक गुणक प्रभाव है. भारत के इस क्षेत्र में पहले से ही विश्व स्तर पर जो कुछ भी हो रहा है, उसकी तुलना में इस क्षेत्र में बहुत कुछ करने की आवश्यकता है, जहां प्रमुख पेटेंट के साथ उद्योग और शिक्षा प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में निर्बाध रूप से काम किया जाता है. उन्होंने आगे कहा कि इन साझेदारियों से निकलने वाली प्रमुख खोजों में व्यावसायीकरण की क्षमता देखी जाती है. COVID-19 महामारी के पिछले तीन महीनों के दौरान, भारत ने सरकार के अलावा उद्योग और अकादमियों के साथ सहयोग करने की जबरदस्त क्षमता दिखाई थी, जो एक साथ काम करने का संकेत देती थी. इस गति का अध्ययन करना चाहिए कि वर्तमान बीमारी COVID-19 कैसे बदल रही है और विकसित हो रही है, अन्यथा हम पीछे रह जाएंगे. इसलिए, निश्चित रूप से उद्योग और अकादमिक भागीदारी को बढ़ाने या मौजूदा लोगों को मजबूत करने की जरूरत है. CII सत्र फार्मास्यूटिकल्स में सफल उद्योग-अकादमी सहयोग में शामिल विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओं पर विचार-विमर्श की भी आवयश्कता है. एक अध्ययन का हवाला देते हुए, उन्होंने कहा कि उद्योग और अकादमिक सहयोग का विश्व स्तर पर 100 अंक बढ़ गए हैं. यहां तक भारत में, सहयोग के लिए पर्याप्त संभावनाएं हैं. कहीं न कहीं यह कार्य करने का समय है, जब भारत को COVID-19 को रोकने के लिए बुरी तरह से वैक्सीन की आवश्यकता है, क्योंकि परीक्षण के लिए विभिन्न वैक्सीन उम्मीदवारों की भारी आवश्यकता है. अब शुरू करने के लिए एबॉट समेत फार्मा कंपनियों ने बोस्टन, मैसाचुसेट्स, हार्वर्ड और ऑक्सफोर्ड के विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर काम शुरू किया है. एक देश विशिष्ट दृष्टिकोण से, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (Indian Council of Medical Research (ICMR)) काफी काम कर रहा है, लेकिन जिस तरह से वैश्विक अकादमिक संस्थान क्लिनिकल ट्रायल में सहयोग करते हैं, और इसका अनुवाद करते हैं, जिसे वह मरीजों तक ले जाते हैं, उन साझेदारियों को स्थापित करने में समय व्यतीत करते देखा जाता है. चितकारा ने आगे कहा कि अब भारत में, हमें इन सरक. ारी अनुसंधान संस्थानों के साथ अनुसंधान और विकास गतिविधियों पर समय बिताने की जरूरत है, और यह भी आकलन करना चाहिए कि क्या उद्योग का वित्तपोषण पर्याप्त है. सीआईआई उत्तरी क्षेत्रीय कमेटी ऑन लाइफ साइंस में नेक्टर लाइफसाइंसेस के एफमेक्ससिल, कार्यकारी निदेशक और चेयरमैन डॉ. दिनेश दुआ ने कहा कि अब उद्योग और शिक्षा करीब काम कर सकते थे. अगर उनकी मानसिकता है, तो बहुत कुछ हो सकता है. वहीं, हम अभी जेनरिक के कॉपीकैट संस्करणों को जारी रखते हैं. सहयोग की आवश्यकता पर पुनर्विचार करते हुए, चितकारा ने आगे कहा कि फार्मा उद्योग अनुसंधान और विकास के व्यावसायीकरण के लिए शिक्षाविदों के साथ जुड़ रहा है.

Biocon's Breakthrough Drug Itolizumab Receives DCGI Nod for its Use in Moderate to Severe COVID-19 Patients

Karnataka, India – Biocon Ltd. (BSE code: 532523, NSE: BIOCON), an innovation-led global biopharmaceuticals company, announced it has received the Drugs Controller General of India's (DCGI) approval to market Itolizumab (ALZUMAb®) Injection 25mg/5mL solution for emergency use in India for the treatment of cytokine release syndrome (CRS) in moderate to severe ARDS (acute respiratory distress syndrome) patients due to COVID-19. Itolizumab is the first novel biologic therapy to be approved anywhere in the world for treating patients with moderate to severe COVID-19 complications. Biocon has repurposed Itolizumab, an anti-CD6 IgG1 monoclonal antibody launched in India in 2013 as ALZUMAb® for treating chronic plaque psoriasis, for the treatment of CRS in moderate to severe ARDS patients due to COVID-19. Itolizumab will be manufactured and formulated as an intravenous injection at Biocon's bio-manufacturing facility at Biocon Park, Bengaluru. The SARS-CoV-2 virus has been observed to induce an overreaction of the immune system, generating a large number of cytokines that can cause severe damage to the lungs and other organs, and, in the worst scenario, multi-organ failure and even death. The emergency use approval of Itolizumab, from the DCGI is based on the results from the successful conclusion of a randomized, controlled clinical trial at multiple hospitals in Mumbai and New Delhi. The study focussed on the safety and efficacy of Itolizumab in preventing CRS in moderate to severe ARDS patients due to COVID-19. The primary endpoints for reduction in one-month mortality rate were met and other key secondary endpoints for efficacy and biomarkers were also achieved. Kiran Mazumdar-Shaw, Executive Chairperson, Biocon, said: "As an innovation-led biopharmaceuticals company, I am proud of the successful outcome of the pivotal study we conducted with our novel immuno-modulating anti-CD6 monoclonal antibody, Itolizumab, which has proven to be an efficacious intervention in treating the serious hyper immune response seen with COVID-19. The data is compelling and I am 2 confident that this 'first-in-class' biologic will save lives and help reduce the mortality rate in our country. "This positions India amongst the leading global innovators in their effort to overcome the COVID-19 pandemic. The randomized control trial indicated that all the patients treated with Itolizumab (ALZUMAb®) responded positively and recovered. The control arm that did not receive Itolizumab unfortunately had deaths. Itolizumab is now approved for the treatment of CRS in patients with moderate to severe ARDS due to COVID-19. We plan to take this therapy to other parts of the world impacted by the pandemic. "Itolizumab's unique mechanism of action made it an ideal candidate for treating the 'cytokine storm', which is a leading cause of death in COVID-19 patients. I am pleased that our R&D and clinical teams delivered on this promising hypothesis in such a short period of time. It is a proud moment for all of us at Biocon and we would like more and more patients to benefit from this therapy. I also thank the investigators and the regulators for the sense of urgency that they displayed in this study. "ALZUMAb® has a seven-year proven track record of safety as doctors in India have been prescribing this biologic to treat acute psoriasis and ensure a better quality of life for patients and now we will be able to save many critically ill COVID-19 patients with our drug." Dr Suresh Kumar, Medical Director, Lok Nayak Hospital, Delhi said: "At the time of this COVID-19 pandemic, we do not have any specific treatment for patients who are losing the fight against the disease in spite of best supportive care. Lok Nayak Hospital was one of the sites of the Itolizumab study wherein we used Itolizumab to treat eight patients. These patients did extremely well even with a single dose of Itolizumab. Patients who were with initial oxygen saturation of less than 80% and would have been put on ventilator support with little chance of survival, recovered completely when treated with Itolizumab and got discharged. I sincerely believe Itolizumab will not only help in reducing morbidity and mortality of COVID-19 patients but will also help us in judiciously managing healthcare resources like ICUs and ventilators for critically ill patients." Dr Mohan Joshi, Dean, BYL Nair Hospital, Mumbai, said: "In our hospital, we have tried Itolizumab in many COVID-19 patients with moderate to severe ARDS and found significant improvement in clinical, radiological and inflammatory markers after administering Itolizumab. These outcomes were quite evident with one dose of Itolizumab when administered before the 'cytokine storm' set in. Most of the patients have well tolerated the drug. Given the growing surge of COVID-19 cases, I would recommend use of Itolizumab in moderate to severe complications in COVID-19." 3 Dr Sandeep Athalye, Chief Medical Officer, Biocon Biologics, said: "We are delighted with the results of the clinical trial for Itolizumab in India. Itolizumab demonstrated statistically significant advantage over the control arm, in one month mortality rate. Key efficacy parameters such as PaO_2 and SpO_2 (oxygen saturation) improvement without increasing FiO_2 (oxygen flow) also showed statistically significant advantage for Itolizumab arm over the control arm. All the patients on Itolizumab arm were weaned off oxygen by Day 30, and none needed ventilator support unlike the control arm. Key secondary endpoints of clinical markers of inflammation such as IL-6, TNF-α, serum ferritin, d-dimer, LDH and CRP showed clinically significant suppression post dose and correlated well with clinical improvement in symptoms and chest x-ray images. Itolizumab was overall well tolerated and was found to be safe. Itolizumab when administered to patients with moderate to severe ARDS due to COVID-19, prevents morbidity and mortality due to cytokine storm. India currently has more than 283,400* documented active coronavirus infections and over 22,100* deaths. Itolizumab's unique mechanism of action of immunomodulation involves binding to the CD6 receptor and blocking the activation of T lymphocytes, which in turn suppresses the pro-inflammatory cytokines, thus reducing the cytokine storm and deadly inflammatory response. Biocon launched ALZUMAb® (Itolizumab) in India in 2013 for the treatment of chronic plaque psoriasis. Many patients have benefitted from this novel therapy.

Glenmark introduces higher strength (400 mg) of FabiFlu to reduce pill burden of COVID-19 treatment

Glenmark is the first company in India to have received the regulator's approval for 400 mg dosage form Increased strength of FabiFlu yet another milestone effort by Glenmark's in-house R•&D Patients can now opt for a more relaxed dosage regimen when compared to 200 mg tablet and now need to take half the number of pills due to the introduction of 400 mg Glenmark remains the only company in India to successfully complete an randomized, controlled, open-labelled, multi-center Phase 3 clinical trial on Indian patients with mild to moderate Covid-19 Mumbai, India; August 6, 2020: Glenmark Pharmaceuticals, a research-led, integrated global pharmaceutical company, today announced that it will introduce a 400 mg version of oral antiviral FabiFlu, for the treatment of mild to moderate COVID-19 in India. The higher strength will improve patient compliance and experience, by effectively reducing the number of tablets that patients require per day. A higher pill burden has been associated with lower adherence to therapy, the latter affecting viral suppression and overall treatment outcomes. Also reducing the pill burden has been a demand from doctors and patients to enable adherence. The 200 mg dosage of FabiFlu required patients to take 18 tablets on Day 1 (nine in the morning and nine in the evening), followed by 8 tablets each day thereafter for a maximum of 14 days. With the new 400 mg version, patients will now have a more relaxed dosage regimen, with 9 tablets required on Day 1(4.5 in the morning and 4.5 in the evening), and thereafter 2 tablets twice a day from Day 2 till end of the course. Explaining the significance of this development, Dr. Monika Tandon, Vice President & Head, Clinical Development, Global Specialty/Branded Portfolio, Glenmark Pharmaceuticals Ltd., said, "Being the first company to launch Favipiravir in India, we continue to innovate and seek new treatment options for Covid-19 patients. Introducing this higher strength of FabiFlu® is in line with these efforts to ensure a smoother experience for patients, by reducing their daily pill burden." "The 200 mg dosage of FabiFlu® was developed in line with global formulations of the drug Favipiravir, which had similar strength. The 400 mg version is a result of Glenmark's own R&D efforts to improve treatment experience for patients in India," she added. Glenmark has also commenced a Post Marketing Surveillance (PMS) study on FabiFlu® to closely monitor the efficacy and safety of the drug in a large pool of patients prescribed with the oral antiviral Favipiravir, as part of an open label, multicenter, single arm study. Glenmark is also conducting another Phase 3 clinical trial to evaluate the efficacy of two antivirals drugs Favipiravir and Umifenovir as a combination therapy in moderate hospitalized adult COVID-19 patients in India. The combination study which is called the FAITH trial is looking to enrol 158 hospitalized patients of moderate COVID-19 in India. Early treatment with combination therapy will be evaluated for safety and efficacy as it is emerging as an effective approach in shortening duration of virus shedding, facilitating early clinical cure and discharge of patients.

Piramal Pharma Solutions to Collaborate with Epirium Bio

Mumbai, India: Piramal Pharma Solutions, a leading contract development and manufacturing organization (CDMO), announced that the company will be partnering with Epirium Bio on an exclusive manufacturing relationship for new orphan drugs targeting rare diseases with high unmet needs. The Piramal Pharma Solutions (PPS) team is providing Epirium with an integrated program that encompasses formulation development, supply of APIs and intermediates, chemistry development and manufacturing, and solid oral dosage form drug product. The work is being completed across three PPS sites in India, with the seamless alignment of information, technology, and project management that will speed timelines and bring the drugs to market faster. According to Peter DeYoung, Chief Executive Officer, Piramal Pharma Solutions, "This program with Epirium exemplifies the ways we lead the market in delivering integrated services. We've backintegrated our supply of intermediates to ensure supply chain security and quality, we've invested more than $1 million to add a dedicated area to our plant with the specialized technologies required to produce Epirium's product, and we've developed a fully integrated process that utilizes the expertise of our teams at three sites." Dr. Sundeep Dugar, Chief Technology Officer for Epirium, added that "Our scientific insights have led to the discovery of a novel pharmacological approach for the treatment of diseases characterized by mitochondrial depletion and dysfunction. Proof of concept has been established in early human studies and we intend to advance our clinical candidate as a potential treatment for certain relevant rare diseases with high unmet need. We expect our partnership with PPS to expedite these efforts and help us bring high-quality orphan drugs to market." The first cycle of drug substance to drug product has been successfully completed through the integrated program. Additional cycles are in progress, as are further evolutions that will benefit future indications and new clinical programs. *** About Piramal Pharma Solutions: Piramal Pharma Solutions is a contract development and manufacturing organization (CDMO), offering end-toend development and manufacturing solutions across the drug life cycle. We serve our clients through a globally integrated network of facilities in North America, Europe and Asia. This enables us to offer a comprehensive range of services including Drug Discovery Solutions, Process & Pharmaceutical Development services, Clinical Trial Supplies, Commercial supply of APIs and Finished dosage forms. We also offer specialized services like development and manufacture of Highly Potent APIs and Antibody Drug Conjugation. Our capability as an integrated service provider & experience with various technologies enables us to serve Innovator and Generic companies worldwide.

Health News

डायबिटीज से हो सकता है अंधापन इलाज की इस नई तकनीक से करें बचाव

डायबिटीज एक ऐसा रोग है जिसकी चपेट में आज हमारे देश के लगभग 7 करोड़ लोग हैं. डायबिटीज ऐसा रोग है जो आँखों की रोशनी छीनने में पाँचवे नंबर पर है. डायबिटीज के मरीजों को हर साल एक बार अपनी आँखों की जाँच जरूर करानी चाहिए. इस पर काबू नहीं की तो आँख की रोशनी (अंधता) जाने का खतरा काफी बढ़ जाता है. **70 फीसदी तक मरीज आते हैं:–** पीजीआई नेत्र रोग विभाग की प्रमुख डॉ. कुमुदिनी शर्मा ने बताया कि संस्थान के इंडोक्राइन विभाग से ही रोजाना डायबिटीज के 70 से अधिक मरीज आते हैं. इनमें से 60 से 70 फीसदी डायबिटीज मरीजों में आँख के पर्दे की जाँच में दिक्कत मिलती है. जो डायबिटीज की वजह से होता है. यानी कि इन डायबिटीज मरीज की आँख की रोशनी जाने का खतरा रहता है. ऐसे में इनका तुरंत इलाज किया जाता है. डॉक्टर का कहना है कि अस्पताल में आने वाले डायबिटीज के मरीजों में सबसे ज्यादा युवा हैं. **डायबिटीज की जांच के लिए टेस्ट:– ए1सी टेस्ट:–** आमतौर पर प्री डायबिटीज और टाइप 2 डायबिटीज का पता लगाने के लिए इस टेस्ट का इस्तेमाल किया जाता है. जबकि टाइप 1 डायबिटीज या गर्भावधि मधुमेह के लिए ए1सी टेस्ट का इस्तेमाल नहीं किया जाता है. ए1सी टेस्ट ब्लड शुगर में होने वाले रोज–रोज के उतार–चढ़ाव को नहीं बताता बल्कि पिछले 2–3 महीने में होने वाले उतार–चढ़ाव को बताता है. यह हीमोग्लोबिन और लाल रक्त कोशिकाओं से जुड़े ग्लूकोज की मात्रा को भी नापता है. यह ट्रेडिशनल ग्लूकोज टेस्ट की तुलना में रोगियों के लिए अधिक सुविधाजनक होता है क्योंकि इसमें फास्टिंग की जरूरत नहीं होती है. इस टेस्ट को दिन में किसी भी समय किया जा सकता है. **फास्टिंग प्लाज्मा ग्लूकोज टेस्ट (एफपीजी):–** फास्टिंग प्लाज्मा ग्लूकोज टेस्ट (एफपीजी) को ग्लूकोज फास्टिंग टेस्ट भी कहते हैं. यह टेस्ट बिना कुछ खाये–पिए सुबह के समय किया जाता है. टेस्ट से पहले फास्टिंग से ब्लड शुगर का सही स्तर पता करने में मदद मिलती हैं. यह टेस्ट बहुत ही सटीक, सस्ता और सुविधाजनक होता है. ग्लूकोज फास्टिंग टेस्ट प्री डायबिटीज और डायबिटीज का पता लगाने का सबसे लोकप्रिय टेस्ट है. हालांकि कई बार प्री डायबिटीज के मामले में इस टेस्ट से रिजल्ट नहीं मिलते हैं. **ओरल ग्लूकोज टॉलरेंस टेस्ट:–** यह टेस्ट ऐसे व्यक्ति को करने के लिए कहा जाता है जिसको डायबिटीज का संदेह तो होता है परन्तु उसका एफपीजी टेस्ट ब्लड शुगर के स्तर को नॉर्मल दर्शाता है. ओरल ग्लूकोज टॉलरेंस टेस्ट को (ओजीटीटी) भी कहा जाता है. इस टेस्ट से करीब 2 घंटे पहले लगभग 75 ग्राम एनहाइड्रस ग्लूकोज को पानी में मिलाकर पीना होता है तभी शुगर के सही लेवल की जाँच की जा सकती है. ओजीटीटी टेस्ट करने के लिए कम से कम 8 से 12 घंटे पहले कुछ नहीं खाना होता है.
रैंडम प्लाज्मा ग्लूकोज (आरपीजी):– रैंडम प्लाज्मा ग्लूकोज (आरपीजी) टेस्ट का प्रयोग कभी–कभी एक नियमित स्वास्थ्य जाँच के दौरान पूर्व मधुमेह या मधुमेह का निदान करने के लिए किया जाता है. अगर आरपीजी 200 लिटर का दशमांश प्रति माइक्रोग्राम या उससे ऊपर दिखाता है तो व्यक्ति में मधुमेह के लक्षणों का पता चलता है, तो चिकित्सक डायबिटीज का पता लगाने के लिए अन्य टेस्ट करता है.

विटामिन डी की कमी से बच्चों में आता है गुस्सा और चिड़चिड़ापन खिलाएं ये 7 फूड्स

क्या आपको हैरानी नहीं होती जब छोटे बच्चों को गुस्सा आता है या वे जिद करते हैं? बच्चों में चिड़चिड़ेपन को अक्सर लोग परिवार के किसी सदस्य का अनुवांशिक असर मानकर नजर. अंदाज कर देते हैं. मगर बच्चों के चिड़चिड़े स्वभाव का कारण उनमें विटामिन डी की कमी बी हो सकती है. जी हाँ, हाल में हुई एक रिसर्च में इस बात का खुलासा किया गया है कि विटामिन डी की कमी से छोटे बच्चों में चिड़चिड़ेपन की समस्या हो सकती है. ये रिसर्च 'जर्नल ऑफ न्यूट्रीशन' नाम के जर्नल में छापी गई है. इस रिसर्च में पता चलने वाली मुख्य बातें और विटामिन डी वाले आहार, जिन्हें बच्चों को खिलाने से चिड़चिड़ापन दूर होगा. **क्या कहती है रिसर्च?:–** Journal of Nutrition में छपे एक नए रिसर्च के अनुसार विटामिन डी की कमी से स्कूल जाने वाले (5 साल से बड़े) बच्चों में एक तरह का चिड़चिड़ापन आ जाता है और उनका व्यवहार आक्रामक हो जाता है. इसके अलावा ऐसे बच्चे अपने आप में खोए हुए, चिंतित और अवसादग्रस्त हो जाते हैं. इन बच्चों में जल्दी–जल्दी मूड बदलने (मूड स्विंग्स) की समस्या देखी जाती है. ये रिसर्च मिशिगन यूनिवर्सिटी द्वारा की गई है. हमारे शरीर के स्वास्थ्य के साथ–साथ विटामिन्स और पोषक तत्व हमारे मूड को भी प्रभावित करते हैं. आपको शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए सभी तरह के पोषक तत्वों की जरूरत होती है. इस रिसर्च के लिए प्राइमरी स्कूल में पढ़ने वाले 5 साल से 12 साल की उम्र के 3202 बच्चों पर अध्ययन किया गया. इन बच्चों की रोजाना की आदतें, माँ–बाप का शैक्षिक बैकग्राउंड, वजन, लंबाई और उनके खानपान आदि को ध्यान में रखकर शोधकर्ताओं ने आँकड़े जुटाए और फिर ब्लड टेस्ट किया. इसके बाद उन्होंने निष्कर्ष दिया कि छोटे बच्चों में विटामिन डी की कमी से व्यवहार परिवर्तन की समस्या बढ़ गई है. **बच्चों में विटामिन डी की कमी:–** मुख्य शोधकर्ता प्रोफेसर Eduardo Villamor बताते हैं कि जिन बच्चों में स्कूली शिक्षा के दौरान विटामिन डी की कमी होती है, उनमें बिहेवियर प्रॉब्लम और चिड़चिड़ेपन की समस्या ज्यादा देखी गई है. आपको बता दें कि बच्चों के स्वभाव में चिड़चिड़ेपन की समस्या पिछले कुछ समय में काफी बढ़ गई है. छोटी उम्र में ही बच्चों को छोटी–छोटी बातों पर इतना गुस्सा आता है कि वे गुस्से के कारण चीजों को तोड़ने–फोड़ने और खुद को नुकसान पहुँचाने में भी नहीं सोचते हैं. **क्यों हो रही है बच्चों में विटामिन डी की कमी?:–** गाँवों की अपेक्षा शहरों में बच्चों में विटामिन डी की कमी ज्यादा तेजी से बढ़ी है. विटामिन डी का सबसे अच्छा प्राकृतिक स्रोत सूरज की किरणें हैं. आजकल शहरों में बच्चे बाहर पार्क में खेलने के बजाय घर के अंदर रहना ज्यादा पसंद करते हैं. इसके अलावा आजकल स्कूलों में बच्चों को इतना काम दे दिया जाता है, जिससे उनके पास खेलने–कूदने का टाइम नहीं मिलता है. ये बच्चों में विटामिन डी की कमी के बड़े कारण हैं. इसके अलावा बच्चों में जंक फूड्स, रेडी टू ईट फूड्स, सॉफ्ट ड्रिंक्स आदि की लत के कारण भी विटामिन डी की कमी हो जाती है. **विटामिन डी की कमी पूरी करने वाले आहार:–** विटामिन डी का सबसे अच्छा स्रोत दूध है, इसलिए बच्चों को रोज रात में एक ग्लास दूध जरूर पिलाएं. • योगर्ट भी विटामिन डी का अच्छा स्रोत है. बच्चों के लंच बॉक्स में खाने या सलाद के साथ योगर्ट दे सकते हैं. • मशरूम विटामिन डी का सबसे अच्छा स्रोत है इसलिए बच्चों के लंच और डिनर में मशरूम वाली डिशेज बनाकर दें. • चीज खाना बच्चों को पसंद होता है. चीज में भी अच्छी मात्रा में विटामिन डी होता है. • अंडे के पीले हिस्से में विटामिन डी होता है. • संतरे का जूस भी विटामिन डी का अच्छा स्रोत है. • मछलियाँ विटामिन डी का अच्छा स्रोत हैं.

कितने प्रकार के होते हैं हृदय रोग और क्या हैं?, इनके लक्षण

हृदय रोग ऐसी बीमारियाँ हैं, जिनसे आपका हृदय यानी दिल प्रभाावित होता है. 2016 में छपे जनरल सर्कुलेशन के अनुसार कार्डियोवस्कुलर रोग भारत सहित दुनियाभर के देशों में मौत का एक प्रमुख कारण हैं. अमेरिकन कॉलेज ऑफ कार्डियोलॉजी के एक शोध में पाया गया है कि भारत में 26 साल की उम्र से कम के लोगों में हृदय रोगों का खतरा 34 प्रतिशत तक बढ़ गया है. इस शोध के मुताबिक भारत में हर 40 सेकेंड में एक व्यक्ति की मौत कार्डियोवस्कुलर रोगों से होती है. हालांकि कुछ लोग हृदय रोग का मतलब केवल हार्ट अटैक यानी हृदयाघात जानते हैं. मगर हार्ट अटैक के अलावा भी हृदय रोग कई प्रकार के होते हैं. आइए आपको बताते हैं कितने प्रकार के होते हैं हृदय रोग और क्या हैं इनके लक्षण:– **एरिथमिया:–** एरिथमिया एक ऐसी बीमारी है, जिसमें दिल की धड़कन अनियमित हो जाती है. एरिथमिया के कारण रोगी के दिल की धड़कन कभी सामान्य से तेज हो जाती है और कभी सामान्य से धीरे हो जाती है. एरिथमिया तब होता है जब दिल की धड़कन को नियंत्रित करने वाले इलेक्ट्रिक वेव्स ठीक से काम नहीं करते हैं. दिल की धड़कन अनियमित हो जाने पर 0..आपको यह स्थिति अपने सीने, गले अथवा गर्दन में महसूस हो सकती है. **एरिथमिया के लक्षण:–** अचानक दिल की धड़कन तेज होना. • अचानक दिल की धड़कन धीरे होना. • ब्लड प्रेशर कम हो जाना. • सीने में तेज दर्द. • बोलने में परेशानी होना. • अचानक थकान और सुस्ती आ जाना. • चक्कर आना. • साँस लेने में परेशानी होना. • कुछ पलों के लिए धड़कन रूक जाना और फिर चलने लगना आदि. **एथेरोस्क्लेरोसिस:–** एथेरोस्क्लेरोसिस के कारण आपके दिल में ब्लड की सप्लाई कम हो जाती है. दिल तक सही मात्रा में ब्लड न पहुंचने से कई बार रोगी के लिए गंभीर स्थिति पैदा हो जाती है. एथेरोस्क्लेरोसिस कई कारणों से हो सकता है. आमतौर पर शरीर में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ी हुई मात्रा, इंसुलिन हार्मोन की मात्रा घटना, हाई ब्लड प्रेशर, अधिक धूम्रपान, कम शारीरिक मेहनत, अधिक उम्र और अनुवांशिक कारणों से हो सकता है. **एथेरोस्क्लेरोसिस के लक्षण:–** हाथ पैरों में ठंड लगना. • हाथ और पैरों में कंपकंपी. • बिना किसी वजह अचानक दर्द होना. • हाथ और पैरों में कमजोरी महसूस होना. • समय से पहले माथे पर झुर्रियां. • साँस लेने में परेशानी. • सिरदर्द की समस्या. • चेहरे पर सुन्न पड़ जाना. • पैरालिसिस हो जाना. **कॉन्जेनिटल हार्ट डिफेक्ट्स यानी जन्मजात हृदय दोष:–** जन्मजात हृदय दोष वो परेशानियां होती हैं, जो गर्भावस्था में ही शिशु के दिल में पैदा हो जाती हैं. गर्भ में हृदय और बड़ी रक्त वाहिनियों में विकास के दौरान हुए दोषों से इन विकारों का जन्म होता है. जब तक बच्चा गर्भाशय में रहता है या जन्म के तुरंत बाद तक गंभीर हृदय की खराबी के लक्षण साधारणत: पहचान में आ जाते हैं. लेकिन कुछ मामलों में यह तब तक पहचान में नहीं आते जब तक की बच्चा बड़ा नहीं हो जाता और कभी–कभी तो वयस्क होने तक यह पहचान में नहीं आता. इनमें से कुछ हृदय दोषों को कभी ठीक नहीं किया जा सकता है, जबकि कुछ का इलाज संभव है. आमतौर पर दिल में छेद होना ऐसी ही एक गंभीर समस्या है, जो कई शिशुओं में जन्म से पहले ही हो जाती है. **जन्मजात हृदय दोष के लक्षण:–** शरीर के अंगों जैसे मुंह, कान, नाखूनों और होठों में नीलपन दिखाई देने लगता है. • साँस लेने में परेशानी होना. • बार–बार फेफड़ो में संक्रमण होता है. • शारीरिक गति. विधियों के दौरान जल्दी थक जाना. • कई बार बच्चे थकान के कारण अचानक बेहोश हो जाते हैं. • शिशु को दूध पीने में परेशानी होना. • शिशु का वजन तेजी से कम होने लगना. • दूध पीते समय शिशु को पसीना आना. • शिशु के पैर, पेट और आंखों में सूजन आना. **कोरोनरी आर्टरी डिजीज (सीएडी) या कोरोनरी धमनी रोग:–** कोरोनरी धमनी रोग (सीएडी) या कोरोन. री हृदय रोग (सीएचडी) एक गंभीर अवस्था है. इसमें हृदय को ऑक्सीजन और पोषक तत्वों युक्त रक्त पहुँचाने वाली धमनियों में प्लाक जमने के कारण या क्षतिग्रस्त होने के कारण ये हृदय तक पूरी मात्रा में रक्त नहीं पहुँचा पाती हैं. दरअसल प्लाक के कारण कोरोनरी धमनियाँ सिकुड़ जाती हैं. जिसके चलते हृदय को कम मात्रा में रक्त प्राप्त होता है. **कोरोनरी धमनी रोग के लक्षण:–** सीने में तेज दर्द होना. • सीने में किसी दबाव या खिंचाव का महसूस होना. • बेचैनी और पसीना निकलना. • जी मिचलाना. • साँस लेने में परेशानी होना या साँस तेज हो जाना. • पेट में गैस बनना या अपच की समस्या. **कार्डियोमायोपैथी:–** कार्डियोमायोपैथी एक ऐसी बीमारी है, जिसके कारण दिल की माँसपेशियाँ बड़ी और कठोर हो जाती हैं. इसी कारण ये माँसपेशियाँ मोटी और कमजोर हो जाती हैं. कार्डियोमायोपैथी को लोग ब्रोकन हार्ट सिंड्रोम भी कहते हैं क्योंकि अक्सर ज्यादा खुशी या ज्यादा गम होने पर व्यक्ति में इसके लक्षण देखे जा सकते हैं. कार्डियोमायोपैथी के कारण हार्ट फेल होने का खतरा होता है. हाई ब्लड प्रेशर के मरीजों को इसका ज्यादा खतरा होता है. **कार्डियोमायोपैथी के लक्षण:–** साँस लेने में परेशानी होना. • आराम की स्थिति में भी साँस लेने में परेशानी होना. • पैरों, एड़ियों और तलवों में सूजन. • तरल पदार्थ के कारण पेट फूलने लगना. • लेटे हुए खांसी आना. • थकान. • दिल की धड़कन का तेज होना या असामान्य हो जाना. • छाती पर दबाव या वजन महसूस होना. • चक्कर आना और बेहोशी होना. **हार्ट इंफेक्शन या हृदय का संक्रमण:–** बैक्टीरिया हर जगह होते हैं. ये हमारे शरीर में भी होते हैं और हमारे रक्त में भी होते हैं. अगर किसी को दिल से जुडी कोई सामान्य बीमारी भी है, तो कई बार रक्त में मौजूद बैक्टीरिया डैमेज टिशु से चिपक जाते हैं और एक तरह के संक्रमण का कारण बनते हैं, जिसे एंडोकार्डाइटिस कहते हैं. दरअसल हृदय के अंदरूनी दीवार को एंडोकार्डियम कहते हैं. जब शरीर के किसी अन्य हिस्से से पहुँचे हुए बैक्टीरिया एंडोकार्डियम तक पहुँच जाते हैं, तो इंफेक्शन का कारण बनते हैं. **हार्ट इंफेक्शन के लक्षण:–** सीने में दर्द. • खाँसी आना. • बुखार आना. • तेज ठंड लगना. • त्वचा पर चकत्ते होना. **हार्ट अटैक:–** हार्ट अटैक हृदय रोग का कोई प्रकार नहीं है बल्कि ये एरिथमिया के अंतर्गत ही आता है. हार्ट अटैक एक ऐसी स्थिति है जब दिल के किसी हिस्से की एक या एक से ज्यादा मांसपेशियों में ठीक से ब्लड सप्लाई न हो पाने के कारण वो हिस्सा मर जाता है. आमतौर पर ऐसा तब होता है जब धमनियों में प्लाक जम जाने के कारण ब्लड की सप्लाई अवरूद्ध होती है. **हार्ट अटैक के लक्षण:–** • तेज खांसी आना. • जी मिचलाना. • उल्टी होना. छाती में तेज दर्द होना. • चक्कर आना. • सांस लेने में तकलीफ होना. • बैचेनी.

कैसे रखें अपने किडनी का ख्याल?

किडनी या गुर्दे की बीमारी को 'साइलेन्ट किलर' भी कहा जाता है. क्योंकि प्रथम अवस्था में कभी भी इसका पता नहीं चलता है. किडनी शरीर का एक ऐसा अंग होता है जो शरीर से विषाक्त पदार्थों को छानकर मूत्र के रूप में निकालने में मदद करता है. इसमें खराबी मतलब पूरे शरीर के कार्य में बाधा उत्पन्न होगा, इसलिए किडनी को स्वस्थ रखना बहुत जरूरी होता है. लेकिन आज के आधुनिक युग की जीवनशैली के कारण किडनी की बीमारी होने का खतरा बढ़ गया है. इससे बचने के लिए सबसे पहले जरूरी है किडनी के शुरूआती लक्षणों के बारे में जानना – 1. मूत्र की मात्रा या तो बढ़ जाती है या कम हो जाती है. 2. मूल का रंग गाढ़ा हो जाता है. 3. बार–बार मूत्र होने का एहसास होता है मगर करने पर नहीं होता है. 4. रात को मूत्र की मात्रा या तो कम हो जाती है या अधिक. 5. मूत्र का त्याग करने के वक्त दर्द होना. 6. मूत्र में रक्त का आना. 7. झाग (foam) जैसा मूत्र. 8. पैर, हाथ और चेहरे में सूजन आदि. यह तो किडनी के बीमारी के आम लक्षण हैं जिसका थोड़ा भी एहसास होने पर तुरन्त इसकी जाँच करवायें. और चिकित्सक के सलाह के अनुसार इलाज करना शुरू करें नहीं तो समय के साथ स्थिति खराब होती जाती है. पिछले कुछ वर्षों में भारत में क्रॉनिक किडनी डिजीज यानी गुर्दे खराब होने की समस्या तेजी से बढ़ी है. शुरूआती दौर में जाँच और प्रबंधन से बीमारी को गम्भीर होने से रोका जा सकता है औश्र ऐसे में इलाज के परिणाम भी अच्छे आते हैं. इण्डियन मैडीकल एसोसियेशन (आईएमए) के राष्ट्रीय पद्मश्री डॉ० ए० मरतड पिल्लै और आईएमए महासचिव एवं हार्ट केयर फाऊंडेशन ऑफ इण्डिया के अध्यक्ष पद्मश्री डॉ० बी० सी० रॉय एवं डीएसटी नेशनल साइंस कम्पयुनिकेशन पुरस्कारों से सम्मानित डॉ० के० के० अग्रवाल का कहना है कि ऐसे लोग जिन्हें डायबिटिज, हाई ब्लड प्रैशर, एथरोक्लेरोटिक हार्ट डिजीज, पेरिफरल वस्कुलर डिजीज है और किडनी फेलियर का उनका पारिवारिक इतिहास है तो उनमें गुर्दा खराब होने का खतरा काफी ज्यादा रहता है. गुर्दा खराब होने के शुरूआती चरण में कोई भी लक्षण सामाने नहीं आता है.

ऑल इंडिया ऑर्गेनाइजेशन ऑफ केमिस्ट एंड ड्रगिस्ट के दिशा–निर्देश

1. सभी रिटेलर अपने–अपने पास रखें दिसंबर या उसके बाद की एक्सपायरी को थोक व्यापारी के पास 1 जून से वापस भेजना शुरू करेंगे. **2.** थोक दवा विक्रेता सभी खैरिज दवा विक्रेताओं से 1 जून 2020 से लीकेज / ब्रेकेज / एक्सपायरी जिसकी एक्सपायर होने की तिथि 1 दिसंबर 2019 या उसके बाद की है को लेकर 31 जुलाई तक संबंधित कंपनियों को भेजेंगे. **3.** वर्तमान में रखी हुई एक्सपायरी थोक दवा विक्रेता कंपनियों को भेजना जारी रखें. **4.** थोक दवा विक्रेता 1 अक्टूबर 2019 को या उसके बाद एक्सपायर हुए माल को सभी संबंधित कंपनियों को वापस भेज देंगे. सभी कंपनियां इस भेजे गए लीकेज/ब्रेकेज/एक्सपायरी के प्राप्त माल पूर्वानुसार पूरे 100 प्रति. का सेटलमेंट करने के लिए उत्तरदाई होंगी. **5.** AIOCD के परिपत्र के अनुसार किसी भी कंपनी से हमारे किसी भी दवा का कोरोना के कारण लिकेज / ब्रेकेज / एक्सपायरी के कारण कोई भी नुकसान नहीं होगा. **6.** किसी भी कंपनी से परेशानी हो तो तत्काल जिला या राज्य संगठन को सूचित करे ताकि उस कंपनी से भी सभी को क्लेम सेटेलमेंट करवाए जा सकें.– **Umesh Shrivastav (Ujjain), Mob.: 9058129523**

'चूना अमृत है' इसके औषधीय गुण जानकर हैरान हो जाएंगे आप

नाम से थोड़ा अजीब लग रहा है न की चूना, यार इसके भी फायदे है क्या? लेकिन वास्तव में इसके भी बहुत फायदे है, हम आपको चुने के कुछ फायदे बताएँगे जो आपको हैरान कर देंगे. • चूना एक टुकड़ा छोटे से मिट्टी के बर्तन में डालकर पानी से भर दे, चूना गलकर नीचे और पानी ऊपर होगा. वही एक चम्मच पानी किसी भी खाने की वस्तु के साथ लेना है. 50 के उम्र के बाद कोई कैल्शियम की दवा शरीर में जल्दी नही घुलती चूना तुरन्त घुल व पच जाता है. • जैसे किसी को पीलिया हो जाये माने जॉन्डिस उसकी सबसे अच्छी दवा है चूना गेहूँ के दाने के बराबर चूना गन्ने के रस में मिलाकर पिलाने से बहुत जल्दी पीलिया ठीक कर देता है. • ये ही चूना नपुसंकता की सबसे अच्छी दवा है अगर किसी के शुक्राणु नही बनता उसको अगर गन्ने के रस के साथ चूना पिलाया जाये तो साल डेढ़ साल में भरपुर शुक्राणु बनने लगेंगे, और जिन माताओं के शरीर में अन्डे नही बनते उनकी बहुत अच्छी दवा है ये चूना. • विद्यार्थीयों के लिये चूना बहुत अच्छा है जो लम्बाई बढ़ाता है. • गेहूँ के दाने के बराबर चूना रोज दही में मिला के खाना चाहिए, दही नही है तो दाल में मिला के खाओ, दाल नही है तो पानी में मिला के पियो– इससे लम्बाई बढ़ाने के साथ स्मरण शक्ति भी बहुत अच्छा होता है. • जिन बच्चों की बुद्धि कम काम करती है मतिमन्द बच्चे उनकी सबसे अच्छी दवा है चूना जो बच्चे बुद्धि से कम है, जिन बच्चो का दिमाग देर में काम करता है, देर में सोचते है हर चीज उनकी स्लो है, उन सभी बच्चे को चूना खिलाने से अच्छे हो जायेंगे. • बहनों को अपने मासिक धर्म के समय अगर कुछ भी तकलीफ होती हो तो उसका सबसे अच्छी दवा है चूना. हमारे घर में जो मातायें है जिनकी उम्र पचास वर्ष हो गयी और उनका मासिक धर्म बंध हुआ उनकी सबसे अच्छी दवा है चूना. • गेहूँ के दाने के बराबर चूना हर दिन खाना दाल में, लस्सी में, नही तो पानी में घोल के पीना. जब कोई माँ गर्भावस्था में है तो चूना रोज खाना चाहिए क्योंकि गर्भवती माँ को सबसे ज्यादा कैल्शियम की जरूरत होती है और चूना कैल्शियम का सबसे बड़ा भन्डार है. गर्भवती माँ को चूना खिलाना चाहिए अनार के रस में अनार का रस एक कप और चूना गेहूँ के दाने के बराबर ये मिला के रोज पिलाये नौ महीने तक लगातार दीजिये तो चार फायदे होंगे– पहला फायदा:– माँ को बच्चे के जन्म के समय कोई तकलीफ नही होगी और नॉर्मल डिलिवरी होगी, दूसरा:– बच्चा जो पैदा होगा वो बहुत हष्ट पुष्ट और तन्दुरूस्त होगा, तीसरा:– बच्चा बहुत होशियार होता है बहुत Intelligent और Brilliant होता है उसका IQ बहुत अच्छा होता है., चूना घुटने का दर्द ठीक करता है, कमर का दर्द ठीक करता है, कन्धे का दर्द ठीक करता है, एक खतरनाक बीमारी है Spondylitis वो चूने से ठीक होता है. कई बार हमारे रीड़ की हड्डी में जो मनके होते है उसमे दूरी बढ़ जाती है Gap आ जाता है. ये ठीक करता है. उसको रीड़ की हड्डी की सब बीमारियाँ ठीक होती है. अगर आपकी हड्डी टूट जाये तो टूटी हुई हड्डी को जोड़ने की ताकत सबसे ज्यादा चूने में है. चूना खाइए सुबह को खाली पेट., मुँह में ठंडा गर्म पानी लगता है तो चूना खाओ बिलकुल ठीक हो जाता है., मुँह में अगर छाले हो गए है तो चूने का पानी पियो तुरन्त ठीक हो जाता है. शरीर में जब खून कम हो जाये तो चूना जरूर लेना चाहिए, एनीमिया है खून की कमी है अनार के रस में अनार के रस में चूना पिये खून बहुत बढ़ता है, बहुत जल्दी खून बनता है एक कप अनार का रस गेहूँ के दाने के बराबर चूना सुबह खाली पेट. घुटने में घिसाव आ गया और डॉक्टर कहे के घुटना बदल दो तो जरूरत नही चूना खाते रहिये और हरसिंगार के पत्ते का काढ़ा खाइये घुटने बहुत अच्छे काम करेंगे.

अधिक न हो जाए कैल्शियम की खुराक

कैल्शियम सप्लीमेंट की निर्माता कंपनियाँ हड्डियों की मजबूती के लिए कैल्शियम के नियमित सेवन को प्रोत्साहित करने के लिए खूब विज्ञापन करती हैं. इसकी कमी से भविष्य में हड्डियों के भुरभुरा या कमजोर हो जाने के तथ्य को भी खूब प्रचारित किया जाता है. लेकिन इसकी अति यानी ओवरडोज नुकसानदायक भी हो सकती है, इस बात का जिक्र शायद ही किसी कंपनी के विज्ञापन में मिलता हो. अधिकता से नुकसान– कुछ समय पहले न्यूजीलैंड की एबरडीन और ऑकलैंड यूनिवर्सिटी द्वारा किए गए शोध के नतीजों पर यकीन करें, तो महिलाओं को बिना सोचे–समझे कैल्शियम की गोलियाँ गटकने से बचना चाहिए. 'ब्रिटिश मैडीकल जर्नल' में प्रकाशित इस शोध में दावा किया गया है कि हड्डियों का घनत्व बढ़ाने के लिए जो महिलाएँ कैल्शियम सप्लीमेंट का सेवन करती हैं, उनके रक्त में कई बार कैल्शियम की अतिरिक्त मात्रा रहती है. इस स्थिति को हायपर कैल्शियम कहते हैं. ऐसी महिलाओं में हार्ट अटैक की आशंका तीस फीसदी तक ज्यादा हो सकती है. शोधकर्त्ता इआन रीड कहते हैं कि अतिरिक्त कैल्शियम ब्लॉक के रूप में जमा होकर रक्त धमनियों को ब्लॉक कर सकता है. कोई भी कैल्शियम सप्लीमेंट निर्माता (चाहे व एनर्जी ड्रिंक की शक्ल में या टेबलेट के रूप में हो) इसकी अधिकता से जुड़े खतरों से आगाह करने वाली सूचना अपने उत्पाद के साथ पेश नहीं करता. जबकि निर्माता कंपनी को लेबल पर खुराक आदि से संबंधित पूरी सूचना देनी चाहिए और अधिकता के नुकसानों के प्रति सचेत करना चाहिए. इन चिंताओं के संबंध में अस्थिरोग विशेषज्ञ कहते हैं, 'ब्लड स्ट्रीम में अतिरिक्त कैल्शियम आमतौर पर लिवर और किडनी द्वारा मेटाबोलाइज्ड कर दी जाती है, इससे हाइपर कैल्शियम का खतरा कम हो जाता है, लेकिन इन दोनों अंगों के दुरूस्त न रहने या फिर पथरी स्टोन होने की संभावना हो, तो ऐसे व्यक्ति को कैल्शियम सप्लीमेंट लेते समय बेहद सावधानी बरतनी चाहिए. महिलाओं में लोकप्रिय– विशेष रूप से महिलाओं में कैल्शियम सप्लीमेंट की लो. कप्रियता अधिक है, क्योंकि वैश्विक स्तर पर हर तीन में से एक महिला ओस्टियोपोरोसिस का शिकार हो जाती है. ऐसे में 35 साल से अधिक उम्र की महिलाओं को कैल्शियम टेबलेट्स लेने की सलाह दी जाती है. 45 वर्ष के बाद, रजोनिवृत्ति की उम्र में कैल्शियम की कमी की भरपाई करना मुश्किल हो जाता है. जरूरी है विटामिन 'डी' का कांबिनेशन– चिकित्सकों के अनुसार विटामिन 'डी' से रहित कैल्शियम सप्लीमेंट का सेवन नहीं करना चाहिए. यह हानिकारक हो सकता है. उपभोक्ता को सतर्कतापूर्वक जाँच लेना चाहिए कि जो उत्पाद वे खरीद रहे हैं उसमें विटामिन 'डी' और कैल्शियम का कांबिनेशन है या नहीं. क्योंकि विटामिन 'डी' कैल्शियम को अवशोषित करने के लिए जरूरी है. वैसे तो भारत एक ट्रॉपिकल देश है और यहाँ सूर्य की रोशनी या धूप से विटामिन 'डी' प्राप्त किया जा सकता है, लेकिन अधिकांश महिलाओं में इसकी कमी रहती है क्योंकि वे धूप से दूर रहती हैं और व्यायाम नहीं करतीं. आर्थराइटिस फाउंडेशन ऑफ इण्डिया के चेयरपर्सन डॉ० सुशील शर्मा के अनुसार, 'भारत में बहुसंख्य महिलाएँ कैल्शियम और विटामिन 'डी' की कमी का शिकार हैं. औसतन एक स्वस्थ महिला को 1000 मि.ग्रा. कैल्शियम (प्रतिदिन) की जरूरत होती है, लेकिन खुराक से उन्हें 400–500 मि.ग्रा. कैल्शियम ही मिल पाता है (वह भी तब, यदि वे दो गिलास दूध, पनीर, दही आदि का सेवन करें), इससे 500 मि.ग्रा. की कमी रह जाती है. विटामिन 'डी' भी 30 नैनोग्राम होना चाहिए, जबकि यह 4–12 के आसपास ही रहता है. सप्लीमेंट पर्याप्त नहीं– क्या सिर्फ कैल्शियम सप्लीमेंट के सेवन से ओस्टियोपोरोसिस की रोकथाम की जा सकती है? नहीं, प्रीमेनोपॉज एवं मेनोपॉज से गुजरने वाली महिलाओं में इस्ट्रोजन हार्मोन का स्तर गिर जाता है. इसके अलावा प्रोटीन की कमी भी इसका सबब हो सकती है. इसलिए कैल्शियम सप्लीमेंट लेने से पहले अपने डॉक्टर से सलाह जरूर लें. वे आपकी जरूरत बेहतर समझते हैं.

ऑनलाइन दवाइयों की बिक्री का किया बहिष्कार

मीडिया हाउस को मिली जानकारी सतिश कपूर मो० 09814719692 के द्वारा पंजाब केमिस्ट एसोसिएशन ने अवैध ढंग से हो रही दवाइयों की ऑनलाइन बिक्री के खिलाफ जोनल लाइसेंस अथॉरिटी राजेश सूरी व जिला ड्रग इंस्पेक्टर जनक राज को ज्ञापन सौंपा. एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष सतीश कपूर व शहरी अध्यक्ष प्रभजिंदर आनंद ने कहा कि पहले ही पंजाब में नशे की तस्करी बहुत अधिक है. अब ऑनलाइन दवाइयों की आड़ में नशे का कारोबार चलाया जाने लगा है. यह हमारे समाज के लिए बहुत बड़ी चिंता का कारण है. उन्होने याद दिलाया कि हमारे यहा ऑनलाइन बिक्री का कोई कानून नहीं है. ड्रग एंड कॉस्मेटिक एक्ट 1949 के अनुसार ऑनलाइन दवाइयां इस एक्ट की अवहेलना है. केमिस्ट एसोसिएशन ने कहा दिल्ली हाईकोर्ट के आदेशों पर ड्रग कंट्रोलर जनरल इंडिया वीसी सीमानी ने पिछले 28 नवम्बर को एक पत्र जारी करके सभी राज्यों के ड्रग कंट्रोलरों को निर्देश जारी किए थे कि बिना लाइसेंस के गैर कानूनी ढंग से ऑनलाइन की दवाई बिक्री का कारोबार करने वालो के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी. उन्होने पंजाब सरकार से मांग की कि दवाइयों की गैर कानूनी ढंग से हो रही बिक्री पर अंकुश लगाया जाए. इस अवसर पर एसोसिएशन के चेयरमैन राकेश नंदा, संजीव कपूर महासचिव, जिला मीडिया इंचार्ज मुकेश शर्मा, दीपक शर्मा आदि भी उपस्थित थे.

कैमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट फेडरेशन

आजमगढ़ जिले के अध्यक्ष व केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट फेडरेशन, उत्तर प्रदेश के नामित संगठन मंत्री सुधीर अग्रवाल द्वारा सी.डी.एफ.यू.पी. के वरिष्ठ पदाधिकारियों के विरूद्व भ्रामक व अर्न्तगत आरोप लगाकर फेडरेशन से सम्बद्व जिला इकाईयों के वरिष्ठ पदाधिकारियों को गुमराह करने का प्रयास किया जा रहा है. वाराणसी जिला इकाई ने उनके द्वारा लगाए गए समस्त आरोपों पर चर्चा की और इस निष्कर्ष पर पहॅची कि श्री अग्रवाल फेडरेशन को कमजोर करने के उद्देश्य से कुछ जिले के कागज पर विरोधी संगठन चलानेवालों से सॉठ–गॉठ कर विशुद्व रूप से संगठन को कमजोर करने का प्रयास कर रहे हैं. केमिस्ट की प्रत्येक सालाना बैठक में लेखा–जोखा पास होता आया है, जिसकी कॉपी भी सभी सदस्यों को मौके पर एवं डाक–कोरियर द्वारा भेजी भी जाती रही है और संगठन मंत्री महोदय की स्वीकृति भी रहती थी, अब यह अचानक अपने निजी स्वार्थवश फेडरेशन के वरिष्ठ पदाधिकारियों के विरूद्व अर्न्तगत प्रलाप व मिथ्या कर फेडरेशन की छवि को धूमिल करने का प्रयास कर रहे हैं. सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि फेडरेशन के खातों का संचालन कैसे होगा, कौर करेगा यह उन्हे अच्छी तरह मालूम है, फेडरेशन की संविधान की प्रति भी हमेशा उनके पास मौजूद रहती है, फेडरेशन के खातों का संचालन आइने की तरह साफ है.

Alcohol Abuse Increases Risk of Heart Conditions

Washington D.C. (USA):- Think before you booze! It might lead to heart attack. A new study says that alcohol abuse increases the risk of atrial fibrillation, heart attack and congestive heart failure, as much as other well-established risk factors such as high blood pressure, diabetes, smoking and obesity. The study has been published in the Journal of the American College of Cardiology. Despite advances in prevention and treatments, heart disease is the No. 1 killer of men and women in the US. Reducing alcohol abuse might result in meaningful reductions of heart disease, according to the researchers. "We found that even if you have no underlying risk factors, abuse of alcohol still increases the risk of these heart conditions," said lead researcher Gregory M. Marcus. The researchers analysed data from a database of all California residents ages 21 and older who received ambulatory surgery, emergency or inpatient medical care in California between 2005 and 2009. Among the 14.7 million patients in the database, 1.8 percent, or approximately 268,000, had been diagnosed with alcohol abuse. The researchers found that after taking into account other risk factors, alcohol abuse was associated with a twofold increased risk of atrial fibrillation, a 1.4-fold increased risk of heart attack and a 2.3-fold increased risk of congestive heart failure. These increased risks were similar in magnitude to other well-recognized modifiable risk factors such as diabetes, high blood pressure and obesity. Completely eradicating alcohol abuse would result in over 73,000 fewer atrial fibrillation cases, 34,000 fewer heart attacks, and 91,000 fewer patients with congestive heart failure in the United States alone, the researchers said. "We were somewhat surprised to find those diagnosed with some form of alcohol abuse were at significantly higher risk of a heart attack," Marcus said. "We hope this data will temper the enthusiasm for drinking in excess and will avoid any justification for excessive drinking because people think it will be good for their heart. These data pretty clearly prove the opposite." Previous research has suggested that moderate levels of alcohol consumption may help prevent heart attack and congestive heart failure, while even low to moderate levels of alcohol consumption have been shown to increase the incidence of atrial fibrillation. "The great majority of previous research relied exclusively on self-reports of alcohol abuse," Marcus said. "That can be an unreliable measure, especially in those who drink heavily. In our study, alcohol abuse was documented in patients' medical records." He said that the study did not quantify how much alcohol patients drank. In an editorial accompanying the new study, Michael H. Criqui, of the University of California San Diego, wrote that previous studies that found a benefit from alcohol consumption in protecting against heart attack and congestive heart failure were so-called cohort studies, which include defined populations. Such studies tend to recruit stable, cooperative and health-conscious participants who are more likely to be oriented toward a healthier lifestyle. "Cohort studies have minimal participation by true alcohol abusers, so the current study likely presents a more valid picture of heavy drinking outcomes," Criqui said.

Happy Birthday

D.O.B.	NAME	FIRM	MOB.	CITY	STATE
01.09.76	SHRI AMIT KUMAR JI	DEVI SREE MEDICOSE	9891508495	GHAZIABAD	UTTAR PARDESH
02.09.62	SHRI SHRI ANJEEV KUMAR SAINI JI	SANI MEDICOS	9414164189	UDAIPUR	RAJESTHAN
03.09.71	SHRI AVNISH KUMAR JI	BABU MADICAL STORE	9839130517	HARDOI	UTTAR PRADESH
04.09.74	SHRI ABHAY K. GUGALE JI	SUBHA SHRI ENTERPRISES	9730449555	PUNA	MADHYA PRADESH
05.09.71	SHRI AJAY KUMAR JI	NEW DAVDAS PHARMA	9334127547	PATNA	BIHAR
05.09.84	SHRI ANIL KUMAR GUPTA JI	ANIL DURG STORE	9451550421	SULTANPUR	UTTAR PRADESH
06.09.77	SHRI ANURAJ BURMAN JI	A.A. DRUP AGENCION	9005236223	VARANSI	UTTAR PRADESH
07.09.85	SHRI ARVIND RAWAL JI	NEW LIFE CHEMIST	9320417979	MUMBAI	MAHARASHTRA
08.09.83	SHRI AJAY KUMAR JAISWAL JI	RAJ MEDICAL STORE	9452125910	GORAKHPUR	UTTAR PRADESH
10.09.89	MOHD.ALVI	SHIFA MEDICAL STORE	9927793166	HARIDWAR	UTTRAKHAND
11.09.83	MOHD AAMIN KHAN	RAJDHANI MEDICAL STORE	9828653302	JHUNJHUNE	RAJESTHAN
13.09.91	SHRI ANKIT AGARWAL JI	DRONA MEDICOS	9756506915	DHARADON	UTTRAKHAND
14.09.87	SHRI ADITYA GOLANI JI	GURU KIRPA ENTERPREES	7566194020	INDORA	MADHYA PRADESH
15.09.77	SHRI ANIL SINGHVI JI	NEW MAHABIR MEDICAL STORE	9929509587	CHITTORGARH	RAJESTHAN
15.09.76	SHRI AJAY KMAR JI	LITE CARE PHARMA	8410224515	SAHARANPUR	UTTAR PRADESH
17.09.79	SHRI ANIL KUMAR JI	ANIL MEDICAL HALL	9896435124	CHARKHI DADRI	HARYANA
20.09.81	SHRI ATUL JUGSL KISHORE JI	PAWAN AGENCICS	9421052400	PUNA	MADHYA PRADESH
25.09.80	SHRI AJAY JAIN JI	ROYAL CHEMIST	9828141317	UDAYPUR	RAJESTHAN
30.09.79	SHRI AMIT JAISWAL JI	PHARMA BIOTEEN	9898065950	AMAMEDABAD	GUJRATA
03.10.55	SHRI A.A. THOMAS JI	SHRI A.A. THOMAS JI	9594016464	THANE	MAHARASHTRA
13.10.77	SHRI ABHISHEK VORA JI	NEW HINDUSTAN AGENCIES	9420684002	WARDHA	MAHARASHTRA
17.10.75	SHRI AMIT GARG JI	SHOL HELTH CARE INDIA (P)LTD	9219504233	UDHAM SINGH NAGAR	UTTRAKHAND
17.10.82	SHRI ABHAY JAIN JI	SHASHVAT TRADERS	9837183479	ROORHEE	UTTRAKHAND
18.10.60	SHRI ANAND K.R. AGARWAL JI	KUNJ BIHRI ENTERPRISES	9334377572	SAMASTIPUR	BIHAR
19.10.47	SHRI ASHOK LUTHRA JI	HARYANA MEDICAL STORE	9818637124	FARIDABAD	HARYANA

मैडीकल दर्पण मीडिया हाऊस की तरफ से आप सभी को जन्म दिन की हार्दिक शुभकामनायें

01 सितम्बर से 29 सितम्बर तक के त्यौहार

01.09.2020	अनन्त चतुर्दशी, गणेश विसर्जन, पूर्णिमा उपवास, पूर्णिमा श्राद्ध
02.09.2020	भाद्रपद पूर्णिमा, प्रतिपदा श्राद्ध
03.09.2020	आश्विन प्रारम्भ, उत्तर, द्वितीया श्राद्ध
05.09.2020	तृतीया श्राद्ध,
06.09.2020	चतुर्थी श्राद्ध
07.09.2020	महाभरणी, पंचमी श्राद्ध
08.09.2020	षष्ठी श्राद्ध, मासिक कार्तिगाई
09.09.2020	सप्तमी श्राद्ध
10.09.2020	अष्टमी श्राद्ध, जीवितपुत्रिका व्रत, कालाष्टमी, महालक्ष्मी व्रत पूर्ण,
11.09.2020	नवमी श्राद्ध
12.09.2020	दशमी श्राद्ध
13.09.2020	इन्दिरा एकादशी, एकादशी श्राद्ध
14.09.2020	द्वादशी श्राद्ध
15.09.2020	मघा श्राद्ध, त्रयोदशी श्राद्ध, प्रदोष व्रत, मासिक शिरात्रि
16.09.2020	चतुर्दशी श्राद्ध, कन्या संक्रान्ति, विश्वकर्मा पूजा
17.09.2020	अश्विन अमावस्या, सर्वपित्री दर्श अमावस्या, सर्वपित्रू अमावस्या
18.09.2020	अधिक मास प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन
20.09.2020	विनायक चतुर्थी
22.09.2020	स्कन्द षष्ठी
24.09.2020	मासिक दुर्गाष्टमी
27.09.2020	पद्मिनी एकादशी
29.09.2020	प्रदोष व्रत

रामभरोसे चल रहा जीवनज्योत अस्पताल

पंजाब:- प्रेस सचिव पंजाब केमिस्ट एसोसिएशन पटियाला श्री हंसराज मेहता मो. 9814132529 के द्वारा क्वालीफाई डॉक्टर के बगैर ही चल रहा है जीवनज्योत मल्टीस्पेशलिटी अस्पताल. ड्राईवर और सहायक के द्वारा हीं मरीजो का उपचार हो रहा हैं. अस्पताल में मरीजों का इलाज हेल्पर के भरोसे ही चल रहा है. अस्पताल में जब स्वास्थ्य विभाग ने छापा मारा तब 13 मरीज भर्ती थे जिनमें से 5 मरीजों के ऑपरेशन भी हुए. स्वास्थ्य विभाग ने सहायक सिविल सर्जन डॉ. रमेश कुमार की अगुवाई में यहां छापेमारी कर कई खामियां उजागर कीं. अगर अस्पताल में ऐसा ही चलता रहा है तो मरीजों की जान भी जान सकती हैं. हांलाकि सिविल सर्जन डॉ. प्रभदीप कौर को लिखित शिकायत मिली थी कि जीवनज्योत अस्पताल में भारी कमियां चल रही हैं. स्वास्थ्य विभाग जब टीम अस्पताल पहुंची तब अस्पताल में न तो डॉक्टर था और न ही फार्मासिस्ट. लेबोरेट्री खुली थी, लेकिन उसमें कोई लैब टेक्निशियन नहीं था. अस्पताल के मैडीकल स्टोर में दवा वितरण करने के लिए फार्मासिस्ट भी नहीं था. जब स्वास्थ्य विभाग ने छापा मारा तब वहां हरपाल सिंह नामक व्यक्ति पहुंचा उसने खुद को अस्पताल का मालिक बताया. टीम ने उससे डॉक्टर न होने की पूछा तो उसने कहा है डॉक्टर शाम को आते हैं. टीम ने डॉक्टर का रिकॉर्ड दिखाने को कहा, पर हरपाल सिंह रिकॉर्ड नहीं दिखा पाएं. सहायक सिविल सर्जन ने डॉ. रमेश को कड़ी फटकार लगाते हुए चेतावनी दी. कि भविष्य में ये सब दोबारा ना दोराया ना जाएं.

लांच हुआ पहला वैक्सीनेशन क्लिनिक, घर-घर जाकर नवजातों को लगाएगा टीके

यह देश मे पहली बार हुआ है कि अब नवजातों को टीके लगवाने के लिए आपको अस्पताल नही जाना पड़ेगा. अब टीके लगाने के लिए ऐसा क्लिनिक तैयार किया है जो घर, स्कूल, कॉलेज और दफ्तरों में जाकर नवजातों शिशुओं का टीकाकरण करेगा. वैक्सीनेशन ऑन व्हील्स नाम के इस प्रोजेक्ट की शुरूआत पुणे से हो रही है. कैसे पहुंचेगा क्लिनिक घर तक- वैक्सीनेशन ऑन व्हील्स दरअसल एक वाहन में तैयार क्लिनिक है जिसमें बच्चों को लगने वाले टीके मौजूद होंगे. इन चलते-फिरते क्लिनिक को सबसे पहले इन इलाकों मे भेजा जाएगा जहां पर टीकाकरण की दर कम है और दूर के इलाकों में मौजूदा स्कूलों और कॉलेजों में इस क्लिनिक को बड़े आसानी से पहुंचाया जा सकेगा. महिलाओं के ऑफिस में भी इस क्लिनिक को पहुंचाकर टीका दिया जा सकता है. इस नए चलते-फिरते क्लिनिक की शुरूआत पुणे से की जा रही है. आई आई टी हैदराबाद स्थानीय नगर निगम के साथ मिलकर नया वैक्सीनेशन क्लिनिक चलाएगी. एक बार इसका सफल परीक्षण हो जाने के बाद इसे पूरे देश में लागू करने की योजना है. टीकाकरण का यह तरीका अच्छा साबित होगा- एक जानकार के अनुसार यह क्लिनिक टीकाकरण जागरूकता का काम भी कर सकता है. जिन इलाकों से स्वास्थ्य केंद्र दूर हैं वहां पर पहुंचा पाना इस क्लिनिक को सम्भव है. इससे लोगों को काफी राहत दी जा सकती हैं.

ड्रग लाइसेंस के नवीनीकरण के समाप्त होने के बाबजूद रिन्यूअल के नाम पर दवा विक्रेताओं के उत्पीड़न

भारत सरकार द्वारा ड्रग एंड कॉस्मेटिक रूल्स 1945 में संशोधन कर ड्रग लाइसेंस के नवीनीकरण को समाप्त करते हुये एक अधिसूचना जारी की गई थी. जिसमें जहां जहां नवीनीकरण शब्द आए है अथवा नवीनीकरण की प्रक्रिया है. उसे रिमूव करते हुए उसकी जगह रिटेंशन शब्द जोड़ा गया अर्थात अब हर पांच साल बाद केवल फीस जमा कर चालान की मूल कॉपी को अपने पास रखना है. जिससे आपके लाइसेंस की अबधि बढ़ती रहे अर्थात नवीनीकरण के लिये जो फॉर्म 19 भरना पड़ता था उसे भी भारत सरकार ने समाप्त कर दिया था. लेकिन खादय सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन उत्तर प्रदेश द्वारा उक्त के विरुद्ध नवीनीकरण की प्रक्रिया को भी जटिल प्रक्रिया को अपने पोर्टल पर डाल दिया गया जिसके विरुद्ध रामपुर केमिस्ट ऐसोसिएशन के जिला अध्यक्ष जयदीप कुमार गुप्ता ने माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद की लखनऊ खंडपीठ में एक रिट याचिका डाली गई जिसको माननीय उच्च न्यायालय ने गंभीरता से लेते हुए अपना अंतरिम आदेश पारित कर दिया. जिसकी अगली सुनवाई फरवरी 2020 में होनी है उक्त आदेश को लेकर उत्तर प्रदेश के दवा विक्रेताओं में खुशी की लहर दौड़ पड़ी. - जयदीप मो॰ 9456016260

हाथों में झनझनाहट हो सकती है ये गंभीर बीमारी

कम्प्यूटर या लैपटॉप पर लंबे समय तक काम करने से कई बार हाथों में झनझनाहट और कलाई का दर्द जैसी समस्यायें देखी जा रही हैं. मैडीकल की भाषा में इसे कार्पल टनल कहते हैं. इस रोग के लक्षणों को पहचानने के बाद बिल्कुल भी लापरवाही न बरतें. आजकल लोगों में हाथ व कलाई का दर्द एक आम बीमारी बनता जा रहा है. मैडीकल की भाषा में इसे कार्पल टनल सिंड्रोम कहते है. इसे रोग में जब अन्य कोशिकायें जैसे कि लिगामेंट्स और टेंडन सूज या फूल जाते हैं तो इसका प्रभाव मध्य कोशिकाओं पर पड़ता है. इस दबाव से हाथ घायल या सुन्न महसूस करता है. कार्पल टनल हड्डियों और कलाई की अन्य कोशिकाओं द्वारा बनाई गई एक संकरी नली होती है. यह नली हमारी मध्य नाड़ी की सुरक्षा करती है. मध्य नाड़ी हमारे अँगूठे, मध्य और रिंग अंगुलियों से जुड़ी होती है. साधारणतया कार्पल टनल सिंड्रोम ज्यादा गंभीर बीमारी नहीं है. इलाज से यह रोग दूर हो जाता है. एक ही हाथ से लगातार काम करने से कार्पल टनल सिंड्रोम की परेशानी हो सकती है. यह सामान्यतया उन लोगों में अधिकतर पाया जाता है जिनके पेशे में कलाई को मोड़ने के साथ पिंचिंग या ग्रीपिंग करने की जरूरत होती है. पुरूषों की तुलना में औरतों को इसका तिगुना खतरा रहता है. औरतों में यह सामान्यतया पर गर्भावस्था के दौरान, मेनोपाज और वजन बढ़ने के कारण भी होता है. इसमें वे लोग भी शामिल हैं जो कम्प्यूटर पर कार्य करते हैं. इसके अलावा कारपेन्टर, मजदूर, संगीतकार, मैकेनिक, बागवानी करने वाले, सुई का इस्तेमाल करते हुये कई घंटों तक काम करने, गोल्फ खेलने और नाव चलाने का शौक रखने वाले भी कार्पल टनल सिंड्रोम का शिकार हो सकते हैं. यह सिंड्रोम कुछ बीमारियों से भी सम्बन्धित होता है जैसे मधुमेह, आर्थराइटिस या थायरॉइड आदि. यह रोग सबसे पहले इंडेक्स (तर्जनी) या मिडिल फिंगर (मध्यमा) को प्रभावित करता है. जिसमें इन अंगुलियों में जलन होने लगती है. धीरे-धीरे यह समस्या दर्द में बदल जाती है और फिर यह दर्द अंगुलियों से कलाई और कंधों तक पहुँच जाता है. दिन की तुलना में रात के समय यह समस्या ज्यादा परेशान करती है. कोई भी वस्तु उठाते समय अधिक परेशानी होना. अंगूठे में कमजोरी महसूस करना. यदि यह रोग किसी बीमारी की वजह से है तो डॉक्टर सबसे पहले उस समस्या का इलाज करते हैं. फिर वह कलाई को आराम देने के लिये हाथों के सही मूवमेंट की सलाह देते हैं. कलाई में स्प्लिंट बांधने को भी कहा जा सकता है. कलाई पर बर्फ रखकर सेंक कर सकते है. डॉक्टर द्वारा बताई गई स्ट्रेचिंग एक्सरसाइज से भी लाभ होता है. एक हाथ के बजाय दोनों हाथों को बराबर काम में लें. ज्यादा देर तक अपनी कलाई को नीचे झुकाकर न रखें. हाथों को दबाकर न सोयें. हाथ की नसों पर दबाव पड़ने से समस्या हो सकती है. हाथ, कलाई और अंगुलियों का व्यायाम करना बहुत जरूरी होता है. बिना व्यायाम के आपकी कलाई कठोर हो सकती है. समय-समय पर हाथों की मसाज भी जरूर करें. कुछ मामलों में इस बीमारी को पूरी तरह से खत्म करने के लिये सर्जरी की जरूरत होती है. सर्जरी के कुछ हफ्तों या महीनों बाद वापस कलाई व हाथ का सामान्य रूप से इस्तेमाल कर सकते हैं. इसकी जाँच प्रक्रिया में सबसे पहले हाथ को ऐसी मशीन में डाला जाता है जिसमें कुछ दर्द या बिजली के झटके जैसी झनझनाहट महसूस होती है. इसके अलावा नाड़ी की जाँच या इलेक्ट्रोमायोग्राफी जाँच करवाई जाती है. यह देखने के लिये कि आपके हाथों और बाजुओं की नाड़ी व मांसपेशिया किसी प्रकार के कार्पल टनल सिंड्रोम के प्रभावों को दिखा रही है या नहीं.

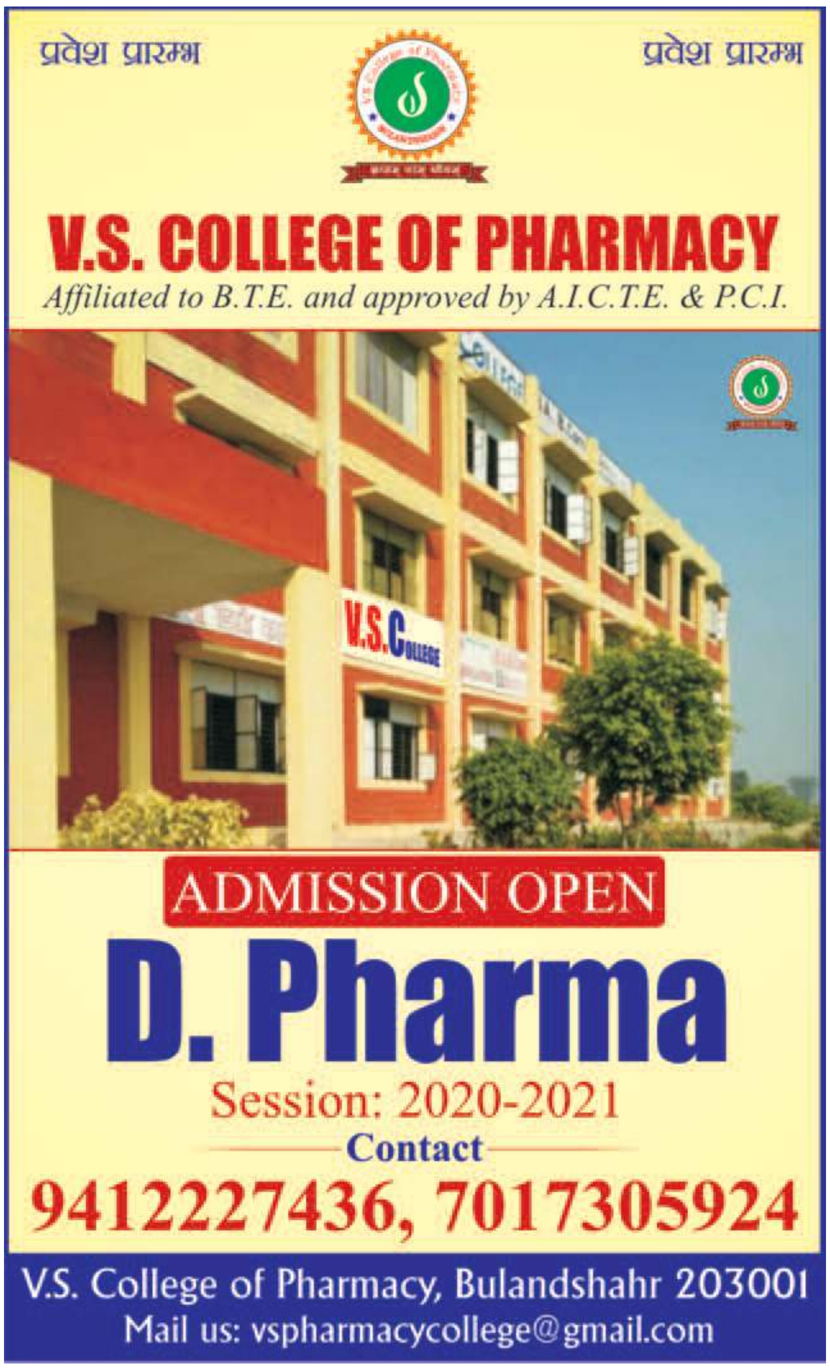

प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना से जुड़ेगी सिप्ला

प्रमुख औषधि कम्पनी सिप्ला केन्द्र सरकार की प्रमुख योजना आयुष्मान भारत के लिए दवाओं की आपूर्ति के लिए सरकार के साथ साझेदारी करने की योजना बना रही है. इसके तहत कम्पनी न केवल जीवन रक्षक आवश्यक दवाओं की आपूर्ति करेगी बल्कि उसके लिए पूरी स्वास्थ्य सेवा वातावरण को बेहतर करेगी. साथ ही कंपनी इस कार्यक्रम के तहत बिक्री के लिए दवाओं की अलग से ब्रांडेड पैकेजिंग करने की भी योजना बना रही है और इस योजना से सम्बद्ध बीमा कम्पनियों एवं अस्पतालों के साथ बातचीत करने के लिए तैयार है. कंपनी ने एचआईवी-एड्स के लिए एक डॉलर प्रति दिन से कम कीमत पर दवा उपलब्ध कराते हुए बाजार में उथल-पुथल मचा दिया था. अब उसने सस्ती दवाओं पर पहुंच सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार के साथ साझेदारी करने की योजना बनायी. सिप्ला के कार्यकारी उपाध्यक्ष और भारतीय कारोबार के प्रमुख निखिल चोपड़ा ने कहा है हम उस क्षेत्र में भी संभावनाएं तलाश रहे हैं जहां हम डॉक्टर से लेकर नर्स, पेरामैडीकल, आपूर्ति श्रृंखला और उपलब्धता में सुधार सहित पूरे स्वास्थ्य सेवा वातावरण में संसाधनों को अधिक कुशल बनाने के लिए सरकार के साथ सझेदारी कर सकते हैं. चोपड़ा ने कहा है कि कंपनी ने इस मुद्दे पर चर्चा के लिए आयुष्मान भारत के प्रमुख इंदु भूषण से जल्द मुलाकात करने की योजना बनाई है. वह ऐसे मॉडल के लिए बातचीत करेंगे जहां सिप्ला जैसी कोई औषधि कंपनी इस कार्यक्रम में भागीदारी कर सकती है ताकि सस्ती दवाओं तक पहुंच और उसकी उपलब्धता सुनिश्चित हो सके. इसके तहत जीवन रक्षक आवश्यक दवाओं की सूची की पहचान की जाएगी जिसमें एंटीबायोटिक्स, दर्द निवारक, इंजेक्शन आदि दवाएं शामिल होंगी. कंपनी इन दवाओं की आपूर्ति आयुष्मान भारत से सम्बद्ध अस्पतालों को करेगी. इन दवाओं की पैकेजिंग सिप्ला की सामान्य पैकेजिंग से अलग हो सकती है. सिप्ला बाजार के निचले स्तर पर संभावनाएं तलाश रही है. आयुष्मान भारत कार्यक्रम के तहत गंभीर बीमारियों से ग्रस्त 15 लाख नए रोगी और 85 लाख बिना गंभीर बीमारियों से ग्रस्त रोगी सामने आए हैं. इससे स्वास्थ्य सेवा पर खर्च में 40 करोड़ डॉलर की वृद्धि हुई है. एक आकलन के अनुसार आयुष्मान भारत के लिए बाजार के आकार में वृद्धि वित्त वर्ष 2021 तक 2.2 अरब डॉलर हो सकती है. इनफॉर्मा मार्केट्स के भारत में एमडी योगेश मुद्रास ने कहा कि कि आयुष्मान भारत योजना का दायरा कहीं अधिक व्यापक होगा और उसके दायरे में काफी रोगी पंजीकृत होंगे. इस प्रकार यह भारतीय औषधि कंपनियों के लिए भविष्य की वृद्धि का एक प्रमुख क्षेत्र बन सकता है. आयुष्मान भारत अभी तक अस्पतालों तक सीमित है. सिप्ला का कहना है कि उसके पास करीब 60 वितरक ऐसे हैं जो अस्पतालों को विशेष तौर पर आपूर्ति करते हैं. इसके अलावा कंपनी के प्रेस्क्रिप्शन कारोबार के लिए करीब 3,000 वितरक और जेनेरिक कारोबार के लिए करीब 5000 वितरक मौजूद हैं. कंपनी के जेनेरिक कारोबार का आकार करीब 1500 करोड़ रुपये है और गैर-ब्रांडेड जेनेरिक दवाओं की बिक्री के संदर्भ में सिप्ला अग्रणी घरेलू औषधि कंपनी है. चोपड़ा का कहना है कि इस कार्यक्रम के तहत दवाओं की खरीद के लिए बीमा कंपनियों और संबद्ध अस्पतालों से बातचीत के लिए कंपनी तैयार है. सिप्ला अपने घरेलू राजस्व का करीब पांचवां हिस्सा जेनेरिक दवाओं के कारोबार से हासिल करती है. जेनेरिक दवा कारोबार में गैर-ब्रांडेड दवाओं की बिक्री शामिल है. जेनेरिक दवाओं की बिक्री सीधे तौर पर वितरकों के जरिए की जाती है और उसकी मार्केटिंग के लिए मैडीकल रिप्रजेंटेटिव की सेवाएं नहीं ली जाती है.

ई-फार्मेसी के विरोध में कैमिस्ट देंगे ज्ञापन

अम्बाला, बृजेंद्र मल्होत्रा:- देश के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा ऑनलाइन फार्मेसी के जरिए ग्राहकों तक दवाइयां उपलब्ध करवाना अब टेढ़ी खीर हो गया है. पंजाब में युवा नशे की गिरफ्त में ना आए, इसके लिए पीसीए (पंजाब कैमिस्ट एसोसिएशन) ने पंजाब सरकार व पंजाब औषधि प्रशासन को ज्ञापन के माध्यम से मांग की कि अविलंब ऑनलाइन फार्मेसी द्वारा दवाइयां बेचने वालों के खिलाफ न्यायालय के आदेशों की पालना कर राज्य के युवाओं को नशे की गर्त में जाने से बचाने में सार्थक कदम उठाएं. उल्लेखनीय है कि ऑनलाइन फार्मेसी के माध्यम से मिलने वाली दवाओं व अन्य सामान के बारे मे बार-बार देशभर के कई कोनों से खुलासा हो चुका है कि ऑनलाइन फार्मेसी जहां बिना फार्मासिस्ट के दवा व्यापार करती है जो ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक एक्ट की अवहेलना भी है तथा ऑनलाइन के माध्यम से डुप्लीकेट व निम्न स्तर की दवाइयां रोगियों तक पहुंचाने का काम जाने अनजाने ऑनलाइन फार्मेसी द्वारा किया जा रहा है. अत: पंजाब में इस प्रकार के किसी भी प्रतिष्ठान की अविलंब पूर्ण रूप से बंद किया जाए. बीसीए के प्रदेश अध्यक्ष सुरेंद्र दुग्गल व राज्य महासचिव जीएस चावला के अनुसार शीघ्र ही जिला स्तर पर औषधि प्रशासन व राज्य सरकार के प्रशासनिक अधिकारियों को ज्ञापन के माध्यम से एक सूत्री कार्यक्रम चलाया जाएगा. राज्य के युवा ऑनलाइन फार्मेसी के माध्यम से नशे की दवाई की चपेट में ना आएं और रोगी जो कुछ छूट के लालच में ऑनलाइन फॉर्मा से निम्न स्तर की दवाइयां खरीद अपनी बीमारियों को और अधिक ना बढ़ा पाए. दुग्गल ने कहा कि राज्य के हर शहर कस्बे गांव स्तर पर रिटेल व होलसेल की दवाओं के विक्रय हेतु पंजाब केमिस्ट एसोसिएशन के सदस्य अपने व्यापारिक प्रतिष्ठान खुले हुए हैं जो आमजन की जरूरतों अनुसार दवा को दवा के रूप मे रोगियों तक पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं. यदि कोई दवा व्यवसाई दवा को नशे के रूप में किसी को भी उपलब्ध करवाता है. राज्य संगठन जिला संगठन स्थानीय संगठन किसी भी स्तर पर उस दवा व्यवसाई को संरक्षण नहीं देता, उल्टा सरकार व औषधि प्रशासन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर नशे को जड़ से मिटाने के लिए वचनबद्ध है.

चेहरे से दाग-धब्बे के नुस्खे

ब्लैक हैड्स:- यदि आपकी त्वचा तैलीय है तो आपके चेहरे पर कहीं भी ब्लैक हैड्स उभर सकते हैं. बेहतर होगा कि आप इन्हें किसी सौन्दर्य विशेषज्ञा से दूर कराएँ क्योकि आपके लिए इन्हें स्वयं दूर करना मुश्किल होगा. छिद्र फैल भी सकते हैं. यदि एक बार चेहरे पर से ब्लैक हैड्स दूर हो जाएँ तो सप्ताह में दो-तीन बार फेस मास्क अवश्य लगाएँ ताकि फिर चेहरे पर ब्लैक हैड्स न होने पाएँ. इस बीच तेल रहित फांउडेशन हमेशा उंगलियों के पोरों को गोल-गोल घुमाते हुए लगाएँ. **दाग-धब्बे:-** अक्सर लागों के चेहरे पर मुंहासों जैसे छोटे-छोटे दाने निकल आते हैं. दाना निकलते ही हम उसे दबाकर कील निकालने की कोशिश करते हैं. पर इन्हें दबाने और कील निकालने में संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है. बेहतर तो यही होगा कि दल फुंसियों पर आप कोई भी एंटीसंप्टिक लोशन या क्रीम लगाएँ और फिर फाउंडेशन लगाएँ. इसके अतिरिक्त रात में लोशन लगाकर सोएँ. **झुरियाँ:-** आँखों के इर्द-गिर्द लकीरों का उभरना चिंता. जनक होता है. क्यांकि ऐसा उम्र के बढ़ने के साथ होता हैं. आँखों के इर्द-गिर्द की त्वचा बहुत ही महीन और पतली होती है. इस पर बहुत ही कम तेल ग्रंथियाँ होती हैं. इसलिए अक्सर यहाँ की त्वचा का अतिरिक्त पोषण की आवश्यकता होती है. इस जगह आईक्रीम लगाना चाहिए. आँखों के इर्द-गिर्द बहुत ही हल्का फाउंडेशन या कम से कम पाउडर लगाना चाहिए क्योंकि कोई भी प्रसाधन गाढ़ा लगाने से उस पर लोगों की नजर पड़ती है और कमियाँ साफ नजर आती है. **फूली हुई आँखें:-** यदि आपकी आँखें नींद पूरी न होने के कारण फूली हुई हैं या थकावट से सूज गई हैं तो थोड़ी देर लेट जाइए और बादाम के तेल या गुलाब जल में एक रूई का फाहा भिगोकर अपनी आँखों पर 10 मिनट रखिए. इससे आराम मिलेगा. इसके अलावा खीरे के पतले स्लाइमस, आलू के स्लाइस या साधारण टी-बैग आँखों पर रखकर थोड़ी देर लेटी रहें. इससे भी आँखों को आराम मिलेगा. **होठों का फटना:-** सर्दियों के दिनों में अक्सर होंठ फटने लगते है. फटे हुए होठों पर ऑलिव ऑयल या मलाई लगाएँ. ये होठों को पोषण भी दें और उन्हें चिकना भी बनाएँगें. इसके अतिरिक्त विटामिन ई के तत्त्व भी जल्दी उपचार करने में सहायक होते हैं.

गहरी नींद अच्छे स्वास्थ्य का भण्डार

अगर आप काफी रात तक जागते रहते हैं या हल्की नींद आती है बार-बार नींद खुल जाती है और यह कई महीनों से हो रहा है, तो आपको इन्सोम्निया की समस्या हो सकती है. आमतौर किसी व्यक्ति को यदि सोने से परेशानी आती है, तो इसे इन्सेम्निया के तौर पर लिया जाता है. कभी-कभी यह किसी अन्य बीमारी के लक्षण के तौर पर भी प्रकट होता है इस समस्या का सबसे बुरा पहूल यह है कि इन्सोम्निया से ग्रस्त व्यक्ति में कई अन्य समस्यायें भी उत्पन्न होने लगती है. उसका काम करना प्रभावित होता है और व्यवहार भी. **कारण:** अनिद्रा का मुख्य कारण तनाव माना जाता है लेकिन इसके और दूसरे कारणों में आसपास का तापमान, वातावरण, शोरगुल, तेज रोशनी, असुविधाजनक बिस्तर, सोने वाले कमरे की स्थिति और माहौल का भी काफी असर होता है. कैफीन या टैनीन, एल्कोहल जैसे पदार्थ भी यदि अधिक सेवन किये जायें, तो भी नींद प्रभावित होती है. ऐसे शारीरिक रोंग, जिनके कारण शरीर में दर्द होता है, वह भी अनिद्रा के कारण बनते है, कई ऐसी दवाईयाँ होती है, जिनके साइड इफैक्ट के तौर पर गहरी नींद नहीं आती है या नींद आती भी है, तो बार-बार खुलती रहती है, नींद न आने की बड़ी वजह मनोवैज्ञानिक कारण भी होता है. चिन्ता, सीजोफ्रेनिया, भय पैदा करने वाले मनोरोग भी नींद न आने का कारण है. **उपचार और सावधानियाँ:** अनिद्रा के उपचार में सबसे पहले यह देखा जाता है कि आखिर सम्बन्धित व्यक्ति को नींद क्यों नहीं आ रही है. निद्रा को व्यवस्थित करने के लिये रोगी की दिनचर्या का अध्ययन कर उपयोगी सुझावों को उसकी जीवनचर्या में शामिल किया जाता है. इसके इलाज को दो चरणों में पूरा किया जाता है. दवाईयों द्वारा उपचार व मनोवैज्ञानिक उपचार. 1. सोने और जागने का समय निश्चित करना चाहिये. रात में हल्का भोजन करें, लेकिन जहाँ तक सम्भव हो रात नौ बजे के बाद भोजन न लें. 2. नींद के लिये वातावरण में सुधार करें. जैसे कमरे को रोशनी और शोर गुल से मुक्त रखें. मौसम के हिसाब से सोने के कमरे का तापमान नियन्त्रित रखें. अपने बिस्तर को आरामदायक बनायें. 3. पेय पदार्थ जैसे कॉफी चाय कोल्ड ड्रिंक्स आदि का सेवन शाम के बाद न करें. नींद लाने में यह तनाव का कारण बनता है. 4. नियमित रूप से व्यायाम की आदत डालें. जैसे आधे घंटे से एक घंटे तक टहलें. व्यायाम करने से अच्छी नींद आती है.

कान सम्बन्धी रोगों के आयुर्वेदिक उपचार

कान हमारे शरीर के बहुत ही संवेदनशील एवं महत्वपूर्ण अंग हैं. अगर इनका सही ख्याल नहीं रखा गया तो अनेक समस्याएँ खड़ी हो सकती हैं. कई लोग सर्दी की बिमारी की वजह से कान रोग के शिकार होते हैं और अगर सर्दी का इलाज जल्द नहीं किया गया तो सुनने की शक्ति पर असर पड़ सकता हैं. ● **रोगों के लक्षण** - एक घंटे से ज्यादा कान में दर्द होना, कान से तरल पदार्थ का रत्राव होना. कान दर्द के साथ बुखार, सर दर्द आदि कान संबंधी रोगों के लक्षण होते हैं. ● **आयुर्वेदिक उपचार - बेल** - कान के रोग के उपचार के लिए बेल के पेड़ की जड़ को नीम के तेल में डुबोकर उसे जला दें. जलने पर रिसने वाला तेल कान में डालें. इससे कान दर्द और संक्रमण में काफी हद तक राहत मिलती है. **नीम** - नीम में एंटी- सेप्टिक गुण होते हैं, जो कान में विकार पैदा करने वाले तत्वों को खत्म करने के काबिल होते हैं. **तुलसी** - तुलसी का रस गुनगुना करके कान में डालने से भी कान के रोगों में काफी सहायता मिलती है. **नींबू** - अदरक के रस में नींबू का रस मिलाएं और इसकी चार-पांच बूँद कान में डालें. आधें घंटे बाद रूई से कान को साफ कर दें. फिर सरसों का तेल गुनगुना करके कान में डालने से आराम मिलेगा. ● मैथी को गाय के दूध में मिलाकर उसकी कुछ बूँद संक्रमित कान में डालने से भी काफी राहत मिलती है. ● तिल के तेल में तली हुई लौंग की कुछ बूँदे कान दर्द में काफी आराम पहुँचाती हैं. ● **कान के संक्रमण के दौरान खान-पान** - कान के रोगों को ऐसे खान-पान से सेवन से बचाना चाहिए. जो रोगों को जन्म देने वाले कफ के दोष को उग्र रूप दे सकते हैं. जैसे खट्टी दही और खट्टे फलों के सेवन से भी कफ का दोष बढ़ सकता है. ● केले, तरबूज, संतरे और पपीते के सेवन से बचाना चाहिए, क्योंकि इससे सर्दी बढ़ सकती है, जो आगे जाकर कान की समस्याओं को बढ़ावा दे सकती है. ● कान की समस्याओं के दौरान प्याज, अदरक और लहसून का प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है. हल्दी भी अत्यधिक गुणकारी है, अत: इसे खान-पान में मसाले की तरह प्रयोग करना चाहिए. ● कानों में गन्दा पानी न समाने पाए, इस बात का पूरा जाना चाहिए. यदि घरेलू या आयुर्वेदिक उपचार से लाभ नहीं पहुँच रहा हो, तो किसी कान रोग विशेषज्ञ से अवश्य संपर्क करें मो०- 09416054195

माताओं के लिए सलाह

माताओं के लिए महत्वपूर्ण सलाह माँ का दूध आपके शिशु को सर्वोत्तम पोषण व बीमारियों से संरक्षण प्रदान करता है. अधिकतर शिशुओं के लिए पहले 6 महीने तक माँ का दूध ही काफी होता है. बहुत-सी माताएं 6 महीने के बाद भी स्तनपान कराती हैं और अन्य आहार देना भी शुरू कर देती हैं. स्तनपान के बारे में सलाह के लिए अपने डॉक्टर या किसी अन्य स्वास्थ्यकर्मी अथवा सफलतापूर्वक स्तनपान करा रही किसी सहेली या सम्बन्धी से बात करें. शिशु को बार-बार स्तनपान कराने से सही मात्रा में दूध उतरता है. गर्भावस्था के दौरान और प्रसव के बाद संतुलित-पौष्टिक खुराक भी दूध की मात्रा पूरी रखने में मदद करती है. याद रखें : माँ का दूध आपके शिशु के लिए सर्वोत्तम व सर्वाधिक किफायती आहार है. सलाह लें ऐसे आहार का उपयोग खतरनाक हो सकता है जो छोटे बच्चों के लिए नहीं है. शिशु को बेवजह आंशिक रूप से बोतल से दूध पिलाने या अन्य आहार व पेय पदार्थ आहार शुरू करने से पहले हमेशा स्वास्थ्यकर्मी की सलाह लें. माँ के दूध के विकल्प का उपयोग अगर कोई डॉक्टर या अन्य स्वास्थ्यकर्मी शिशु के पहले 6 महीने के दौरान माँ के दूध के साथ-साथ या उसके स्थान पर शिशु दुग्ध विकल्प आहार देने की सिफारिश करता है तो शिशु फॉर्मूला आहार के इस्तेमाल का फैसला करने से पहले उसकी लागत और परिवार की स्थिति पर विचार कर लें. अगर आपके शिशु को सिर्फ बोतल से आहार देना है तो आपको हर सप्ताह एक डिब्बा (475 ग्राम) से अधिक आहार की आवश्यकता होगी बिना उबला पानी, बिना उबाली बोतल या गलत मात्रा में घोल बनाकर इस्तेमाल करने से आपका शिशु बीमार पड़ सकता है. गलत शिशु दुग्ध विकल्प और बोतल का इस्तेमाल बच्चे के स्वास्थ्य पर बुरा असर डाल सकते हैं. हमेशा निर्देशों का सही-सही पालन करें. कुछ समय तक शिशु दुग्ध विकल्प खिलाने के बाद स्तनपान करवाने में आने वाली कठिनाइयों की जानकारी आपको होनी चाहिए. **माँ के दूध की विशेषतायें** - प्रसव के तुरन्त बाद माँ का पहला दूध पीला और गाढ़ा होता है. इस दूध को कोलॉस्ट्रम कहते हैं जो कि प्रसव के बाद पहले हफ्ते में निकलता है. कोलॉस्ट्रम बाद के दूध से अधिक पौष्टिक होता है क्योंकि इसमें प्रोटीन ज्यादा होता है. और संक्रमण से बचाव के गुण भी अधिक होते हैं, जो जन्म के तुरन्त बाद की खतरनाक बीमारियों से शिशु को बचाने के लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं. इसमें विटामिन 'ए' का स्तर भी ऊँचा होता है. ● आप अपने शिशु को यह कोलॉस्ट्रम अवश्य पिलाएं. क्योंकि इसमें बहुत से पोषक तत्व होते हैं. ● इसके बजाय चीनी का पानी, शहद का पानी, मक्खन या कोई और मिश्रण न दें. ● माँ का दूध सम्पूर्ण सन्तुलित आहार है और जन्म के पहले कुछ महीनों में शिशु के लिए आवश्यक सभी पोषक तत्व प्रदान करता है. इसके संक्रमण-रोधक गुण प्रारम्भिक महीनों में शिशु को बीमारियों से बचाते हैं. यह हमेशा उपलब्ध होता है और इसे तैयार करने के लिए न कोई ईधन चाहिए, न बर्तन, न पानी (जिसमें कीटाणु हो सकते हैं) **स्तनपान के फायदे** - शिशु को माँ का दूध पिलाना शिशु दुग्ध विकल्पों से कहीं सस्ता पड़ता है क्योंकि शिशु दुग्ध विकल्पों की लागत की तुलना में माँ को अतिरिक्त आहार देने की लागत न के बराबर होती है. ● वे माताएं जो शिशु जन्म पश्चात् शिशु को सामान्य रूप से स्तनपान कराती रहती हैं, उनमें लम्बे समय तक दोबारा गर्भधारण से बचे रहने की सम्भावना, स्तनपान न कराने वाली माताओं की तुलना में अधिक रहती है. ● प्रसव के तुरन्त बाद स्तनपान कराने से गर्भाशय अपने आप संकुचित होने लगता है और माँ के शरीर का आकार जल्दी सामान्य होने में मदद मिलती है. **स्तनपान की व्यवस्था** - स्तनपान को बढ़ावा और सहारा देने के लिए माँ की स्तनपान कराने की कुदरती इच्छा को जब भी व्यवहारिक सलाह की जरूरत हो, उसे प्रोत्साहित करना चाहिए और निश्चित कर देना चाहिए कि उसके साथ रिश्तेदारों को भी सहमति है. ● स्तनपान जब ज्यादा सफल होता है जब शिशु बार-बार स्तनपान करे और स्तनपान कराने की इच्छा रखने वाली माँ को अपनी योग्यता में पूरा आत्मविश्वास हो. ● प्रसव के पहले ही डॉक्टर को बता दें कि आप अपने शिशु को स्तनपान कराना चाहती हैं. ● प्रसव के तुरन्त बाद अपने शिशु को स्तनपान कराएं. ● डॉक्टर चाहते हैं कि प्रसव के तुरन्त बाद आप और आपका शिशु एक-साथ रहें (इसे "रूमिंग-इन" कहा जाता है) ● बच्चा जब चाहे उसे अपना दूध पीने दें, बच्चा रोए तो उसे स्तनपान कराएं. ● गर्भावस्था के दौरान अपने स्तनों और निप्पल की सही देखभाल के लिए अपने डॉक्टर से सलाह लें. रोजाना नहाते समय स्तनों को साफ पानी से धोएं. स्तनपान कराने के बाद स्तनों को साफ कपड़े से पोंछ लें या ढकने से पहले अपने आप सूखने दें. ● हमेशा अपना शरीर और कपड़े तथा अपने शिशु का शरीर और कपड़े साफ-सुथरे रखें. **चेतावनी** - बिना उबला पानी, बिना उबाली बोतलें या तैयार किया गया गलत आहार आपके बच्चे को बीमार बना सकता है. आहार का गलत तरीके से भंडारण, रखरखाव, तैयार करना और खिलाना आपके बच्चे के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डाल सकता है. एक समय पर एक आहार ही तैयार करें. तुरन्त खिलाएं और निर्देशों का सही से पालन करें. बचे हुए आहार को बोतल में न रखें बल्कि उसे फेंक दें. बच्चे को हमेशा गोद में लेकर आहार पिलाएं. बच्चे को अकेला छोड़ देने या मुँह में बोतल लगी छोड़ देने पर उसको सांस लेने में रूकावट आ सकती है. शिशु दुग्ध विकल्प के उपयोग की आवश्यकता तथा प्रयोग की विधि की जानकारी स्वास्थ्यकर्ता से ही लें. शिशु दुग्ध विकल्प ही शिशु के पोषण का एकमात्र आधार नहीं है. **सावधानी** -शिशु आहार को सावधानी और स्वच्छता से तैयार करना स्वास्थ्य के लिए सबसे ज्यादा जरूरी है. निर्दिष्ट चम्मचों से कम का प्रयोग न करें. क्योंकि हल्के पोषण से आपके शिशु के लिए अपेक्षित पर्याप्त पोषक-तत्व उपलब्ध नहीं होंगे. सलाह दी जाती है कि शिशु को धीरे-धीरे अन्नयुक्त आहार के साथ-साथ सब्जियाँ, फल, दालें आदि खिलाना शुरू करें. जैसे कि प्रत्येक शिशु की आवश्यकताएं अलग-अलग होती हैं, इसलिए अपने डॉक्टर की सलाह लें. सुनिश्चित कर लें कि कार्टन पैक के साथ दिया गया चम्मच इस्तेमाल से पहले अच्छी तरह धोया और सुखाया गया हो. आहार पाउडर का इस्तेमाल खोलने के तीन सप्ताह के भीतर या समय समाप्ति की तिथि से पहले हो कर लें. यदि माँ के दूध के अतिरिक्त फॉर्मूला आहार दिया जा रहा है तो प्रतिदिन फर्मूला आहार की कुल संख्या आहार तालिका में दी गई संख्या से कम होगी. डॉक्टर की सलाह का पालन करें. - Nestle Nutrition.

बरसाती रोगों में कारगर हैं होम्योपैथिक दवाएं

यह लोगों का भ्रम है कि होम्योपैथिक दवाएं देर से फायदा पहुंचाती हैं. इसके विपरीत सत्यता यह है कि अनुभवी एवं योग्य चिकित्सक द्वारा लक्ष्य समूहा. पर दी गई दवा, रोगों में अन्य प्रचलित पद्धतियों की दवाओं की अपेक्षा शीघ्र लाभ पहुंचाती है. साथ ही इनका दुष्प्रभाव न होने की वजह से मरीज शीघ्र आरोग्य को प्राप्त होता है. बरसाती रोगों में तो होम्योपैथिक दवाएं अत्यंत कारगर साबित होती है. यह कहना है वरिष्ठ होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. आर एस सिंह का. उन्होंने बताया कि वर्षा ऋतु में गंदे पानी के फैलाव की वजह से वातावरण एवं जल प्रदूषित हो जाता है. इससे रोगों का संक्रमण तेज हो जाता है. इनसे बचने के लिए पीने के पानी एवं व्यक्तिगत साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है. इस ऋतु में प्रदूषण एवं नमी के साथ तेज धूप के कारण डायरिया, पेचिस, टायफाइड, मलेरिया, चर्म रोग तथा श्वांस रोगों के साथ अनेक प्रकार की जल जनित बीमारियां होती हैं. इन रोगों में होम्योपैथिक दवाएं अत्यंत कारगर सिद्ध होती हैं.

www.medicaldarpan.com

नीरू गर्ग स्वामी की ओर से ब्रजेश कुमार गर्ग द्वारा प्रकाशित, ब्रजेश कुमार गर्ग द्वारा मुद्रित तथा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एण्ड पैकिंग लिमिटिड नोएडा, गौतम बुद्ध नगर में मुद्रित एवं के० पी० रोड, बुलन्दशहर से प्रकाशित, सम्पादक - ब्रजेश कुमार गर्ग

ई-फार्मेसी को प्रतिबंधित किया जाये अन्यथा थोक एंव रिटेल दवा विक्रेता आन्दोलन पर जायेगें

• सम्पूर्ण भारत के कैमिस्टो का जनहित में मोदी सरकार से आग्रह है कि ई-फ्रार्मेसी को प्रतिबंधित किया जाये. भारत से छोटे-छोटे कैमिस्टो की दुकानों द्बारा बेरोजगारी कम हो रहीं हैं और करोना काल में लोक डाउन में भी गरीब बीमार मरीजो को भी 7 दिन 24 घंटे की सेवा दे रहे है. FDA ने भारत में पढ़ें लिखो की बेरोजगारी खत्म करने के लिए रिटेल दवा के लाइसेंस द्बारा पढ़े-लिखे बेरोजगारों को शहर के गली, मोहल्लों, अस्पतालों, तहसीलों, टाउन एरिया कस्बो में जगह-जगह 8.5 लाख के करीब लाइसेंस की दवा दुकान खुलवाकर बहुत बड़ा सहयोग दिया है, इन दवाओं की दुकानों से 2.5 करोड भारतीय लोगों का पालन पोषण हो रहा है, लाखों पढ़ें लिखे बेरोजगारो के पास लम्बे समय तक का रोजगार है, मोदी सरकार से अनुरोध है कैमिस्ट परिवारो के हित मे अति शीघ्र ई-फार्मेसी को प्रतिबंधित कर इसको आगे बढ़ने से रोका जाये. **Satish Sethi, Mob.: 6396782575.**

• उत्तर प्रदेश कैमिस्ट एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स एसोसिएशन (रजि.) के अहवाहन पर आगरा महानगर कैमिस्ट एसोसिएशन (रजि.) आगरा के समस्त दवा व्यापारियों से आग्रह है कि अपने मोबाइल फोन से 1800 11 7800 पर आज ही फोन करके माननीय प्रधानमंत्री जी से ई-फार्मेसी पर रोक लगाने का आग्रह करें. जितने अधिक फोन किये जायेंगे उतनी जल्द उनके पास देश भर के दवा व्यापारियों की बात पहुंचेगी. 'आज चूके तो यह दिन फिर कभी नहीं आएगा' अध्यक्ष महामंत्री आशीष शर्मा, अश्वनी श्रीवास्तव, आगरा महानगर कैमिस्ट एसोसिएशन (रजि.), आगरा महानगर कैमिस्ट एसोसिएशन (पंजी) के कोरोना काल में आपने दवा व्यापारियों के लिए गये कार्यो की सराहना करते मैडीकल दर्पण के सम्पादक ब्रजेश गर्ग जी ने संस्था के नाम प्रशस्ति पत्र दे 'कोरोना योद्धा' के रूप में सम्मानित किया. संस्था की ओर से 'मैडीकल दर्पण' के ब्रजेश गर्ग जी व उनकी टीम को आभार. **- ललित शर्मा, मो. 8218202588.**

सत्य है...... जो लोग डाउन के दौरान सभी के सामने आए

1. अमेरिका अब दुनिया का सबसे बेहतर देश नहीं रहा. 2. चीन कभी विश्वकल्याण की नहीं सोच सकता. 3. यूरोपीय देश उतने शिक्षित और सुधरे हुए नहीं जितना हम सोचते हैं. 4. भारतीय उपमहाद्वीप के लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता विश्व में सबसे ज्यादा है. 5. कोई पादरी, पुजारी या मौलवी एक भी रोगी को ठीक नहीं कर सकता, मानना और बचाना सब ऊपर वाले के हाथ में है. 6. स्वास्थ्यकर्मी, पुलिस और प्रशासन कर्मी ही असली हीरो हैं ना क्रिकेटर और ना फिल्मी सितारे. 7. बिना उपयोग के विश्व में सोना चांदी और तेल का कोई महत्व नहीं है. 8. पहली बार पशु और पक्षियों को लगा कि यह संसार उनका भी है. 9. तारे वास्तव में टिमटिमाते हैं. यह विश्वास महानगरों के बच्चों को पहली बार हुआ. 10. हम और हमारे बच्चे बिना जंकफूड के भी जिंदा रह सकते हैं. 11. साफ सुथरा और सादा जीवन जीना कोई कठिन कार्य नहीं है. **अशोक कुमार, मो. 9411010590.**

दवा व्यापारियों ने जतायी हमदर्दी

गोरखपुर:- एक परिवार आर्थिक तंगी से जूझ रहा हैं. बबीता अपने पति संतोष श्रीवास्तव का इलाज कराने में आर्थिक रूप से पूरी तरह टूट चुकीं हैं. बबीता ने इलाज के लिए अपनी पूरी संपत्ति व जेवर आदि बेचकर लगभग 72 लाख रूपये खर्च कर दिये. अब आगे उनके पास इलाज के लिए रुपये नहीं हैं. इस समय वो आर्थिक तंगी से जूझ रही हैं. जैसे ही दवा व्यापारियों को इसकी जानकारी मिली उन्होने मदद करने के लिए हाथ बढ़ाया 40 हजार रुपये की दवाएं, सर्जिकल व अन्य जरूरी सामान प्रदान किया और आगे भी करने का आश्वासन दिया. दवा विक्रेता के अध्यक्ष व महामंत्री आलोक चौरसिया के नेतृत्व में दवा व्यापारियों का एक प्रतिनिधि मंडल बबीता श्रीवास्तव के घर पहुंचा. उन्होने आम लोगो से भी अपील की इस तरह के परिवार की मदद करना एक इंसानियत हैं. इस अवसर पर संयोजक संतोष श्रीवास्तव, संयुक्त मंत्री दिलीप कुमार गुप्ता, पीआरओ अशोक गुप्ता आदि उपस्थित थे. दवा व्यापारियों ने इसकी मदद करते हुए कहा है कि हम आगे भी मदद करते रहेंगे.

पंजाब में नष्ट की जा रही हैं, पकड़ी गयी नशीली दवायें

चंडीगढ़:- हंसराज मेहता, मो॰ 09814132529 से मिली जानकारी के अनुसार पंजाब में ड्रग और कॉस्मेटिक एक्ट के अंतर्गत 938 फर्मों से पकड़ी गई करोड़ों रुपये की नशीली दवाओं को नष्ट करने की प्रक्रिया शुरू हो गयी है. यह जानकारी स्वास्थ्य मंत्री बलबीर सिद्धू ने दी. स्वास्थ्य मंत्री जी ने यह कहा कि पकड़ी गई सभी नशीली दवाओं को नष्ट किया जा रहा है. स्वास्थ्य मंत्री जी ने कहा कि सरकारी फूड एंड ड्रग लैबोरेटरियों में नौ विश्लेषकों की फूड लैब और चार विश्लेषकों की ड्रग लैब में नियुक्ति की गई है. सिद्धू जी ने 13 नए भर्ती हुए विश्लेषकों को सोमवार को नियुक्ति पत्र सौंपा.

सरवाइकल स्पोंडोलाइटिस

डॉ॰ वीरेन्द्र अग्रवाल प्राकृतिक चिकित्सक सरवाइकल स्पोंडोलाइटिस गर्दन व रीढ़ की बीमारी है. इस रोग में गर्दन को पीछे की तरफ ले जाने, घुमाने, आगे की तरफ आने आदि में तेजी के साथ हमेशा दर्द बना रहता है. दर्द में कभी अचानक तीव्रता व अचानक मन्दता आ जाती है. इस रोग में रीढ़ की कशेरूकायें सख्त हो जाती हैं, फलस्वरूप गर्दन को पीछे या आगे की तरफ ले जाने पर उनमें खिंचाव पैदा होता है और वे दर्द करने लगती हैं. दर्द बढ़ते-बढ़ते कंधों तक तथा रीढ़ के निचले हिस्से तक भी पहुंच जाता है. सरवाइकल स्पोंडोलाइटिस का दर्द तन्त्रिका तन्तुओं को प्रभावित करके सिर दर्द, तनाव, डिप्रेशन व कभी-कभी चिड़चिड़ाहट जैसी स्थिति भी पैदा कर देता है. गर्दन के पीछे वाले हिस्से में रीढ़ की जहां से शुरूआत होती है, वहां से सरवाइकल नर्व शुरू होती है, जब इस नर्व व कशेरूका को लम्बे समय तक एक ही स्थिति में रखा जाता है तो सरवाइकल स्पोंडोलाइटिस होने का भय रहता है. कारण :- **गलत अंग स्थिति** : लम्बे समय तक गर्दन व रीढ़ को आगे की तरफ झुकाकर बैठना, खासकर कम्प्यूटर पर काम करते या पढ़ते समय. **तकिया का प्रयोग:** सोते समय मोटे तकिया व अधिाक मोटे गद्दे का प्रयोग. **मोटापा** : अधिाक वजन के कारण चलने में गर्दन व रीढ़ को आगे की तरफ झुकाकर चलना. **व्यायाम की कमी** : जब रीढ़ व गर्दन को पूरी तरह व्यायाम नहीं मिल पाता है तो यह रोग हो सकता है. अधिाक खिचांव व झटका: किसी कारणवश गर्दन पर अधिाक दबाव या खिंचाव की वजह से हो सकता है. **कब्ज :** मल का दबाव गर्दन व रीढ़ की कशेरूकाओं को क्षतिग्रस्त करता है तथा उसका ऊपरी उफान, उपरी ग्रीवा को प्रभावित कर दर्द पैदा करता है। सरवाइकल स्पोंडोलाइटिस पूर्णत: ठीक होने वाला रोग है, चूंकि यह रोग गलत अंग स्थिति व गलत जीवनशैली का परिणाम है, अत: कुछ उपचारों के बाद सरवाइकल स्पोंडोलाइटिस को पूरी तरह ठीक किया जा सकता है. स्पोंडोलाइटिस ठीक करने के लिए योग व प्राकृतिक चिकित्सा को व्यवहार में पूरी तरह अपनाना होगा. **व्यायाम :-** सरवाइकल स्पोंडोलाइटिस रोग में ऐसे व्यायाम व आसनों का चयन करें जिनमें गर्दन का खिंचाव उपर की तरफ आता हो व रीढ़ का दबाव बाहर की ओर जाता हो. **भुजंगासन :** भुजंगासन का नियमित अभ्यास रीढ़ व गर्दन के दर्द से मुक्ति दिलाकर सरवाइकल नर्व को लचीला बनाता है. **चक्रासन :** सीधो लेट जायें, पैरों को मोड़कर नितम्ब के पास लायें व सांस भरते हुए कमर से कंधो तक का हिस्सा उपर उठायें फिर सांस छोड़ते हुए नीचे आयें. **पवन मुक्त आसन :** सीधे लेटें, सांस निकालते हुए घुटने को मोड़कर सिर से लगायें दूसरा पैर सीधा करें, फिर पैर बदलकर वैसे ही करें. **हंसासन :** दोनों हाथों को कमर पर रखकर नाभि के आगे का हिस्सा श्वांस भरते हुए यथा संभव उपर उठायें. – स्वास्थ्य मंदिर, प्राकृतिक चिकित्सालय, ई-164 रणजीत नगर, भरतपुर, 05644-236653, 9413917821, Email:- swasthyama ndirbtp@rediffmail.com, swasthyamandir@gmail.com.

"अगर आप सोचते हैं कि ज्ञान पाना महंगा है, तो अज्ञानी बनकर देखो"

"क्या आपको ज्ञान है कि प्रेम का देह से कोई सम्बन्ध नहीं?"

नीरू गर्ग स्वामी की ओर से ब्रजेश कुमार गर्ग द्वारा प्रकाशित, ब्रजेश कुमार गर्ग द्वारा मुद्रित तथा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एण्ड पैकिंग लिमिटिड नोएडा, गौतम बुद्ध नगर में मुद्रित एवं के॰ पी॰ रोड, बुलन्दशहर से प्रकाशित, सम्पादक – ब्रजेश कुमार गर्ग